पृष्ठ : 44 RNI No. RAJHIN/2020/11458

होली विशेष

वर्ष: 5 अंक:3 मार्च, 2025 मूल्य: 60 रु.

राजस्थान टूडे

दिल्ली का चुनावी हलवा 'जय-वीरू' का जलवा

होली की बेला 'आपा' का खेला

13

'बाबा' ने कर दी 'इंडी' की चिंदी

11

हम सबके प्रिय लाडले राजनेता,

समाजसेवी, हरदिल अजीज, गरीबों के दिल में वास करने वाले, हंसमुख स्वभाव के धनी हमारे मार्गदर्शक

ठाकुर साहब

अभिमन्यु सिंह जी

को जन्मदिन की

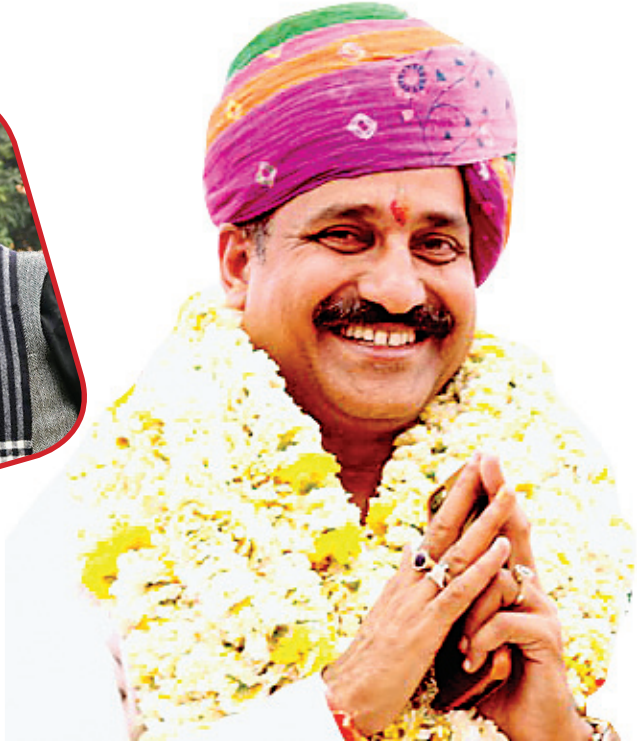

बहुत-बहुत बधाई व

हार्दिक शुभकामनाएं

माता रानी से प्रार्थना है आप हमेशा स्वस्थ दीर्घायु प्रसन्नचित रहे

शुभेच्छु: समस्त क्षेत्रवासीगण, विधानसभा-बाली

राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात
www.rajasthantoday.online

RNI No. RAJHIN/2020/11458
वर्ष 5, अंक 3, मार्च, 2025
(प्रत्येक माह 15 तारीख को प्रकाशित)

प्रधान सम्पादक
दिनेश रामावत

राजनीतिक सम्पादक
सुरेश व्यास

सम्पादक
अजय अस्थाना

प्रबंध सम्पादक
राकेश गांधी

ब्यूरो प्रभारी
जयपुर- बलवंत मेहता
कोटा- प्रमोद मेवाड़ा
भरतपुर-राजेश खण्डेलवाल

आवरण सज्जा- आशुतोष रॉय
सभी रेखाचित्र- राजेंद्र यादव

संपादकीय कार्यालय
बी-4, फोर्थ फ्लोर, एम.आर. हाईट्स
महावीर कॉलोनी, भास्कर सर्किल,
रातानाड़ा, जोधपुर - 342011
व्हाट्सएप नंबर - 9828032424
ई-मेल - rajasthantoday@gmail.com

सभी विवादों का निपटारा जोधपुर की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

• मारवाड़ मीडिया प्लस के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक पूनम अस्थाना द्वारा बी-4, फोर्थ फ्लोर, महावीर कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर-342011 से प्रकाशित और डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, 01 पार्श्वनाथ इंडस्ट्रीयल एरिया, रिलायंस वेयर हाउस के पास, मोगरा कलां, जोधपुर-342802 में मुद्रित, संपादक : अजय अस्थाना।

अंदर के पेजों पर

पर्ची के रंग, कागज-कलम दंग

6

होली से पहले ही 'इंडिया' तो हो ली

8

मोदी-शाह के लिए यह होली होगी सबसे खास

14

10. मुफ्त का रंग, बाद में पड़े तंग!

17. रंग, रस और राजस्थान

18. रंगों से सराबोर... नन्दालय

20. हंसाते-गुदगुदाते 'स्वांग'

22. सब जग होरी या ब्रज होरा

25. छेड़छाड़ के देवता इलोजी

27. होली हो तो राज साहब जैसी

29. कवि से छेड़-छाड़

31. मुझ पर तेरा गुलाल

33. फाग राग पर होली का मस्ती भरा गीत

36. भूल फागुन में

37. होली में भंग की तरंग में बंट गए बापू !!

39. सेल्फी बिना होली

40. होली के रंग कवयित्रियों के संग

राजस्थान टुडे में प्रकाशित आलेख लेखकों की राय है। इसे राजस्थान टुडे की राय नहीं समझा जाए। राजस्थान टुडे के मुद्रक, प्रकाशक और सम्पादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी भावना किसी वर्ग या व्यक्ति को आहत करना नहीं है। विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व राजस्थान टुडे का नहीं होगा।

सम्पादकीय

अबीर-गुलाल का टीका

दिनेश रामावत ✍ वरिष्ठ पत्रकार

दरअसल, खुमार महाकुम्भ का उतरा है और हमारे पर बुखार होली का चढ़ गया है। किसी को मलेरिया होता है, हमें 'होलेरिया' हो गया है। आम भाषा में कहें तो हम अभी से हुरिया गए हैं। भई, होली तो है ही मस्ती का त्योहार। तभी तो इसे मदनोत्सव भी कहा गया है। हमारी संस्कृति भी है-वसुधैव कुटुम्बकम यानी हिल-मिल कर सभी को साथ लेकर रहना और त्योहार इस संस्कृति को और ज्यादा समृद्ध बना देते हैं। इस बार तो होली की मस्ती में डूबने के कई कारण बनते हैं।

प्रयागराज में 144 साल बाद हुए महाकुम्भ की खुमारी उतरी। फाल्गुनी बयार भी बह निकली। फिर भी सियासय का बुखार नहीं उतरा। सियासत महाकुम्भ में भीड़ नियंत्रण पर हुई। बीच वालों के हितैषी बजट पर बिहार की छाया भी सियासत से नहीं बच सकी। इधर दिल्ली में 'आपदा' मिट गई। कांग्रेस शून्य पर सिमट गई। ट्रम्प के टैरिफ तूफान में सैंसेक्स ने गोते लगा लिए। सोने चांदी की चमक ने चुंधिया दिया। वजीर-ए-अजाम सात समंदर पार जा आए। इधर, हमारी कलम और स्याही कागज की प्यास तक नहीं बुझा सकी। नदिया के किनारे बैठकर भी प्यासे के प्यासे रहे।

अब आप सोच रहे होंगे कि ये बेतुकी बातें क्यों? जो बातें की जा रही है, उनका न कोई तुक है न कोई तीर। कहां प्रयागराज और कहां दिल्ली....कौनसी आपदा, कौनसी आफत...और फिर ये कागज, कलम और स्याही के साथ नदिया का किनारा....? क्या किसी ने भांग पिला दी है। बहकी-बहकी बातें हो रही है। आप भी सही हैं और हम भी। दरअसल, खुमार महाकुम्भ का उतरा है और हमारे पर बुखार होली का चढ़ गया है। किसी को मलेरिया होता है, हमें 'होलेरिया' हो गया है। आम भाषा में कहें तो हम अभी से हुरिया गए हैं। भई, होली तो है ही मस्ती का त्योहार। तभी तो इसे मदनोत्सव भी कहा गया है। हमारी संस्कृति भी है-वसुधैव कुटुम्बकम यानी हिल-मिल कर सभी को साथ लेकर रहना और त्योहार इस संस्कृति को और ज्यादा समृद्ध बना देते हैं। इस बार तो होली की मस्ती में डूबने के कई कारण बनते हैं। हम राजस्थान के लोग हैं। जहां के कई इलाकों में पानी आज भी मृग मरिचिका ही है। बाड़मेर-जैसलमेर जैसे इलाके तो बिना पानी के भी 'काले पानी की सजा' की संज्ञा तक झेलते रहे हैं। ऐसे में यदि हमारी सरकार भजन करते करते मोहन को रिझा दे और पड़ोसी राज्य से ईआरसीपी के जरिए हमारे पूर्वी जिलों तक पानी आ जाए तो क्या होली की मस्ती में भीगने का मन नहीं करेगा। करेगा ही निश्चित तौर पर। फिर निर्मला अम्मा ने हम मध्यम वर्ग को लोगों पर भरी सर्दी में राहतों की बौछार जो कर दी है तो क्यों ने झूमें होली की मस्ती में।

लिहाजा राजस्थान टुडे की पूरी टीम ऐसी हुरियाई है कि उसे भांग के नशे की मस्ती में दिल्ली में आम आदमी पार्टी की हार भी आपदा के साथ पापदा की विदाई दिख रही है। कोई कहे कि कांग्रेस ले डूबी तो कोई कहे कि शराब ही आप के लिए आपदा ले आई। कारण कोई भी हो, लेकिन कांग्रेस अपनी जगह कायम रही। भाजपा को तो 27 साल का वनवास पूरा हो गया, लेकिन कांग्रेस ने न कुछ खोया और न ही कुछ पाया। शून्य थे, शून्य पर रहे और रेकार्ड चार बार शून्य हासिल कर कांग्रेस शून्य की सरताज हो गई। इस बार के अंक में ऐसी ही बातों के साथ

हैं मौज-मस्ती की बातें, छींटाकशी के कौड़े और मस्ती में डूबा हास्य कवि सम्मेलन भी। साथ ही हम कोशिश कर रहे हैं आपको होली तेरे रंग अनेक की तर्ज पर मारवाड़ से मेवाड़, हाड़ौती से बीकाणा और गोड़वाड़ से शेखावाटी की होली से। कई बातें आपको गुदगुदाएगी। आढ़ी-तिरछी रेखाओं से निखर रहे रंग-बदरंग चेहरे हंसाएंगे। कई नामी व्यंग्यकारों की रचनाएं चुभन पैदा करेंगी।

कुल मिलाकर, यह अंक होली की मस्ती में तैयार किया गया है। एआई के दौर में आधुनिकता की दौड़ से प्रतिस्पर्धा कर रही पत्रकारिता का यह अलग स्वरूप आपको लग रहा है। आज की पीढ़ी के लिए ये अजूबा हो सकता है, लेकिन हमने इस मौज-मस्ती का अहसास करवाने वाले इस अंक के साथ उस परम्परा को भी जिंदा करने की कोशिश की है, जिसमें कभी साइक्लोस्टाइल से तैयार की गई बुकलैट या एक दो पन्नो पर हंसी मजाक झलकती थी। होली के विशेषांक ऐसी ही सामग्री से भरे होते थे। इन अंकों में बंटी उपाधियां हंसी-मजाक के रूप में किसी का भी व्यक्तित्व-कृतित्व सामने ला देती थी। हमने भी कोशिश की है, लेकिन यकीन मानिए, इसके पीछे किसी की भावना को ठेस पहुंचाने का मकसद नहीं है। यदि कोई बात आपको बुरी भी लगी हो तो अग्रिम क्षमा प्रार्थना के साथ इसे अबीर-गुलाल का टीका ही समझिएगा।

-आप सभी को होली की अग्रिम शुभकामनाएं।

हे! होली के रसिया

हे ! पर्ची से मिली कुर्सी के महानायक ....

आप तो ब्रज के रसिया हैं, ऐसी में होली की पहली रंगीन बधाई आपको। आपने तो बरसाने से लेकर कुंजगलीन तक की होरी देखी है, लेकिन अब आप भरतपुर ही नहीं, पूरे सूबे के मुखियां हैं। आपके नाम की पर्ची खुलने से पहले हालांकि आप भले ही प्रदेश महामंत्री थे और पर्ची वाली बैठक आपने ही बुलाई थी, लेकिन बहुत कम लोग आपको जानते थे और जो जानते थे, उन्हें भी यह गुमान नहीं था कि आप ''ट्रम्प कार्ड' बनकर किसी दिवास्वप्न की भांति सत्ता रानी की बांहों में जा समाओगे।

खैर, हम भी कहां भंग की पिनक में इतनी गम्भीर बातों में आपको उलझाए रहे हैं। बात तो होली-ठिठोळी की होनी है। आप से हम पहले ही वादा ले लिए हैं कि हम शब्दों की गुलाल का गोटा जो दे मारेंगे तो आप कुछ न कहेंगे, न बुरा मानकर उठ चलेंगे। हम तो दादी के मुंह से बचपन से ही सुनते रहे हैं कि वृन्दावन में रहना है तो राधे-राधे कहना है। अब आप भी जैपर में हैं तो आपको यहां के प्रसिद्ध गुलाल गोटे तो झेलने ही पड़ेंगे। कभी आपका अपना गोटा मारेगा तो कभी विरोधी गुलाल गोटा चलाएंगे।

ये गुलाल गोटे चलें भी क्यों नहीं....सत्ता में आते ही आपने एक साल में इतने चमत्कारी काम कर दिए कि जनता अब तक समझ नहीं पाई कि यह सरकार चल रही है या किसी कुशल जादूगर का शो हो रहा है।

हे, पर्ची से महानायक बनकर सत्ता की नैया खे रहे महामूर्ति....आपकी क्या किस्मत है....जिन्होंने सीएम की कुर्सी को पांच-पांच साल बाद हथियाने को अपनी नियती समझ लिया था, उन्हें आपने ऐसी धूल चटाई कि कोई आस-पास ही नहीं दिखता। न सदन में, न सड़क पर।

वसुंधरा राजे आपकी मुख्यमंत्री पद की नामांकितकर्ता बनीं, और नामांकन के बाद वह खुद ही राजनीतिक गुफा में ध्यानमग्न हो गईं। आपने किरोड़ीलाल मीणा को चुनावी दंगल में उतारा, मंत्री बनाया और फिर बिना कुछ कहे चुपचाप उन्हें घर बिठा दिया। जनता यह समझ ही नहीं पाई कि यह "मंत्रीत्व" था या कोई ट्रायल वर्जन जो 30 दिन में एक्सपायर हो गया? लगता है, आपका पूरा प्लान "यूज एंड थ्रो" की नीति पर आधारित था।

दूसरी ओर, जादूगर के नाम से मशहूर अशोक गहलोत का जादू भी आप पर काम नहीं कर पाया! लगता है, आपने राजनीति की कोई ऐसी मंत्र-विद्या सीख ली है कि गहलोत का जादू और वसुंधरा की सक्रियता, दोनों हवा में घुल गए! राजस्थान की जनता भी चकित है कि यह राजनीति का खेल चल रहा है या कोई तांत्रिक अनुष्ठान, जिसमें विरोधी स्वतः निष्क्रिय हो जाते हैं।

अरे...अरे, भृकुटियां मत तानिए....राजनीति की बात लगता है आपको ज्यादा चुभ रही है। छोड़िए, नहीं करेंगे आपकी दुखती रग पर कोई चोट। मौका मिला है तो कुछ बात अब आपकी सरकार के कामकाज पर की जा सकती कि नहीं। हां, आपकी यही मुस्कराहट ही तो दुश्मनों के दिल भी पिघला देती है। राजस्थानी भाषा की मान्यता की बात यहां करके हम आपको किसी दुविधा में नहीं डालेंगे, लेकिन ये तो मान ही लीजिए कि जब भी मुखिया जी के रूप में कोई भी आपसे इस मुद्दे पर बात करता है तो आप आप ऐसे चुप्पी धार लेते हैं, जैसे रंग खेलने के दौरान कोई बचने के लिए दौड़ लगाता है।

खैर, सरकार है तो काम तो करती ही है...साल में पूरे 365 दिन। काम भी ऐसे ही कि लोग अचम्भे में डूब जाते हैं। आपने तो कमाल ही कर दिया। पूरी सरकार को गंगा में नहलवा दिया। प्रयागराज कुम्भ के बहाने। मंत्रियों-विधायकों के साथ उनकी 'धर्मपत्नियों' को भी आपने संगम में डुबकी लगवा दी। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बाद ऐसा अद्भुत कारनामा करने वाले आप शायद पहले सीएम हैं। योगी ने तो अपनी कैबिनेट को ही डुबकी लगवाई, लेकिन आपने तो बहती गंगा में.....। आपके अकेले इस काम ने आप पर लगने वाला ब्यूरोक्रेसी के भरोसे सरकार चलाने का 'पाप' भी धो डाला। संगम की भूमि पर आपने देवी-देवताओं को राजी कर दिया तो दिल्ली दरबार भी आपकी इस काबिलियत से फूले नहीं समा रहा। यानी कुछ दिन के लिए तो आपको दिल्ली दिशा की ओर से भी टेंशन फ्री हो जाना चाहिए।

वैसे कहते भी हैं कि राजनीति में कोई किसी का सगा नहीं....सरकार बदली है तो पिछली सरकार को दोष देना भी अब राजधर्म ही तो है। आपने तो वाकई कमाल कर दिया। भले ही साल भर लगा, लेकिन आपने राजस्थान का नक्शा ही बदल दिया। पिछले गहलोत सरकार में बने कई नए जिलों और संभागों का आपकी कलम ने नामोनिशां ही नहीं छोड़ा और देखते ही देखते नए प्रशासनिक व भौगोलिक नक्शे सामने आ गए। हम अभी तक नहीं समझ पाए हैं कि नया राजस्थान बनेगा या सब कुछ पुराने सिस्टम में ही उलझा रहेगा।

इसमें कोई दो राय नहीं कि आप भी अटल जी के 'शाइनिंग इंडिया' की तरह राजस्थान को 'राइजिंग' देखना चाहते हैं। वाकई राइजिंग राजस्थान आपका ऐसा मास्टर स्ट्रोक रहा कि आप खुद और आपके मंत्री देशाटन कर आए। कोई लंदन-दुबई, कोई सिंगापुर-जापान। इसमें गलत भी क्या है। घर में कोई आयोजन हो तो प्रमुख लोगों को फिर-फिर कर न्यौतना तो पड़ता ही। आपने भी यही तो किया है। फिर राइजिंग राजस्थान समिट के दौरान आपकी, आपके मंत्रियों और अफसरों की मेहनत वाकई देखने लायक थी। देशी-विदेशी निवेशकों को जो सपने दिखाए गए, वे किसी परिकथा से कम थोड़े ही थे। जिस प्रदेश के युवा नौकरी और व्यापार के लिए दर-दर भटक रहे हैं, वहां विदेश से पूंजी लाने की बड़ी-बड़ी बातें करना एक नया जादू ही है। आंकड़ों की बात तो अब करें भी क्या, इतने हजार करोड़ के एमओयू हो गए कि जलने वाले कहते हैं कि ये देश की जीडीपी से भी कई गुना ज्यादा हैं।

जलने वाले तो जलेंगे ही। उन्हें कौन रोक सकता है। आप तो किए जाओ, किए जाओ, पर्ची के गुण गाये जाओ। किसी की परवाह करने की जरूरत नहीं है। न आपको पेपर लीक की परवाह करनी है और न ही पुरानी परीक्षाओं को रद्द करने पर मगज खपाना है। न डॉक्टर-इंजीनियर बनाने के लिए कोटा भेजे जा रहे बच्चों की आत्महत्याओं पर ध्यान देना है। अच्छा किया आपकी वित्त मंत्री ने जो बजट में युवाओं के लिए परामर्श केंद्र का झुनझुना जो पकड़ा दिया।

'जो होगा, देखा जाएगा' की तर्ज पर चलने में क्या हर्ज है। हमारी जैसी जनता का क्या है, वह तो 'नई बात नौ दिन, खींची-तानी तेरह दिन' से कभी ऊपर उठी ही नहीं। कोई ज्यादा ही शोरशराबा हो जाए तो अपनी आईटी सेल है ही, संगम की किसी मोनालिशा के बहाने कभी भी जनता का ध्यान डाइवर्ट करने में गोल्ड मेडलिस्ट है। आपने तो वैसे भी इन्फ्लेंसुअर्स के लिए स्कीम का चुग्गा पहले ही डाल दिया है।

राजस्थान वालों के लिए आपकी 'डबल इंजन' की सरकार शर्माइए नहीं, हकीकत में एक अजूबा है। इस डबल इंजन सरकार में दो उप-मुख्यमंत्रियों समेत तीन पहिए हैं। अब हर कोई कन्फ्यूज है कि कौन-सा पहिया गाड़ी को आगे बढ़ा रहा है और कौन ब्रेक लगा रहा है। राजस्थान की राजनीति में पहली बार आपने डबल इंजन में एक अतिरिक्त पहिया जोड़ने का श्रेय हासिल किया है और इसे बेहतर ढंग से मैनेज भी किया है—"भजन के संग प्रेम दीया जलता रहे, सरकार चलती रहे!"

मजे से सरकार चलाइए. कौन रोकने वाला है। खैर अभी तो साल-सवा साल ही हुआ है। आगे जहां बाकी है। आपको हमारी अशेष शुभकामनाएं। चिंता मत कीजिए, अगले चुनाव तक जमकर जनता के साथ घोषणाओं की होली खेलिए। मगर, उसे कभी असली चेहरा भी दिखाइएगा। होली का मौका है, शब्दों के इस अबीर-गुलाल टीके अन्यथा मत लीजिएगा। किसी को ठेस पहुंचाना हमारा मंतव्य नहीं है, फिर भी कुछ बुरा लगे तो अग्रिम क्षमा-याचना। आपको व आपकी सरकार को हो-ली मुबारक।

शुभकामनाओं सहित-
भंग की तरंग में एक व्यथित, मगर हंसता हुआ नागरिक

नेताओं की होली

होली पर कुछ लिखने की बात आती है तो नज़ीर अकबराबादी की 'बहारें' ढप से ज्यादा कानों में बजने लगती हैं। जो न समझे उनके लिए दो पंक्तियां।

"जब फागुन रंग झमकते हों तब देख बहारें होली की
और दफ़ के शोर खड़कते हों तब देख बहारें होली की"

अमित शर्मा
पत्रकार, कवि

नजीर की होली और पढ़नी हो तो गूगल कर लेना, हम तो यहां बहुत जरूरी मसला आपके सामने रखने आए हैं। हमारे पास देश की एक बड़ी पीआर ऐजेंसी की डील आई है। कह रहे हैं, हमारे नेताजी के लिए ऐसा कुछ लिख दो, कि बस उन्हीं की होली के रंग नजर आएं, बाकि सब फीके। हमने समझाया भाई यह स्वयंभू तुर्रमखां क्यों बनाना नेता को, इसमें घमंड दिखेगा। पीआर वाला मौढ़ा बोला- वही तो दिखाना है। बिना घमंड और फॉरच्यूनर के कैसा नेता। हमें मामला कुछ जमा नहीं, पर पीआर वाले ने हमारे हाथ में एक हरी गड्डी रख दी। हमने की-बोर्ड पर उंगलियां तोड़नी शुरू की। भांग मिला एक गिलास ठंडाई का खुद गटकाया.. और एक पीआर एजेंसी के परम नालायक को थमाया। लिख लिख के देते गए.. वो नेताओं के सोशल मीडिया पर हाथों हाथ चेपते गए।

लो, बामुलायजा होशियार.. नेताओं के होली पोस्ट पढ़िए.. जो लिखें हैं उन्होंने- बाकलम खुद वाया पीआर बाय पास हम।

पर्ची के रंग, कागज-कलम दंग

मैं पर्ची का लाल
देखो मेरे रंग
मेरे नाम के ऐलान पर
हो गए सारे तुर्रम दंग
भाषण दूं ऐसा
फिसल जाए जुबान
राजस्थान की राइजिंग से
कस लिए तरकष, तीर, कमान
सूची आए दिल्ली से
सचिवाल मे देखें सीधे पंत
अपने तो गमछा भला
'भजन' करें हम बन संत
बोलो सारा रा रा....

मैं नेता प्रतिपक्ष, मैं ही हूं

कहने को मैं नेता प्रतिपक्ष
नाम है मेरा जूली
पार्टी में हावी मुझ पर
नेता दबंग हो या मामूली
जादूगर आते नहीं
चाहे क्यों न हो बजट
पार्टी अध्यक्ष अपनाते हैं
अपनी ही अलग रट
होली पर दुआ मेरी
ऐसा फैले रंग
बाकि देखेंगे बाद में
बस 'दिल्ली' रहे
प्रसन्न
बोलो सारा रा रा....

जादू की छड़ी कौन ले गया

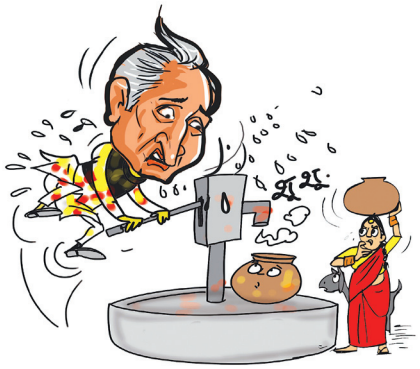

तीन बार का राजा मैं
गांधी की है छाप
छड़ी को ढप बना दूं
ऐसी मेरी थाप
निकम्मों के कारण
खोया मैंने राज
गैरों की कहें क्या
अपने भी न आए बाज
चिरंजीवी, मुफ्त बिजली
कोई न आई काम
मैं तो सेक्यूलर ठहरा
कैसे कहूं, 'हे राम'
बोलो सारा रा रा

जुबां पर ताला

हाथों से खोली पर्ची
दिल पर रख पत्थर भारी
जुबां पर लगा है ताला
पर चेहरा बता दे हालत सारी
बेटे को मिल जाए
अब तो कोई मुकाम
ख्वाहिश यही बची बस
बाकि बस आराम
पांच साल का बल प्रदर्शन
आया नहीं कुछ काम
मार्गदर्शक हैं अब अपन
लो शुभकामनाएं, सुबह हो या शाम
बोलो सारा रा रा...

होली का हुड़दंग

विधान हो या संसद
अपने वही हैं रंग
जैसे यूनिवर्सिटी में
मचाते थे हुड़दंग
दिव्या, ज्योति की जंग में
चौधरी थक गए इतना
उप चुनावों में भैया
खेल कर गया अपना
नागौर में सिमटी बोतल
दावे बन गए डींगे
चलो अब दिल्ली चलें
वहीं होंगी पींगे
बोलो सारा रा रा

मैं वही खिलौना लूंगा

वादा टूटा सपना टूटा
था जो अपना, सारा छूटा
सिंधिया की राह पर
बढ़ाये थे कदम
टाइमिंग हुई मिस
जादूगर ने फीके कर दिए रंग
अब चेहरे पर मुस्कान से
जीतूं बाकि जंग
चार साल बाद की होली
क्या करेगी हमको मलंग
तब भी हो जाए न कहीं
इफ एंड बट
मैं तो वही खिलौना लूंगा
अपनी तो बस यही है रट
बोलो ... सारा रा रा...

सब स्क्रिप्टेड है हुकुम

मैं चलूं उससे पहले
पीआर टीम आगे चले
बोलूं कुछ उससे पहले
सोशल मीडिया पर डले
अपनी ठसक अपनी शान
200 के बीच में अपन 'किंग खान'
होली भी खेलूं
तो चार कैमरे हों आगे पीछे
हेलीकॉप्टर से गुलाल
ड्रोन से पिचकारी खींचे
यूथ का नेता हूं..
क्यूं रहूं होंठ भींचे
बोलो सारा रा रा....

भांग के नशे में हम ने लिख तो दिया। पीआर वाले ने नेताओं के सोशल मीडिया पर पोस्ट भी कर दिया। होली का रंग अब इन नेताओं की आंखों में आ गया है। किसी की लाल हैं, किसी भगवा, किसी की हरी। नेता हैं, होली के रंग हो या गुस्से के, पार्टी की विचारधारा के मुताबिक चुनते हैं। नेताओं के छुटभैयों के प्यार भरे कॉल हमें आने लगे हैं। पीआर वाले ने पेटी समेट के दूसरे राज्य में दुकान जमा ली है। ***हां.. इस मैगजीन के सम्पादक जी वहीं हैं। अपने टूटे फूटे ऑफिस में। होली पर गुलाल की थाली हाथ में लिए। गिफ्ट में आई सोन पपड़ी का डब्बा लिए। जा आइए। कह दीजिए उन्हें.. हैप्पी होली..***
बोलो सारा रा रा....

होली से पहले ही 'इंडिया' तो हो ली

दिनेश जोशी ✍ वरिष्ठ पत्रकार

होली का मौसम आते ही चारों ओर रंग, गुलाल और पानी की बाल्टियाँ तैयार हो जाती हैं। पर इस बार इंडिया गठबंधन की होली तो हो ली। राजनीति के अखाड़े में यूं भी रंगों की जबरदस्त बौछार बारहमासी होती रहती है। फिर ये गठबंधन तो बड़ा वाला अखाड़ा था/है। तालमेल के अभाव और घालमेल की इफरात ने दिवाली के बाद ही "इंडिया" गठबंधन का रंग उड़ा दिया। कहें तो इसे बदरंग कर डाला।

गली-गली में चर्चा है कि इस बार "इंडिया" गठबंधन की होली कैसी रहेगी। विपक्षी दलों ने मिलकर जो रंगोली सजाई थी, वह अब हवा में उड़ती नजर आ रही है। हर नेता अपने गुलाल की पोटली लेकर मैदान में उतरा था, लेकिन जैसे ही अबीर-गुलाल उड़ना शुरू हुआ, गठबंधन के नेता खुद को बचाने में लग गए।

प्रधानमंत्री पद की आस

गठबंधन के अस्तित्व में आने के साथ ही उसमें शामिल बड़े-बड़े महारथी अपने-अपने गालों पर पीएम पद का अबीर पोतने में लगे थे। राहुल बाबा ने सोचा, पक्का उन्हें ही "गुलाबी गाल" वाला पद मिलने वाला है, लेकिन तृणमूल की दीदी ने उन्हें अपनी रंग-बिरंगी पिचकारी से ऐसा धो डाला कि बेचारे आईने में ख़ुद को पहचानने केजरीवाल भी से ही डरने लगे। अरविंद थे, मगर हाय री गुलाबी पद की टकटकी में किस्मत भ्रष्टाचार के जिस काले रंग की खिलाफत से ब्यूरोक्रेट से राजनेता बने, उसी रंग ने उन्हें जमीन दिखा दी। होली से करीब सवा महीने पहले ही उनकी होली भी हो ली। यूं भी उनकी खाप धवल टोपी से बंगाल और बिहार वाले रंग मेल नहीं खा रहे थे।

सीटों का झगड़ा

होली से पहले इंडिया गठबंधन की असली मस्ती तो तब आई जब सीटों के बंटवारे पर गुलाल के बजाय कीचड़ फेंका जाने लगा। उत्तर प्रदेश में समाजवादी और कांग्रेस की पिचकारियाँ उल्टी चलने लगीं। बिहार में लालू यादव ने अपनी पिचकारी जैसे ही टेढ़ी की कांग्रेस के नेता रंगने से पहले ही भाग खड़े हुए। बंगाल में दीदी ने अपनी अलग ही रंगोली बना ली और बाकी सबको पानी के गुब्बारे थमाकर किनारे बैठा दिया। अब इतने टूट भड़ंगे में गठबंधन की होली का रंग फीका नजर आने लगा है।

कौन बनेगा 'रंगमंच का राजा'

गठबंधन की होली जाननी है तो हमें एक साल पीछे जाना होगा। जरा याद कीजिए, जब होली के रंग चरम पर पहुंचे, तब असली सवाल उठा—"गठबंधन का मुखिया कौन होगा?" हर कोई एक-दूसरे पर रंग डालकर खुद को उजला दिखाने में लगा था। राहुल बाबा बोले, "मेरे पास पार्टी है!"

दीदी तमतमा उठीं—"मेरे पास बंगाल है!" अखिलेश ने मुस्कुराकर कहा था—"मेरे पास यूपी का साइकिल है!" केजरीवाल ने टोपी सीधी करते हुए कहा—"मेरे पास दिल्ली की झाड़ू है!" शरद पवार ने ठंडी सांस भरते हुए कहा—"मेरे पास अनुभव है!"

पर ममता दीदी की पिचकारी सबसे तेज निकली और उन्होंने गठबंधन के चेहरे को अपने ही रंग से सराबोर कर दिया। गठबंधन को जोड़ने में मुख्य भूमिका निभाने वाले मिस्टर पलटूराम को सबसे पहले बाहर का रास्ता दिखाया गया। अब आप ही बताइए, जो पकाएगा वो कुछ खाएगा नहीं क्या? फिर, पलटूराम तो यूं भी विख्यात... सुबह यहां, शाम वहां, कल पता नहीं कहां?

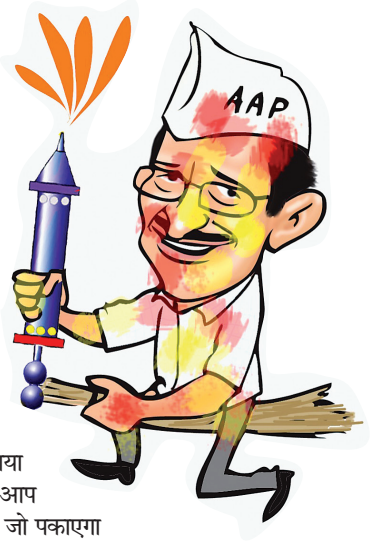

कौन किसके साथ खेलेगा?

इधर, जनता सोच रही है कि इस बार होली में कौन किसका दोस्त बनेगा। गठबंधन के कुछ रंग तो ऐसे थे, जो आपस में घुल ही नहीं पा रहे थे। बिहार में नीतीश कुमार ने पहले लाल रंग से दोस्ती की, फिर भगवा रंग की ओर दौड़ लगा दी। उधर महाराष्ट्र में शरद पवार के भतीजे ने अलग ही गुलाल उड़ाना शुरू कर दिया। विपक्षी नेताओं ने जो भी रंग तैयार किया था, वह खुद के ही कपड़ों पर गिरने लगा।

और... रंग उड़ गया!

गठबंधन की दूसरी होली के दिन ज्यों ज्यों नजदीक आ रहे, "इंडिया" गठबंधन की पूरी रंगोली बिखरने लगी है।

पहले बिहार में नीतीश ने गठबंधन के रंग से हाथ धो लिया, फिर यूपी में सीटों की लड़ाई ने स्थिति और रंगीन बना दी। पश्चिम बंगाल की दीदी अभी भी एकला चालो रे... की तर्ज पर फागुन के गीत गा रही है। दिल्ली में केजरीवाल की झाड़ू ने खुद उनकी ही सफाई कर डाली है।

आखिरकार, दूसरी होली से पहले ही विपक्षी गठबंधन की अंगिया गीली होकर खुलने वाली है। कोई एक-दूसरे को पानी डालकर भीगने से बचाने में लगा है, तो कोई खुद को इस गंदे खेल से दूर बताने में जुटा है।

इस बार होली से पहले ही "इंडिया" गठबंधन

जिस तेजी से बदरंग हुआ है, उसे देखकर जनता भी चकित है। जनता सोच रही है कि ये नेता राजनीति के गुलाल से खेल रहे थे या सिर्फ अपने ही चेहरों को चमकाने की होड़ में लगे थे?

होली का असली मजा तो तब आता है जब सब मिलकर रंग खेलें, लेकिन जब रंग ही अलग-अलग दिशाओं में उड़ने लगे, तो न त्योहार का मजा आता है और न ही राजनीति की रणनीति सफल होती है।

इस बार की होली से पहले ही 'इंडिया' गठबंधन के कई रंग बिखर चुके हैं। देखना यह है कि अब कितने रंग बचते हैं और कौन से उड़ जाते हैं। राजनीति में होली और हो ली का बहुत बारीक फ़र्क है, जिसे "इंडिया" गठबंधन साबित करता नजर आ रहा है।

मुफ्त का रंग, बाद में पड़े तंग!

राकेश गांधी
वरिष्ठ पत्रकार

अगर होली से पहले चुनाव हों, तो नेताओं का दिल भी होली के रंगों की तरह रंगीन और 'मजाकिया' हो जाता है। फ्री बिजली, फ्री पानी, फ्री राशन, फ्री मोबाइल— सबकुछ ऐसे उछाले जाते हैं, जैसे हवा में गुलाल उड़ाई जाती है। ललचाई जनता भी समझती है कि अबकी बार असली होली खेलेंगे, लेकिन सत्ता बदलते ही नेताओं के लहजे बदल जाते हैं। रंगों की होली खेलने को आतुर जनता को घरों के नलों में पानी की बूंद तक नसीब नहीं होती। चुनाव जीतने के बाद मुफ्त के वादों में झुलसाई सरकारें भरपाई के लिए जनता पर टैक्स के 'डोले' ऐसे बरसाती है जैसे किसी मोहल्ले में होली के 'लट्ठ' पड़ रहे हों। अपनी जेबें खाली होती देख जनता भी मन मसोज कर रह जाती है और सोचती है, 'यार, अबकी बार होली से पहले वे हमारे हाथ में फिर उल्लू पकड़ा गए!'

लोकतंत्र या 'लोक तमाशा'

'भूतिया' रंग की तरह नेता'जी को लगे इस फ्रीबीज के रोग ने लोकतंत्र को "लोक-तमाशा" बना कर रख दिया है। पूरे पांच साल नेताओं की शक्ल देखने को तरसने वाली जनता चुनावी मौसम में खुद को 'भाग्यवान' समझने लगती है। मानो कुबेर का खजाना तो बस उसी के घर पर बरसने वाला है। नेता'जी भी होलियाना अंदाज में जनता पर वादों की ऐसी पिचकारी चलाते हैं कि हर तरफ रंग ही रंग नजर आने लगता है- मुफ्त बिजली का गुलाबी, फ्री राशन का हरा, बेरोजगार भत्ते का पीला और मुफ्त स्कूटी का आसमानी!

पुरानी कहावत है- 'मुफ्त का चंदन घिस मेरे लाला... दो चार को और बुला ला।' जनता भी इसी तर्ज पर अपने पूरे फगुआ मूड में होती है। नेता'जी के वादों पर ऐसे लपकती है, जैसे कोई होली पर मुफ्त गुझिया बांट रहा हो! कोई नेता कहता है, "हम हर घर टीवी देंगे!" तो जनता ऐसे झूम उठती है मानो अब अमिताभ बच्चन उनके घर पर साक्षात् 'कौन बनेगा करोड़पति' खेलने आ रहे हैं!

करदाता की लट्ठमार होली

इन सब के फेर में घनचक्कर हुआ ईमानदार करदाता खुद ही अपने मुंह पर गहरा रंग पोत दुविधा में पड़ जाता है- "भाई, हम ही रंग डलवा रहे, हम ही पानी भर रहे, और रंगने का मजा कोई और ले रहा है!" मेहनत से कमाने वाले सोचते हैं कि वे गलत दुनिया में तो नहीं पैदा हो गए। यहां पसीना बहाने वाला टैक्स भरता है और फ्रीबी प्रेमी गुलछर्रे उड़ाने के लिए 'प्रोत्साहन राशि' पाते हैं! बुरे कर्म किए बगैर नारकीय जीवन झेलने को मजबूर ईमानदार करदाता लट्ठमार होली के शिकार होते हैं।

इस लोकतंत्र की महिमा तो देखिए- जो जितना आलसी, वह उतना ही 'भाग्यशाली'। सरकारी योजनाओं का असली लाभार्थी वही है, जो दिन भर नुक्कड़ पर बैठकर चाय सुड़कता है, सरकार को कोसता है और 'अगली स्कीम' की भविष्यवाणी भी करता है। रोजगार की समस्या, महंगाई व सीमाई संघर्ष से बेखबर ग्रामीणों की चौपालों में इसी पर बहस छिड़ती है कि इस बार कौन सा माल फ्री मिलेगा? शहरों में चाय की दुकानों पर जश्न का माहौल रहता है- "पिछली बार स्कूटी मिली थी, इस बार लैपटॉप मिल जाए तो मजा आ जाए!"

माल-ए-मुफ्त पर होली की लूर

माल-ए-मुफ्त उड़ाने वाले नेता'जी होली के रंग में सराबोर हैं- "हम फ्री सिलेंडर देंगे!" दूसरा ठंडाई गटकते हुए बोलता है, "अरे, हम तो गैस ही मुफ्त कर देंगे!" तीसरा मुंह में पान दबाते हुए बोलता है "भइया, हम मुफ्त में मकान देंगे!" चौथा अपनी पीली बत्तीसी दिखाते हुए बोलता है- "हम मकान में फर्नीचर भी मुफ्त देंगे!" जनता इन महाझूठों की घोषणा पर तालियां पीटते हुए ऐसे हुलसती है, जैसे फागुन में ढोलक की थाप पर लूर ले रही हो!

असली मजा तब आता है जब चुनाव खत्म होते ही नेता'जी होली के रंग की तरह अचानक फीके पड़ जाते हैं! जो कल तक घर-घर जाकर मिठाई बांट रहे थे, वे चार साल तक अज्ञातवास में चले जाते हैं। हमारा "फ्रीबीज कहां हैं?" पूछने पर जनता को वही नेता'जी ऐसे घूरकर देखते हैं जैसे होली के अगले दिन नहाने के बाद लोग अपनी हरकतों को भुलाकर कहते हैं- "भाई, हमसे कुछ गलती हो गई क्या?" सवाल उठता है- क्या ये मुफ्त की सौगातें असली लोक-कल्याण है या सिर्फ वोट हथियाने का खेल? क्या बिना मेहनत किए केवल मुफ्त के सहारे कोई देश चल सकता है? नेता'जी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि फ्रीबीज का देश की अर्थव्यवस्था पर कैसा रंग चढ़ता है.., उन्हें तो येन केन प्रकारेण सत्ता चाहिए होती है। मुफ्त के सहारे जीवन काटने के आदी हो चुके लोगों को भी कहां फर्क पड़ता है? उन्हें भी तो सबकुछ मुफ्त चाहिए। रोता है बेचारा टैक्स भरने वाला, जिसे कोई पूछ ही नहीं रहा!

फ्री का रंग, बाद में पड़े तंग!

अगली बार जब कोई आपको कहे, "भाई, ये फ्री में मिल रहा है", तो पहले एक बार जरूर सोचिएगा- "आखिर इसकी असली कीमत क्या है?" होली के दिन कोई कहे, "आओ, मुफ्त में रंग लगवा लो!" तो मुफ्तखोर झटपट तैयार हो जाते हैं। लेकिन जब तक समझ आता है कि रंग के साथ-साथ कपड़े, बाल और इज्जत भी बर्बाद हो चुकी है, तब तक देर हो चुकी होती है। तो भाइयों और बहनों, होली खेलो, मजे करो, लेकिन "फ्रीबीज" से बचो। क्योंकि इस दुनिया में मुफ्त में सिर्फ रंग लगता है और फिर वो भी छुड़ाना मुश्किल हो जाता है!

शून्य के शहंशाह

सुरेश व्यास
वरिष्ठ पत्रकार

भाजपा ने भगवान राम से लगभग दूना वनवास खत्म करने की जैसे कसम ही खा रखी थी और कांग्रेस ने केजरीवाल के श्रीमुख से भाजपा की 'बी-टीम' का खिताब मिलने से पहले ही गुजरात से पंजाब तक का बदला लेने की ठान ली थी। फिर भी सारा संशय कांग्रेस के प्रदर्शन पर था। उसे लग रहा था कि भाजपा-आप की लड़ाई में वह पांच-सात सीटें तो निकाल ही लेगी, लेकिन नतीजे आते ही कांग्रेस की 'हैटट्रिक' हो गई या कहे कि कांग्रेस 'हिट विकेट' हो गई।

बात दिल्ली विधानसभा चुनावों के नतीजे आने वाले दिन की है। देश की राजधानी दिल्ली में किसकी सरकार बनेगी, ये सवाल दिल्ली ही नहीं, पूरे देश के लोगों के दिमाग में घूम रहा था। हम कौनसा इस सवाल से अछूते रह सकते थे। कहने को पत्रकार न पक्ष, ना विपक्ष, सिर्फ निष्पक्ष होता है, लेकिन पिछले एक दशक से दिल्ली में हर साल जानलेवा होने वाले वायु प्रदूषण का साइड इफेक्ट ऐसा हुआ है कि पत्रकारों पर भी छाप लगी हुई नजर आती है। पार्टियों की डेली ब्रीफिंग हो या फिर कोई नेतायुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस, पत्रकार भी दो धड़ों में बंटे नजर आते हैं। 'लैग, पैग ते मारूती' के अनुयायी पत्रकार तो पहले भी थे और अब भी हैं। उन्हें तो मीन्यू व गिफ्ट से मतलब रहता है। भाड़ में जाए सुचिता, वुचिता। दरअसल सही मायने में निष्पक्ष तो अब ये ही लोग रह गए हैं। बाकी हम जैसों को तो लोग प्रेस कॉन्फ्रेंस में पानी भी नहीं पीने की आदत के चलते 'एलियंस' ही मानते हैं।

खैर, वोटों की गिनती शुरू होते ही लगने लगा था कि इस बार आर या पार है। फिर भी हर मीडिया हाउस से भाजपा, कांग्रेस और आम आदमी पार्टी (आप) की बीट सम्भालने वाले पत्रकार अपने झोली-डंडों के साथ कमर कसे हुए थे। पूरे चुनावी परिदृश्य में अन्ना आंदोलन से निकल कर बनी आप अपने शैशवकाल से ही कांग्रेस और भाजपा जैसी पार्टियों को चुनावी अखाड़े में धूल चटा कर सत्ता में अंगद के पैर की तरह अड़ी हुई थी, लेकिन इस बार भाजपा ने भगवान राम से लगभग दूना वनवास खत्म करने की जैसे कसम ही खा रखी थी और कांग्रेस ने केजरीवाल के श्रीमुख से भाजपा की 'बी-टीम' का खिताब मिलने से पहले ही गुजरात से पंजाब तक का बदला लेने की ठान ली थी। फिर भी सारा संशय कांग्रेस के प्रदर्शन पर था। उसे लग रहा था कि भाजपा-आप की लड़ाई में वह पांच-सात सीटें तो निकाल ही लेगी, लेकिन नतीजे आते ही कांग्रेस की 'हैटट्रिक' हो गई या कहे कि कांग्रेस 'हिट विकेट' हो गई। यानी साल 2015 के बाद इस बार भी कांग्रेस के खाते में शून्य।

नतीजे तो नतीजे हैं, एक वोट से अटल जी की सरकार गिर गई थी तो एक वोट से राजस्थान के दिग्गज कांग्रेसी नेता सीपी जोशी चुनाव हार गए थे। अब भले ही कोई ईवीएम पर भूंड का ठीकरा फोड़ दे या फिर धनबल-बाहूबल पर। कांग्रेस की झोली में तो शून्य ही रहा, लेकिन कभी देश की राजनीति में शेर मानी जाने वाली कांग्रेस अब देश और अन्य राज्यों की बजाय शून्यता के महल में राज करती नजर आती है। इस शून्यता की दुनिया में सब कुछ होता है, लेकिन होता कुछ नहीं है। इस शून्यता पर कांग्रेस का हाल जानने हम पहुंचे अलग-अलग जगह तो दृश्य भी अलग अलग नजर आए। आइए आपको भी लाइव बताते हैं, कहां क्या हाल दिखा।

कांग्रेस मुख्यालय

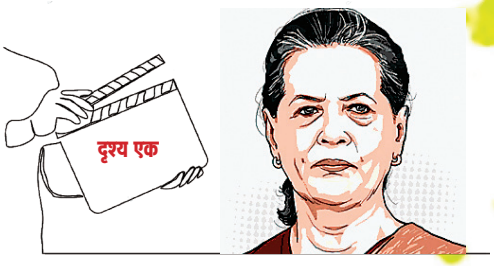

उसके मुख्यालय 24-अकबर रोड़ पहुंचे तो वहां सन्नाटा था। हालांकि इससे पहले कोटला रोड पर कांग्रेस के नए मुख्यालय इंदिरा भवन का उद्घाटन हो गया था, लेकिन शिफ्टिंग अभी पूरी नहीं हुई थी। ऐसे में बड़े नेता पुराने मुख्यालय में ही मिलने की आस थी। ये आस भी निराश भई। कोई बड़ा नेता नहीं। इलेक्शन वार रूम में भी जैसे मरघट पसरा हो। सोशल मीडिया कक्ष में कुछ कर्मचारी जरूर 'शोकाकुल' मुद्रा में नजर आए। कक्षा की मुखिया सुबह 10 बजे ही नतीजों की शुरुआत, मध्य और अंत के हिसाब से ट्वीट डिक्टेट करवा के पिछले रास्ते निकल चुकी थी। फोन उनका नो-रिप्लाई होता रहा। दफ्तर में बतिया रहे कुछ कर्मचारियों को टटोला तो कोई कुछ बोलने को ही तैयार नहीं। इसी दौरान मीडिया विभाग के मुखिया के आस-पास डोलते रहने वाले चूनिया जी पर नजर पड़ गई। वे लॉन के एक कौने में मोबाइल पर किसी से बतियाते दिखे। राजस्थान-हरियाणा के बॉर्डर वाले गांव के रहने वाले चूनिया जी से नजीदीकी का फायदा उठाने की गरज से कदम बढ़ाए तो उन्होंने दूर से ही रुकने का इशारा कर दिया। हम इंतजार करते रहे। आखिर स्टोरी जो फाइल करनी थी। कुछ देर बाद चूनिया जी मुंह लटकाए नमूदार हुए। राम-राम करने के साथ बोला कि बॉस से बतिया रहा था। परेशानी ये है कि शाम को ब्रीफिंग में कोई बड़ा नेता सामने आने को तैयार नहीं है। फरके जी ने सफदरजंग रोड वाले अपने बंगले पर 'समीक्षा' बैठक बुला रखी है। उनका दुःख कुछ कम करने की गरज से हमने कहा, विशोक जी तो दिल्ली में ही होंगे। वे तो पर्यवेक्षक भी रहे हैं। कर दीजिए आगे। उन्हें भी धोरों में मिली हार के बाद एकांतवास से बाहर आने का मौका मिल जाएगा। सुनते ही चूनिया जी ने कहा- 'जे हुई ना बात...' और चहकते हुए फोन लेकर बॉस से बतियाने फिर उसी कौने की ओर निकल पड़े। मुझे लगा कि शायद वहां नेटवर्क ठीकठाक पकड़ता होगा।

इंदिरा भवन (कांग्रेस का नया मुख्यालय)

अकबर रोड से निकल पड़े हम कोटला की ओर। यहां कांग्रेस का नया मुख्यालय बना है। नाम है इंदिरा गांधी भवन। दुनिया की सबसे तेज बढ़ती भाजपा के मुख्यालय के करीब है यह नया कांग्रेस दफ्तर। 'कहां राजा भोज और कहां गंगू तेली....' वाली कहावत भवन देखकर ही दिमाग में उमड़-घुमड़ आई। कोई दौर था कि देश में किसी ने 'इंदिरा इज इंडिया एंड इंडिया इज इंडिया' कहते हुए इंदिरा गांधी की ताकत का अहसास करवाया था। देश ने भी उन्हें कई मौकों पर 'आयरन लेडी' के रूप में देखा और महसूस किया था। कहावत और इंदिरा इज...वाक्यांश की सामयिकता को याद करते मन ही मन शून्य वाली कांग्रेस को उस दौर से कम्पेर कर बैठे।

सोचते सोचते रिसेप्शन पर पहुंचे थे कि आवाज आई, 'आपको किससे मिलने है...?' हम कुछ जवाब देते इससे पहले ही कानों में एक चिरपरिचित आवाज में 'आगे पीछे हमारी....यहां के हम हैं राजकुमार....' गाना गुनगुनाए जाने के स्वर सुनाई दिए। नजरें घुमाई तो साइड वाली सीढ़ियों से कांग्रेस के युवराज उतरते दिखाई दिए। हमारा चेहरा खिल गया कि भई हो गई आज की स्टोरी तो...वह भी एकदम एक्सक्लुजिव। इतने में ही अभिवादन हो गया और काले रंग का लोअर व आधी बांह का सफेद टीशर्ट पहने युवराज सामने आते ही बोले कि अरे भाई यहां कैसे...आपको तो खुशियों में शरीक होना चाहिए, यहां वीराने में कैसे? हमने कहा कि आपकी पार्टी हार गई और दिल्ली में लगातार शून्य की हैटट्रिक...ऐसा कैसे हो गया। कहने लगे- देखिए...धनबल-बाहूबल का खेल है। मोदी जी और उनकी सरकार ने पूरा इस्तेमाल किया। हम लोगों को अपनी बात नहीं समझा सके। मोदी जी को बहुत बधाई....।

'लेकिन आप तो कहीं भूमिका में भी नहीं रहेंगे दिल्ली में?'

'देखिए...ये विचारधारा की लड़ाई है...हम लड़ेंगे....यहां नहीं संसद में अपनी बात रखेंगे...कोई कितना ही दमन कर ले, हम बोलते रहेंगे....लड़ते रहेंगे।' उन्होंने यह भी बता दिया कि अभी फरके जी समीक्षा बैठक करेंगे...इसमें नतीजों का पोस्टमार्टम किया जाएगा।

फिर हमने '...यहां के हम हैं राजकुमार' गाने के बारे में पूछा तो डेढ़ इंच की मुस्कुराहट के साथ युवराज तेज कदमों से आगे बढ़े और कहते गए कि वे तो इस गाने की लाइन पर लिरिक्स बनाने की कोशिश कर रहे थे कि 'हम हैं...शून्य के सरताज।'

फरके जी का घर, सफदरजंग रोड

कोटला से राजपथ को पार कर हम कांग्रेस के सदर (?) परके जी के सफदरजंग लेन वाले घर के बाहर पहुंचे। शाम करीब सात बज चुके थे। अंदर बैठक शुरू हो चुकी थी और बैरीकेट्स के एक तरफ स्टैंड पर कैमरे और उन पर लगी फ्लैश लाइट्स चमचमा रही थी। पत्रकारों का हुजूम था। हम भी शामिल हो लिए। कुछ भाई लोग हाथों में सींगदाना-वैफर्स के पैकेट लिए नतीजों का पोस्टमार्टम करते दिखे। हमने भी कान लगा लिए। सभी लोग एक बड़े चैनल के राजनीतिक सम्पादक को घेरकर बैठे थे और वे कहे जा रहे थे कि 'कांग्रेस ने तो जैसे शून्य को गले लगा लिया है....दिल्ली में तो भई रिकॉर्ड ही बन गया...हीरो से एकदम जीरो....।' इसी दौरान एक कृष्ण मंदिर रिटर्न पंच पटेल बोल उठे कि दिल्ली में कांग्रेस ने पूरे पंद्रह साल तक राज किया। किसी को बढ़ने नहीं दिया, लेकिन फिर ऐसी झाड़ फिरी है कि जीरो पे जीरो आए जा रहे हैं।

इतने में कांग्रेस को अरसे से देख रही एक वरिष्ठ पत्रकार छेनू कुंत्तल अपना चश्मा सही कहते हुए आगे आई और बोली कि अब इन बातों में क्या रखा है.... कांग्रेस कहीं दो पर है....कहीं पांच पर। राज्य गिन लो..धीरे धीरे खिसकते जा रहे हैं। राजस्थान को विशोक ने निपटा दिया....कर्नाटक डी-टीम निपटा देगी। ये बैठकें तो रीत का रायता है बस....। दिल्ली से वैसे लोकसभा में भी कांग्रेस की शून्य वाली शंहशाहत 2014 से लगातार बनी हुई है। वहां भी तो हैटट्रिक हो चुकी।

इसी दौरान हंसी के ठहाके गूंजे। एक ने कहा सही बात है। कांग्रेस ने शून्य को गले लगा लिया है और अब छोटे-भाई मोटे भाई की जगह कांग्रेस के नेता राज्यों में मूकदर्शक की भूमिका को ही अपनी नियती मान बैठे हैं।

फिर एक सटीर कमेंट आया कि चुनावी हार से खुद को होने वाले फायदों की गलतफहमी में समय काट रही कांग्रेस सभी जगह सड़कों की बजाय ट्वीटर पर ज्यादा संघर्ष करती नजर आती है।

इसी दौरान कुछ हलचल हुई और रिपोर्टर माइक गन लिए अलर्ट हो गए। बैठक शायद खत्म हो गई थी। सबसे पहले युवराज के साथ चांदिया जी का काफिला तेजी से बाहर निकला और फिर द्रियंका जी मीडिया की ओर वैव करते हुए निकल पड़ी।

विशोक जी की ब्रीफिंग

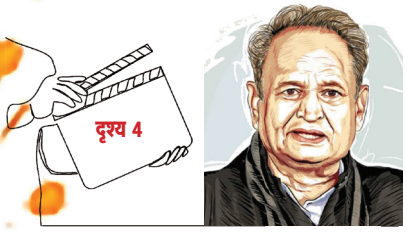

फरके जी के घर से एक एक कर सभी नेता निकल गए। इसके बाद जेसी माधूगोपाल और गले में काला मफलर डाले विशोक जी कुछ अन्य नेताओं व चूनिया जी के साथ चहल कदम करते हुए बाहर निकले। सभी ऐसे अलर्ट हो गए जैसे कि बहुत बड़ा धमाका होने वाला हो। स्टैंड पर लगे आईडी माइक के पास आकर सबसे पहले माधूगोपाल बोले कि बैठक हो गई। हमने दिल्ली के नतीजों की समीक्षा की है। साथ ही पार्टी संगठन पर भी विचार हुआ है। हम हार स्वीकार करते हैं और दिल्ली की जनता से वादा करते हैं कि जी-जान से उनकी सेवा करेंगे। इतना कहकह उन्होंने विशोक जी को आगे कर दिया।

गला खंगारते हुए विशोक जी बोले- 'कांग्रेस अध्यक्ष जी ने नतीजों को गम्भीरता से लिया है...ये नतीजे हमारी उम्मीदों के विपरीत हैं....हमने महशूश किया है कि चुनाव में सत्ता का दुरुपयोग हुआ....लोगों को डराया धमकाया गया...वोटर्स को झूठे वादे किए गए... ईवीएम का भी खेल है...जनता हमारे खिलाफ नहीं थी...फिर भी हम हारे...अब हम प्रत्याशियों से फीडबैक लेंगे और अपनी गलती सुधारने की कोसिस करेंगे...।'

इसी दौरान सवालों की बारिश शुरू हो गई। विशोक जी माधुगोपाल की ओर ताकने लगे। इतने में एक महिला पत्रकार ने पूछ लिया कि दिल्ली के नतीजे तो साफ हैं। आप राजस्थान की बात कीजिए। एक सवा साल पहले सरकार के अच्छे काम और कांग्रेस की गारंटियों के बावजूद बुरी तरह मिली हार से आप लोगों ने क्या सबक लिया है? कुछ जवाब आता, इससे पहले ही पीछे से किसी ने पूछा लिया कि राजस्थान में हार के बाद कांग्रेस ने तो सड़क पर दिख रही है और न ही सदन में। क्या हार का गम अभी तक गलत नहीं हुआ है?

विशोक जी थोड़ा सकपकाए...फिर बोले कि राजस्थान की पर्ची सरकार की हकीकत सभी के सामने हैं। मंत्री के इस्तीफे पर भी चार महीनों से कोई फैसला नहीं लिया जा रहा। सरकार अफसर चला रहे हैं। जनता परेशान हैं। उसे अपनी गलती समझ में आने लगी है। अगले चुनाव में हम इस पर्ची सरकार को उखाड़ फैंकेंगे। सदन में मजबूती से अपना बात रखना चाहते हैं, लेकिन आसन भी दिल्ली की तरह चल रहा है। सही बात कहने वाले सदन से सस्पैंड किए जा रहे हैं। ये लोग शुरू से लोकतंत्र के दुश्मन रहे हैं और लगातार सच्चाई का गला घोंट रहे हैं....।

बीच में ही किसी ने बात काटकर अचिन पाइलेट से विवाद और फोन टेपिंग पर सवाल किया तो विशोक जी मफलर सम्भालते हुए....'अच्छा सुभ रातरी....चाय पीजिए...' कहते हुए माधुगोपाल के कंधे पर हाथ रखकर भीतर लौट गए।

आप के साथ तो खेला हो गया

होली से पहले देश में गूंज गया

राजेश कसेरा ✍ वरिष्ठ पत्रकार

दिल्ली के विधानसभा चुनाव आम आदमी पार्टी और उसके संयोजक अरविंद केजरीवाल के लिए बुरा ना मानो होली जैसे चरितार्थ साबित हो गए। रंगों के पर्व से पहले विधानसभा चुनाव में जीत का जश्न मनाने के लिए केजरीवाल एण्ड टीम ने दुनिया भर की तैयारियां कर ली थीं। केन्द्र की मोदी सरकार और गृहमंत्री अमित शाह को तीसरी बार पटखनी देने के लिए आप पार्टी ने साम-दाम-दण्ड और भेद सब लगा दिए, लेकिन भगवा रंग ने उनको ऐसा लपेटा की झाड़ू के तिनके-तिनके बिखर गए। देश की राजधानी में इतनी ताकत के साथ कमल खिला कि आप के सारे रंग फीके पड़ गए। इस जन्म में मोदी-शाह को दिल्ली की ताजपोशी से दूर रखने के आप के ख्वाब पानी-पानी हो गए। होली के अवसर पर राजस्थान टुडे दिल्ली विधानसभा के चुनावी नतीजों को अपने चुटीले अंदाज में व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके पीछे न तो किसी को नीचा दिखाने का मकसद है और न ही किसी व्यक्ति विशेष का मन दुखाना उद्देश्य है। आलेख का विशुद्ध मंतव्य होली के पर्व को सार्थक रूप से परिभाषित करना है। इसके बावजूद किसी को अच्छा नहीं लगे या किन्हीं शब्दों पर आपत्ति हो तो हम इतना ही कहेंगे, बुरा न मानो होली है, शब्दों की ये तीखी बोली है...।

इसे कहते हैं खुद के पैरों पर कुल्हाड़ी मारना

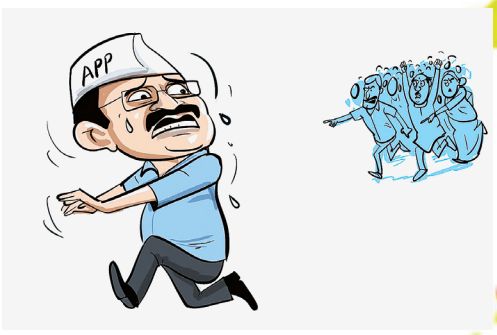

होली पर ये कहावत सबसे अधिक आप पार्टी के संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर खरी साबित होती है। चुनाव से पहले जेल जाना और जमानत पर छूटकर आने के बाद भी जेल जाने जैसे ढेरों प्रपंच करना, केजरीवाल ने विधानसभा चुनाव के दौरान यही सब किया। चुनाव जीतने के लिए मर्यादा तोड़ना और उसकी सीमाओं को लांघना, उन्होंने जो कुछ भी करना था सब किया। हर बार की तरह केजरीवाल ने इस बार भी यही सोचा कि वे तो अकेले खुले आंखों से मैदान में युद्ध करने उतरे हैं, बाकी सब तो धृतराष्ट्र हैं। विपक्ष भी और जनता भी। पर, काठ की हांडी बार-बार थोड़े चढ़ती है जनाब। अपनी करनी का फल तो एक न एक दिन भुगतना पड़ता है। झूठ के सहारे कब तक सच को छलते रहेंगे? इस प्रश्न का उत्तर तो मिलना ही था। ऊपर से अपने पैरों पर इतनी बार कुल्हाड़ी मार ली कि ठीक से चलना तो दूर खड़े होना तक भारी पड़ गया। केजरीवाल न केवल खुद डूबे, बल्कि पूरी पार्टी को भी ले डूबे। खुद की सरकार में तैयार किए गए शराब घोटाला, भ्रष्टाचार और शीशमहल के भुनगे में ऐसे उलझे कि आगे के रास्ते तक बंद दिखाई दे रहे हैं। केजरीवाल और उनकी टीम का भविष्य आगे क्या होगा, इसके बारे में वे पूरी तरह से आश्वस्त होंगे, क्योंकि सभी जमानत पर हैं और इस बार अंदर गए तो फिर बाहर आना कठिन राह पर चलने जैसा होगा। चाल, चरित्र और चलन की हवा से भरा गुब्बारा होली से पहले इस तरह से फुस्स हो जाएगा, इसकी परिकल्पना कम से कम राजनीति की एबीसीडी जानने वालों ने तो कई महीनों पहले कर ली थी।

न खुदा मिला और न विसाल-ए-सनम, न इधर के हुए न उधर के हुए

होली से पहले ये पंक्तियां दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी मार्लेना एकदम फिट बैठती हैं। पार्टी प्रमुख अरविंद केजरीवाल के जेल जाने के बाद बड़ी मुश्किल से सत्ता उनके हाथ में आई और उनको लगने लगा कि फिर से तकदीर पासा पलटेगी और वे दिल्ली के तख्त पर काबिज रहेंगी। इसके लिए उन्होंने जतन भी सारे केजरीवाल स्टाइल के किए। स्वयं को भरत मान बैठीं और केजरीवाल को राम। बोलीं, खड़ाऊ को सामने रखकर सत्ता को संभालेंगी और जैसे ही वे यानी केजरीवाल वनवास (जेल) से लौटकर आएंगे, उनकी गद्दी उनको सौंप देंगी। केजरीवाल के जमानत पर आने के बाद उनको लगा भी कि उनके त्याग, समर्पण और तपस्या को दिल्ली की जनता ने देखा है तो सहानुभूति का लाभ उनको शर्तिया मिलेगा, लेकिन ख्याली पुलाव आखिर कब तक पकाए जा सकते हैं? भक्ति का प्रतिफल कालकाजी विधानसभा क्षेत्र के मतदाताओं ने तो दे दिया, पर आप पार्टी के साथ जुड़ाव का फल उन्हें नहीं मिल सका। बड़े नेताओं ही हार के बाद आप ने सत्ता और ताकत दोनों तो गंवाई ही, इज्जत भी उतर गई। आतिशी मैडम ने भी केजरीवाल के बाद सबसे ज्यादा जीत के लिए प्रपंच किए। राजनीति के हर दांव-पेंच को उन्होंने खेला, पर उन्हें न तो माया मिल पाई और न ही राम। उल्टे काम तमाम और हो गया।

खुद तो डूबे ही, बाकियों को भी ले डूबे

दिल्ली विधानसभा चुनाव ने सियासत के इतने रंग दिखाए कि गिरगिट भी शरमा जाए। चुनाव से दो-तीन साल पहले पार्टी के नम्बर-1, नम्बर-2, नम्बर-3 श्रेणी के बड़े और दिग्गज नेता जेल चले गए। शराब नीति को लेकर लगे घोटाले के आरोप कोई भी नेता अपने दामन से छुड़ा नहीं पाए। सबसे पहले भ्रष्टाचार और मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में फंसकर पार्टी के शीर्ष नेता सत्येन्द्र जैन जेल गए। इसके बाद शराब घोटाले ने उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और राज्यसभा सांसद संजय सिंह को भी सलाखों के पीछे पहुंचा दिया। जवाब में पार्टी ने अपनी स्टाइल की राजनीति कर सडक़ों पर तो खूब हो-हल्ला मचाया, पर कानूनी दांव-पेंच के अलावा अपने बचाव में कोई तगड़ा तर्क नहीं दे पाई जो जनता कि समझ में आए। इसका खमियाजा आप को चुनाव में तगड़ी हार के रूप में झेलना पड़ा। पार्टी के धाकड़ नेता एक-एक करके खुद को बचाने के बजाय एक दूसरे को खींच कर जेल तक ले गए। सियासत के समंदर में फंसी आप पार्टी की नाव में इतने छेद हो गए कि एक दूजे को बचाने वाले अपनों को डुबोने में लग गए। अंततः सारे हाथ-पांव मारने के बावजूद आप के सारे सिपहसालार तैर नहीं पाए और नैया को भी ले डूबे।

भ्रष्टाचार का राक्षस लील गया बड़े-बड़े दिग्गजों को

आम आदमी पार्टी को चुनाव में सबसे ज्यादा नुकसान किसी ने पहुंचाया तो वह रहे भ्रष्टाचार के कई गंभीर आरोप। दिल्ली में सरकार बनने के बाद से पार्टी के लोगों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगने लगे। शराब घोटाले के अलावा दिल्ली जल बोर्ड के घोटालों ने भी पीछा नहीं छोड़ा। इस प्रकरण में ठेकेदारों से पैसे वसूलने के लिए ठेकों को कम राशि में छोडऩे की अनियमितताएं सामने आईं। मामला ईडी तक पहुंचा और आज भी इस पर जांच जारी है। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल खुद इस मामले के आरोपियों की सूची में शामिल हुए। सरकार चलाने के दौरान आप पार्टी के जिन नेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे, वे ही पार्टी की रीढ़ माने जाते थे। ऐसे में जिस भ्रष्टाचार मुक्त शासन सोच के साथ पार्टी की स्थापना की गई थी, वहीं संगीन सवालों के घेरे में उलझ गई। विपक्षी दलों भाजपा, कांग्रेस और अन्य को आप ने ही मुद्दे सौंप दिए। आखिर में भ्रष्टाचार का राक्षस ही पूरी पार्टी को निगल गया और दिल्ली के साथ देश का भरोसा भी आप से छिटक गया। जो पार्टी देश में क्रांतिकारी बदलाव लाने की सोच के साथ बनी, वहीं भ्रष्टाचार की जड़ों से खुद को सींचती गईं। अंत में भस्मासुर बनी और खुद के अस्तित्व को मिटा दिया।

भाजपा के साथ मोदी-शाह के लिए यह होली होगी सबसे खास

साल 2014 से देशभर के चुनावों में जीत का डंका बजाने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के मन में सबसे बड़ी कसक किसी चुनाव में जीत को लेकर थी तो वह थे दिल्ली के विधानसभा चुनाव। केन्द्र की सत्ता पर लगातार तीन बार काबिज होने के बावजूद दिल्ली नहीं जीत पाने की चाह अधूरी रही। भाजपा के साथ मोदी और शाह को देश में सबसे ज्यादा चुनौती देने का काम किसी पार्टी और नेता ने किया था तो वे थे केजरीवाल और उनकी आम आदमी पार्टी। उन्होंने भाजपा और कांग्रेस दोनों को देश की सत्ता के सबसे शक्तिशाली केन्द्र से दूर रखा। तमाम प्रयासों के बावजूद मोदी और शाह की जोड़ी केजरीवाल से पार नहीं पा सकी। लेकिन सत्ता और पॉवर को हासिल करने की लालसा और मोह से आप आदमी पाटी्र भी नहीं बच पाई और भ्रष्टाचार की विषबेल में उलझ गई। पार्टी विद डिफरेंस का चोला ओढक़र बेईमानी के मार्ग पर चलने नहीं बल्कि दौडऩे से खुद को रोक नहीं पाई। इसी कमी का फायदा भाजपा ने इस चुनाव में उठाया और 27 साल के सूखे को खत्म कर दिल्ली के दोनों सिंहासन पर कमल का परचम लहराया। ऐसे में यह होली मोदी और शाह के लिए सबसे यादगार होगी। उन्होंने अपने सियासी रंगों के गुबार में आप, कांग्रेस और बाकी के राजनीतिक दलों को इस कदर डुबाया कि कोई कमल और केसरिया रंगों को खिलने से रोक नहीं पाया। मोदी और शाह की जोड़ी ने सियासत के मूल सिद्धांतों को अपनाते हुए लंबा इंतजार किया और अंतः में जीत का स्वाद चखा। क्योंकि सियासत का उसूल है जो जितना ठंडा करके खाएगा, उसे उतना ही जायका खाने में आएगा।

दिल्लीवालों की पौबारह, डबल इंजन को सौंपा जिम्मा

इस चुनाव में भले राजनीति के कई रंग देखने को मिले। लेकिन जीत का सबसे बड़ा दांव दिल्ली की जनता ने ही चला। उन्होंने 12 साल तक मोदी और शाह की परीक्षा ली। राजनीति केा वनवास पर लंबे समय तक भेजे रखा। आखिर डबल इंजन की गति उनको भा गई और दिल्ली की गाड़ी भाजपा को सौंप दी। इस उम्मीद में कि जिन हाथों ने उन्हें संभालने और लालन-पालन का विश्वास दिया था, उन्होंने ही दोनों हाथों से छलने का काम ही किया। इन हालात में आने वाले 5 सालों तक दिल्लीवाले खुद को काफी सुरक्षित महसूस करेंगे क्योंकि उनके दोनों हाथों में लड्डू हैं और इस आने वाले होली के पांच पर्व को वे और भी रंगीन और यादगार बनाने की उम्मीद सरकार से करेंगे।

राजस्थान की राजनीति

रस्साकशी और नए समीकरण

विवेक श्रीवास्तव
वरिष्ठ पत्रकार

राजस्थान की राजनीति इस समय नए मोड़ पर खड़ी है। बजट सत्र के साथ सरकार ने अपनी प्राथमिकताएं जाहिर कर दी हैं, तो विपक्ष भी नए तेवर के साथ सरकार को घेरने में जुटा है। सियासी गलियारों में संगठन और सत्ता के बीच सामंजस्य की बातें हो रही हैं, लेकिन असल सवाल यह है कि मलाई किसे मिलेगी? इस हफ्ते की राजनीति में कई रोचक घटनाक्रम सामने आए, जो सत्ता-संगठन की रणनीति, विपक्ष की नई चालों और प्रशासनिक फेरबदल की चर्चाओं को हवा दे रहे हैं।

भजनलाल सरकार का बजट और सियासी संदेश

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सरकार ने बजट पेश कर यह साफ कर दिया कि उनका फोकस विकास, रोजगार और कल्याणकारी योजनाओं पर रहेगा। हालांकि, बजट सिर्फ आर्थिक दस्तावेज नहीं होता, बल्कि यह राजनीतिक संकेतों का भी माध्यम होता है।

रोजगार की बड़ी घोषणा, विपक्ष को चौंकाया

बजट सत्र में जब सरकार ने सवा लाख सरकारी नौकरियों और डेढ़ लाख निजी नौकरियों की घोषणा की, तो विपक्ष सकते में आ गया। डिप्टी सीएम और वित्त मंत्री ने जोर देकर कहा कि यह संख्या आगे चलकर चार लाख तक भी पहुंच सकती है। इस दौरान वित्त मंत्री की मंद मुस्कान ने भी कई संकेत दिए। कुछ लोगों का कहना है कि यह मुस्कान सरकार की आत्मविश्वास भरी प्रस्तुति का हिस्सा थी, तो कुछ इसे विपक्ष की घेराबंदी में मिली जीत का भाव मान रहे हैं।

ब्यूरोक्रेसी में हलचल

बड़े बदलाव के संकेत

बजट के बाद प्रशासनिक फेरबदल की चर्चाएं तेज हो गई हैं। सरकार अब तेज रफ्तार में फैसले लेने के मूड में है। लेकिन इस दौरान एक खास बात सामने आई—बजट पेश होने के दिन ब्यूरोक्रेसी का एक महत्वपूर्ण चेहरा सदन में नहीं दिखा। सत्ता के गलियारों में यह चर्चा गर्म रही कि आखिर यह नौकरशाह कहां हैं और क्या यह संकेत है कि सरकार जल्द ही ब्यूरोक्रेसी में बड़े बदलाव करने जा रही है?

वैसे भी बड़े बुजुर्ग कह गए है कि शिखर पर पहुँचने से ज्यादा मुश्किल उसपर बने रहना होता है!

सत्ता बनाम संगठन

किसे मिलेगी मलाई?

राज्य में संगठन और सत्ता के बीच संतुलन बनाना सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गया है। मंत्री किरोड़ीलाल मीणा के नोटिस का क्या होगा, इस पर ब्यूरोक्रेसी भी नजरें गड़ाए बैठी है। उधर, बजट पेश होने के दिन बाबा किरोड़ी मीणा प्रयागराज में कुंभ स्नान करते नजर आए, जिससे राजनीतिक गलियारों में उनके रुख को लेकर अटकलें तेज हो गईं।

▪ सरकार और संगठन के बीच इस समय सबसे बड़ा सवाल यही है कि फैसले लेने का असली हकदार कौन है? मलाई किसे मिलेगी, यह सवाल सत्ता पक्ष के भीतर भी सुगबुगाहट पैदा कर रहा है। कुछ लोगों का कहना है कि संगठन में कुछ चुनिंदा चेहरे ही काम की गारंटी लिए जा रहे हैं, जिससे बाकी लोग असंतुष्ट हैं।

नोटिस की चिंगारी और संगठन की रणनीति

राजनीति में कभी-कभी अनिर्णय भी एक रणनीति होती है। किरोड़ी मीणा को 'उग्र नेता' बताते हुए उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की मांग उठी थी, लेकिन जल्दबाजी में कोई फैसला नहीं हुआ। तीन दिन का जवाब मांगकर संगठन ने कछुआ चाल अपनाई, ताकि मामला सुलझ भी जाए और संगठन का अनुशासन भी बरकरार रहे।

▪ इसी दौरान, विधानसभा घेरने वाले लोगों को एक बड़े नेता ने नसीहत देते हुए कह दिया—"मेरा नाम मत लिखो, मैं तो संगठन का आदमी हूं।" इस बयान के कई राजनीतिक मायने निकाले जा रहे हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मामले में एक कदम आगे बढ़ते हुए नरेश मीणा के परिवार को जयपुर बुलाकर मुलाकात की और घेराव को स्थगित करा दिया। इससे सरकार की संकट प्रबंधन नीति पर भी चर्चा शुरू हो गई।

नर्मदा यात्रा : कांग्रेस की नई सियासी चाल?

राजनीति में रणनीति के तहत यात्राएं कराई जाती हैं। कांग्रेस में भी अंदरूनी खींचतान जारी है। गमछा पार्टी को किनारे करने की रणनीति पर काम चल रहा है।

दिल्ली से एक नई सियासी चाल चली गई और पश्चिमी राजस्थान के हरीश चौधरी को नर्मदा यात्रा पर भेज दिया गया। इसका सीधा मकसद था—नेता की लोकप्रियता को संभालना और नए समीकरण गढ़ना। दिलचस्प बात यह रही कि कभी उनके गुरु रहे बड़े नेता ने इस राजनीतिक यात्रा पर कोई व्यक्तिगत बधाई नहीं दी। राजनीतिक विश्लेषक इसे गुरु-शिष्य की बढ़ती दूरी के संकेत के रूप में देख रहे हैं।

विधानसभा में हंगामा और निलंबन

बजट सत्र के दौरान राजनीति का पारा तब चढ़ा, जब मंत्री अविनाश गहलोत ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को "आपकी दादी" कहकर संबोधित कर दिया। कांग्रेस इस बयान से भड़क उठी और प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा समेत कई विधायक वेल में पहुंच गए।

▪ भाजपा ने इस हंगामे को आसन के साथ दुर्व्यवहार करार दिया और निलंबन प्रस्ताव पारित करवा दिया, जिससे डोटासरा समेत छह विधायकों को सत्र से बाहर कर दिया गया। कांग्रेस ने विरोध में विधानसभा में रातभर धरना दिया और भजन गाए। यह दिलचस्प था, क्योंकि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पहले ही विपक्ष को भजन करने की सलाह दी थी।

कुर्सी का खेल

भाजपा में जिला अध्यक्ष बनना अब मंत्री बनने से भी मुश्किल हो गया है। संगठन के भीतर इसे लेकर भारी मंथन हुआ। जयपुर में सबसे अधिक लोग इस पद के लिए कतार में थे, लेकिन टिकट उन्हीं को मिला, जिनकी गोटियां सही जगह फिट हो गईं। इस बार भी पार्टी ने संगठन के भीतर ही एक अनुभवी व्यक्ति को यह जिम्मेदारी दी।

▪ सवाल यह उठ रहा है कि आखिर किसके कहने पर नियुक्तियां हुईं? कौन है वह प्रभावशाली व्यक्ति जिसने संगठन को अपनी ओर झुका लिया? सत्ता के गलियारों में यह सबसे बड़ा राजनीतिक पहेली बन गया है।

क्या होगा आगे?

राजस्थान की राजनीति अब एक नए दौर में प्रवेश कर रही है।

1. **ब्यूरोक्रेसी में बड़े बदलाव:** बजट के बाद नौकरशाही में व्यापक फेरबदल की उम्मीद है।
2. **संगठन और सत्ता के बीच समन्वय:** भाजपा के भीतर यह देखना दिलचस्प होगा कि मलाई किसे मिलेगी और किसे दरकिनार किया जाएगा।
3. **कांग्रेस की रणनीति:** विपक्ष का अगला कदम क्या होगा? क्या वे आक्रामक रणनीति अपनाएंगे या नई राजनीतिक चाल चलेंगे?
4. **विधानसभा की राजनीति:** क्या भाजपा और कांग्रेस के बीच टकराव और बढ़ेगा?

भजनलाल सरकार अब पूरी तरह टॉप गियर में है, जबकि विपक्ष भी नई रणनीति के साथ वापसी करने की कोशिश कर रहा है। आने वाले दिनों में राजस्थान की राजनीति में और दिलचस्प मोड़ आ सकते हैं।

रंग, रस और राजस्थान

अजय अस्थाना
वरिष्ठ पत्रकार

राजस्थान की होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि राज्य की संस्कृति, परम्पराओं और उत्सवप्रियता का अद्भुत संगम है। यहां होली को अलग-अलग रूपों में मनाने की परम्पराएं सदियों से चली आ रही हैं। चाहे वह फूलों की होली हो, गेर नृत्य हो, डोलची होली हो या फिर पत्थरमार होली, हर एक रूप में राजस्थान की विरासत और सामाजिक सौहार्द की झलक मिलती है। यही कारण है कि राजस्थान की होली न केवल भारतीयों बल्कि विदेशी पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित करता है।

होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और समाज की जीवंतता का प्रतीक भी है। राजस्थान में होली का उत्सव अपने अनोखे रीति-रिवाजों, पारंपरिक नृत्यों और ऐतिहासिक परम्पराओं के कारण विशिष्ट महत्व रखता है। राजस्थान की होली में लोक-जीवन की छवि स्पष्ट रूप से झलकती है, जहां गीत-संगीत, आस्था और उत्साह का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इतिहासकारों के अनुसार, होली का यह उत्सव प्राचीन काल से ही विभिन्न रूपों में मनाया जाता रहा है, जो राजस्थानी समाज की सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक विविधता को दर्शाता है।

गेर नृत्य की परम्परा... राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के त्रिपुर सुंदरी मंदिर परिसर में होली के अवसर पर गेर नृत्य की परम्परा अद्वितीय है। यह नृत्य आदिवासी लोक-परम्परा का हिस्सा है, जिसमें ढोल और चंग की थाप पर युवक-युवतियां सामूहिक रूप से नृत्य करते हैं। लोक-संस्कृति विशेषज्ञों के अनुसार, यह नृत्य न केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि यह समुदाय की एकजुटता और धार्मिक आस्था का भी प्रतीक है। यह परम्परा 29 वर्षों से मंदिर परिसर में चली आ रही है, जिसमें भाग लेने वाले लोगों को पारंपरिक मिठाइयों जैसे गुझिया, मालपुआ और लड्डू परोसे जाते हैं।

डोलची होली... डीडवाना की डोलची होली लगभग 300 साल पुरानी परम्परा है, जो समुदायों के बीच सौहार्द का प्रतीक मानी जाती है। इसमें पुरुष ऊंट की खाल से बनी डोलची नामक विशेष बर्तन से एक-दूसरे पर पानी फेंकते हैं। इतिहासकारों का मानना है कि इस परम्परा की शुरुआत दो समुदायों के बीच आपसी तनाव को समाप्त करने के लिए हुई थी, जो समय के साथ सौहार्द और भाईचारे के उत्सव में बदल गई। इस आयोजन में केवल पुरुष भाग लेते हैं, जबकि महिलाएं और बच्चे इसे दूर से देखने का आनंद लेते हैं।

फूलों की होली... राजस्थान में फूलों की होली भी विशेष रूप से प्रसिद्ध है, जिसका आयोजन जयपुर, सीकर और उदयपुर में किया जाता है। जयपुर के गोविंद देवजी मंदिर में होली के दौरान गुलाब और अन्य फूलों की वर्षा की जाती है। यहां राधा-कृष्ण की प्रेमलीला का मंचन किया जाता है, और ब्रज की तर्ज पर रंगीन पंखुड़ियों से होली खेली जाती है।इतिहासकार बताते हैं कि यह परंपरा मुगलकाल में भी लोकप्रिय थी, जब आमेर के शासकों ने इसे अपने उत्सवों में शामिल किया था। सीकर के बावड़ी गेट स्थित रघुनाथ जी मंदिर में भी फागोत्सव के तहत फूलों की होली खेली जाती है, जो लोक-संगीत और भजन-कीर्तन से सजी रहती है। उदयपुर में यह उत्सव राजघराने की परंपराओं से जुड़ा हुआ है, जिसमें महाराणा की उपस्थिति में विशेष आयोजन किए जाते हैं।

पत्थरमार होली... राजस्थान के बांसवाड़ा, बाड़मेर, बारां और जैसलमेर जैसे सरहदी इलाकों में पत्थरमार होली खेली जाती है। इसमें लोग दो समूहों में बंटकर एक-दूसरे पर पत्थर फेंकते हैं। बचाव के लिए सिर पर पगड़ी और ढाल का प्रयोग किया जाता है। जैसलमेर में इसे कंकड़मार होली के रूप में मनाया जाता है, जहां छोटे पत्थरों के साथ होली की बधाई दी जाती है। लोक-संस्कृति विशेषज्ञों का मानना है कि यह परम्परा राजस्थान के योद्धा समाज की संघर्षशील प्रवृत्ति को दर्शाती है, जो आपसी भाईचारे के रूप में बदल गई।

खूनी होली... डूंगरपुर के भीलूड़ा गांव में 200 साल से "खूनी होली" की परम्परा चली आ रही है। इसमें लोग रंगों के बजाय एक-दूसरे पर पत्थर फेंकते हैं। इस दौरान कई लोग गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ता है। हालांकि, स्थानीय लोग इसे शुभ मानते हैं और इसे खेल भावना के रूप में देखते हैं। इतिहासकारों के अनुसार, यह परम्परा भील जनजाति के शौर्य और उनकी युद्ध-कला से जुड़ी हुई है, जो समय के साथ धार्मिक उत्सव का हिस्सा बन गई।

रंगों से सराबोर... नन्दालय

डॉ. राकेश तैलंग
शिक्षाविद् (कांकरोली)

आनन्दोल्लास के विविध रंगों में डूबा राजस्थान अपने त्योहार पर्व और उत्सवों के लिये ख्यात है। होली का उत्सव इस राज्य के मारवाड़, मेवाड़, ढूंढाड़, शेखावटी, मेवात, हाड़ौती में सर्वत्र मन्दिरों और गांव शहर के बाजारों, चौपालों और हर घर हर आंगन जिस रंगबिरंगे माहौल में मनाया जाता है। वह राजस्थान को सम्पूर्ण देश में एक विशिष्ठ पहचान देता है।

राजस्थान राज्य के मेवाड़ अंचल में त्योहार पर्वों का उल्लास यहां के ग्रामीण जनजीवन से लेकर राजमहलों के गलियारों में जीवन पाता रहा है। इसीलिये होली की बात हो और मेवाड़ की चर्चा न हो ऐसा हो नहीं सकता। आज के आनन्द में डूबी होली के विविध रंगों का दूसरा नाम है मेवाड़। नाम तो यों भी कई हैं, वसंतोत्सव, होलिकोत्सव, मदनोत्सव, फागोत्सव।

आज के आनन्द की जय की धरा श्रीनाथद्वारा और कांकरोली के होलिकोत्सव पर नजर डालें, उससे पूर्व यह भी जान लें कि इन धार्मिक केन्द्रों की उत्सव आयोजन की परम्परा का स्रोत है ब्रजमण्डल, जहां बृज, बृजेश और बृजभाषा की त्रिवेणी में कृष्ण सेवा को जिस कुशलता के साथ हमारी कृषक संस्कृति-कालिन्दी कूल, कदम्ब, वन, उपवन, गो और गोपालक को त्योहारों के माध्यम से उजागर किया है, वह सीधे सीधे इस उत्सव को जो उसी मस्ती का आलम ले राजस्थान में आया। वह आज भी अपने उसी खालिस अन्दाज में यहां विशेष रूप से मेवाड़ की धरा के ब्रज और राजस्थान की समान रूप कृषक संस्कृति के दो प्रमुख केन्द्रों नाथद्वारा और कांकरोली में देखने को मिलता हैं।

बचपन से आज तक यह जाना है कि भारतीय संस्कृति में पर्वोत्सव सदैव सामूहिक आनन्द का अवसर होते हैं। वे हमारे इन धार्मिक केन्द्रों में मन्दिर और मन्दिर के बाहर के जनजीवन को उस दिन के आनन्द की एक छतरी के नीचे लाकर खड़ा कर देने के अवसर होते हैं। इन दिनों श्रीनाथजी, श्री द्वारकाधीशजी और श्री विट्ठलनाथजी अपने निज मन्दिर (जिन्हें हम ब्रजभावना से नन्दालय कहकर बुलाते हैं) से होली के रंगों से जनजीवन को सराबोर करने में रमे हुए हैं। यह हमारे इन लोकरंजन व लोकमंगलकारी

चारभुजा जी मंदिर क्षेत्र में निकाली जाने वाली शोभायात्रा।

ठाकुरजी की ब्रजमण्डल की 'निकुंज लीला' कहलाती है।

वल्लभ सम्प्रदाय के इन मन्दिरों में होली के आगमन की यह छटा माघ शुक्ल पंचमी (वसन्त पंचमी) से प्रारम्भ होकर निरन्तर चालीस दिन तक प्रतिदिन विभिन्न कीर्तनों, भोग व श्रृंगार की विविधता के साथ चलती है। ऐसा कहा जाता है श्रीकृष्ण के ये विग्रह या स्वरूप नन्दभवन में अपने सभी रूपों-यशोदा द्वारा लाड़ लड़ाये जाने वाली छवि सहित गोपीजन वल्लभ, निकुंज नायक और उत्सव नायक के रूप में विभिन्न अष्टकालीन दर्शनों में भक्तों को आनन्द में डूब जाने व समस्त कष्टों को भूल जाने की प्रेरणा देते हैं। बिना इच्छा किये भी कष्ट निवारण करना तो उनका धर्म है। भक्त चिन्ता क्यों करे? इसीलिये होली उत्सव में वे कभी माता यशोदा द्वारा श्रृंगारित होकर विभिन्न रंगों से रंगी गायों, ग्वाल बालों के बीच लीलाएं करते दिखते हैं तो कभी गोपियों के साथ निकुंज लीला में रंगों से नहाये नजर आते हैं। ब्रजमण्डल और मेवाड़ प्रान्त के लघुब्रज नाथद्वारा-कांकरोली में ये दिन केसर, चौवा, अबीर, गुलाल से रंगीन ठाकुरजी के 'वसन्त खेल' के दिन है। राग (कीर्तन) हो, भोग हो या प्रभु का श्रृंगार, सभी में वासन्ती आभा दृष्टिगत होती है। यह सेवा माघ शुक्ल 15 होरी डण्डारोपण से माघ स्नान की समाप्ति के साथ अपने चरम पर होती है।

इस अवसर पर ऋतु अनुकूल अष्टछापी कीर्तनों की राग सेवा के स्वरों का आनन्द बड़ा मोहक होता है। आमल की कुंज में प्रभु के गोपी-जन सहित निकुंज में बिराजने की लीला हो या चौरासी स्तम्भ, होलिका प्रदीपन, धूरिवन्दन व डोलोत्सव हो, चालीस दिन के उत्सवों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। वसन्त पंचमी से प्रारम्भ 'खेल' और रंग गुलाल के दर्शन इन देवालयों में रंग, रस और राग का अलौकिक वातावरण तैयार करते हैं। कीर्तनों में धमार गायन, वसन्त राग में मोहक पदगान श्रीनाथजी, श्री द्वारकाधीशजी और श्री विट्ठलनाथजी की हवेलियों में गूंजने लगते हैं। मेवाड़ की शौर्य से पूर्ण पारंपरिक संस्कृति ने जिस समाहारमूलक भावना के साथ श्रीकृष्ण की लीलाओं को स्वयं में आत्मसात कर लिया, यह आश्चर्य का विषय है।

द्वारकाधीश मंदिर में शीतला सप्तमी पर आयोजित गेर नृत्य।

प्रभु को सुवासित इत्र, जल से अभ्यंग स्नान का क्रम होरी डण्डारोपण, श्रीजी उत्सव, होली व डोल तक निरन्तर रहता है। साथ ही पुष्टिमार्गीय भोग सेवा को इस अवसर पर यहां की 'तपेलियों' (मन्दिर का रसोईघर) में बनने वाले भोग की विविधता के रूप में देखा जा सकता है। कहा जा सकता है कि फागोत्सव ऋतु परिवर्तन की प्रसन्नता के साथ इस सन्देश को देने वाला होता है कि पतझड़ के बाद वसन्त को आना ही है।

समस्त वसन्त ऋतु में 'राल' दर्शन एक अत्यधिक रोचक दर्शनीय परम्परा है। विशेष 'ज्वलनशील पर्यावरण शोधक पदार्थों' के मिश्रण को अग्नि में वेग के साथ फैंककर आबाल, वृद्ध, युवा सहित हमारे बालरूप ठाकुर श्रीकृष्ण की रोग, शोक व देहशुद्धि कर समस्त वातावरण की शुद्धि की कल्याण कामना की जाती है। कहा जाता है कि 'राल' दर्शन भगवान श्रीकृष्ण द्वारा समस्त ब्रजवासियों की दावानल से रक्षा कर अभयदान देने की लोक हितकारी लीला का एक भव्य रूप भी है।

'राल' के दर्शन।

वसन्त पंचमी से लेकर होली के दूसरे दिन ठाकुरजी को झूले में विराजित कर रंग, गुलाल, अबीर के उछाल के साथ भक्त और भगवान मन्दिर के प्रांगण में जो आनन्दोत्सव मनाते हैं, वह भक्ति परम्परा इस उत्सव को लोकरंजनकारी बना देती है। श्वेत पिछवाई पर भगवान, भक्त, गोप, गोपबालाएं, गोधन, गोवर्द्धन, ब्रज के निकुंज वन के चित्र केवल हाथों से गुलाल उछालकर उकेरने और रंग-गुलाल भरी पिचकारियों के साथ ठाकुरजी के मस्तक पर आम के 'मोड़', खजूर और सरसों की डाल से 'वसन्तघट' सजाकर होली के पर्व का आयोजन मेवाड़ के इन प्रतिनिधि मन्दिरों में देखा जा सकता है। केसर, चौवा, अबीर, गुलाल में रंगे वसन्त पंचमी से लेकर 'डोल' और 'द्वितीयापाट' की चालीस दिवसीय सेवा नाथद्वारा, कांकरोली के अतिरिक्त मेवाड़ के एक अतिप्राचीन तीर्थ श्रीचारभुजानाथ (गढ़बोर) व श्रीरूपनारायणजी (सेवंत्री) की परम्परा का उल्लेख करना आवश्यक है, जहां होली के तत्काल बाद चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चतुर्दशी पर्यन्त 'फाग' का आयोजन होता है। प्रतिदिन गुलाल, रंग में नहाये श्रीचारभुजानाथजी, श्रीरूपनारायणजी और उनके भक्त मन्दिर प्रांगण में श्रीकृष्ण लीलाओं का नाट्य करते हैं, भजन गाते हैं और 'डांडिया नृत्य' करते हैं। यही अवसर होता है जब चैत्र एकादशी के दिन पीपावंश के समाजजन द्वारा मन्दिर पर नयी ध्वजा का आरोहण होता है।

भक्ति और शक्ति की धरा मेवाड़ में होली के उत्सव के आनन्द को सोत्साह सार्वजनिक जीवन के साथ जोड़ने के बहुविध तरीके खोजे गये हैं यहां के उत्सवप्रिय जन-जन ने। इनमें से गेर नृत्य एक माध्यम है। चाहे बड़ा भाणुजा का फूलडोल हो, मेनार की शौर्य प्रदर्शन वाला नृत्य अथवा शीतला सप्तमी पूजन के बाद घर-घर की पारिवारिक धुलण्डी और शाम कांकरोली द्वारकाधीश मन्दिर के गोवर्द्धन चौक प्रांगण में होरी के हुड़दंगियों की आसोटिया की गेर। लगता है तब ये आनन्दोत्सव जन-जन को संवेदना के एक सूत्र में बांध देते हैं। आइये, इस वर्ष की होली धुरण्डी को हम सब मेवाड़ की संवेदना के रंगीन समुन्दर में डूब डूब कर मनाते हैं।

हंसाते-गुदगुदाते 'स्वांग'

राजीव हर्ष
वरिष्ठ पत्रकार

फोटोः अजीज भुट्टा

होली पर आप अगर बीकानेर आते हैं तो आपको ऐसे कुछ अद्भुत नजारे और ऐसे संवाद देखने और सुनने को मिल सकते हैं। आप महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, डोनाल्ड ट्रम्प, पुतीन, नरेंद्र मोदी, सोनिया गांधी , राहुल गांधी सरीखे नेताओं से मिल सकते हैं, उनसे संवाद कर सकते हैं। बॉलीवुड के अभिनेता भी मिल सकते हैं।

हाथ में लाठी लिए बापू कचौरी समोसों की दुकान के आगे खड़े डोनाल्ड ट्रम्प का इंतजार कर रहे हैं। काफी इंतजार के बाद ट्रम्प को आता देख बापू झल्लाते हुए कहते हैं "कठे थो, इत्ती देर लगाय दी, हुं अठे उडीकतो उडीकतो तत्तो हुयग्यो, ऊपर सूं ए टींगरिया तंग करे, भूख लाग रई है, दिनूगे सूं कईं खायो कोयनी,कचोड़ी री दुकॉन आगे खड़ो हूं, थोने ध्यॉन राखणें चईजे कि खाली पेट अठे उडीकणे कतो दोरो है। अर पुतीन कठे है। हाल आयो कोयनी, म्हे सूं अबे उडीकीजे कोयनी, फेर बो कैवे लो के एकेला एकेला खा ग्या"

वहीं ट्रम्प बापू को पगे लागणा कर झुंझलाते हुए कहते हैं "म्हाराज खटाव राखो, बो लारले चौक में खड़ो है, जेलेंस्की भी बी रे सागे इ है। कई म्हाराज पाटे माथे बेठा है बों झाल लियो, म्हे तो कोंकर ई कर आयग्यो पण बो झल ग्यो, आय जासी थोड़ी देर में।"

बापू बोले " सोनिया गांधी, नरेंद्र मोदी अर बाकी लोग कठे है। बे कठे फंस ग्या"।

ट्रम्प बोले "आय रया है। बस पोंचण वाळा ही है।"

होली पर आप अगर बीकानेर आते हैं तो आपको ऐसे कुछ अद्भुत नजारे और ऐसे संवाद देखने और सुनने को मिल सकते हैं। आप महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, डोनाल्ड ट्रम्प, पुतीन, नरेंद्र मोदी, सोनिया गांधी, राहुल गांधी सरीखे नेताओं से मिल सकते हैं, उनसे संवाद कर सकते हैं। बॉलीवुड के अभिनेता भी मिल सकते हैं। बापू, ट्रम्प, पुतीन, नेता, अभिनेता ये सब स्वांग है जो होली के दिनों में बीकानेर में नजर आते हैं।

और भी रोचक और रोमांचक नजारा आपको वहां देखने को मिलेगा जहां ये हस्तियां फुटबाल खेलती हैं। इनके फुटबॉल के इस खेल को बीकानेर वाले फागणिया फुटबॉल कहते हैं। इस खेल में केवल नेता और अभिनेता ही नहीं देवी, देवता,राक्षस, रीछ भालू भी अपने अपने अंदाज में खेलते नजर आते हैं। यहां न कोई टीम है, न कोई गोल दागना है, न किसी को हराना है न किसी पर जीत हासिल करना है। यहां हर खिलाड़ी विजेता है।

पिछले कुछ सालों से आयोजित हो रहे इस फागणिया फुटबाल के खिलाड़ी ही नहीं दर्शक भी अनूठे ही होते हैं। खास बीकानेरी अंदाज में हूटिंग कर वे इस खेल को और भी मस्ती भरा बना देते हैं।

दर असल स्वांग बीकानेर के लोगों की विनोद प्रियता को दर्शाते हैं। इन स्वांग की साजसज्जा, वस्त्र, आभूषण,भाव भंगिमा इन्हें वास्तविकता के इतना करीब ले जाते हैं कि इनके स्वांग होने पर ही भ्रम होने लगता है।

कहीं किसी चौराहे पर चौराहे पर खडा एक भोला–भाला ग्रामीण, शहर के रास्ते नहीं जानता, वह यह निर्णय नहीं पा रहा है कि किस तरफ जाया जाए। वह बोल भी नहीं पाता केवल इशारे करता है। बच्चों का झुंड उसके पीछे लगा है। बच्चे इस भोले भाले ग्रामीण को चिढा कर मजे ले रहे हैं। बुजुर्ग उसे अपने पास बुलाते हैं, उसकी परेशानी पूछते हैं तो वह इशारे से कुछ समझाने का प्रयास करता है। इशारों इशारों में बताता है कि उसकी पत्नी कहीं खो गई है, इशारों से ही वह अपनी पत्नी का नखशिख वर्णन करता है।

लोग उससे तरह तरह के सवाल करते है वह इशारों से, भाव भंगिमा से जवाब देता है। सवाल जवाब का यह सिलसिला बडा रोचक और मनोरंजक होता है। स्वांग को घेर कर खडी भीड इसका आनंद उठाती है।

कहीं कोई साधु, कोई नेता तो कोई राक्षस तो कोई रीछ, भालू का रूप धरे नजर आता है। कहीं कोई मोहिनी बन भस्मासुर को अपनी ओर आकर्षित करता है।

कहीं डफ बजाते हुए फागुन के गीत गाते हुए युवकों की टोली के साथ नृत्य करती महिलाएं नजर आती है। दर असल ये महिलाएं नहीं पुरुष ही होते है महिलाओं के वेश में।

बीकानेर में होली पर दो तरह के स्वांग नजर आते हैं । एक स्वांग वे, जो यहां विभिन्न मोहल्लों में खेली जाने वाली ऐतिहासिक कथानकों पर आधारित रम्मत (लोकनाट्य) में रानी, दासी आदि की भूमिका निभा रहे होते हैं। दूसरे तरह के स्वांग वे होते हैं जो स्वतंत्र रूप से अकेले या मित्रों की टोली के संग धूमते हुए सडकों ओर चौराहों पर नजर आते हैं।

रम्मत और नौटंकी जैसे लोकनाट्य में स्वांग बनने की परम्परा तो हर कहीं है। मगर अकेले ही स्वांग बनने की परम्परा कहीं कहीं ही मिलती है। ये स्वतंत्र स्वांग बीकानेर की होली को एक अलग पहचान देते हैं। ये स्वांग अपनी मर्जी के मालिक होते हैं। मनचाहा रूप धारण कर लोगों को हंसाते गुदगुदाते हैं। होलाष्टक लगने के बाद से ये शहर की सड़कों पर नजर आने लगते हैं।

कुछ समय पहले तक इन स्वांग की बड़ी धूम हुआ करती थी जो बीकानेरी होली को एक अलग अंदाज प्रदान करती थी। अब स्वांग पहले से कुछ कम नजर आने लगे हैं।

देख बहारें होली की

जब फागुन रंग झमकते हों तब देख बहारें होली की
और दफ़ के शोर खड़कते हों तब देख बहारें होली की

परियों के रंग दमकते हों तब देख बहारें होली की
ख़ुम, शीशे, जाम, झलकते हों तब देख बहारें होली की

महबूब नशे में छकते हों तब देख बहारें होली की
हो नाच रंगीली परियों का बैठे हों गुल-रू रंग-भरे

कुछ भीगी तानें होली की कुछ नाज़-ओ-अदा के ढंग-भरे
दिल भूले देख बहारों को और कानों में आहंग भरे

कुछ तबले खड़कें रंग-भरे कुछ ऐश के दम मुँह-चंग भरे
कुछ घुंघरू ताल छनकते हों तब देख बहारें होली की

सामान जहाँ तक होता है उस इशरत के मतलूबों का
वो सब सामान मुहय्या हो और बाग़ खिला हो ख़्वाबों का

हर आन शराबें ढलती हों और ठठ हो रंग के डूबों का
इस ऐश मज़े के आलम में एक ग़ोल खड़ा महबूबों का

कपड़ों पर रंग छिड़कते हों तब देख बहारें होली की
गुलज़ार खिले हों परियों के और मज्लिस की तय्यारी हो

कपड़ों पर रंग के छींटों से ख़ुश-रंग अजब गुल-कारी हो
मुँह लाल, गुलाबी आँखें हों, और हाथों में पिचकारी हो

उस रंग-भरी पिचकारी को अंगिया पर तक कर मारी हो
सीनों से रंग ढलकते हों तब देख बहारें होली की

नज़ीर अकबराबादी

फार्म IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विषयों से संबंधित विवरणों के बारे में घोषणा

1. **प्रकाशन स्थल** :	जोधपुर
2. **प्रकाशन अवधि** :	मासिक
3. **मुद्रक का नाम** :	पूनम अस्थाना
क्या भारतीय नागरिक है:	हाँ
पता :	डी 435, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर
4. **प्रकाशक का नाम** :	पूनम अस्थाना
क्या भारतीय नागरिक है :	हाँ
पता :	डी 435, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर
5. **सम्पादक का नाम** :	अजय अस्थाना
क्या भारतीय नागरिक है :	हाँ
पता :	डी 435, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचारपत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी का एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार या भागीदार हो।	मे. मारवाड़ मीडिया प्लस

मैं पूनम अस्थाना एतद् द्वारा घोषित करती हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण में सत्य है।

हस्ताक्षर
पूनम अस्थाना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

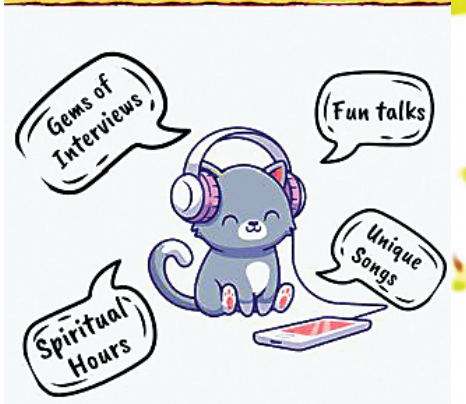

सब जग होरी या ब्रज होरा

कुदरत मुस्करा रही है। पौधों पर नई कोपलें निकली हैं। खेत-खलिहान और घर-आंगन में कई रंगों के फूल खिले हैं। पीली सरसों मन मोह रही है। नये सृजन को कायनात तैयार है। जैसे कुदरत अपनी केचुली बदल रही है। वासंती बयार चारों ओर अपनी मोहक अदाएं दिखा रही है। ऐसे में जंगल में मोर ही नहीं, मन-मयूर का भी नाच उठना स्वभाविक है। अपने आसपास वसंत को महकते देखिए। महसूस कीजिए कि कुदरत वसंत के रंग में रंगी है। सारी कायनात मुस्कराकर निश्छल प्रेम को बयां कर रही है। उसी प्रेम को जो सदियों से है। प्रेम का एक अपना अनुशासन है। प्रेम की अपनी मर्यादा है। सदियों से भगवान राधा-कृष्ण के इसी अटूट प्रेम और समर्पण की असंख्य कहानियां हमारे विपुल साहित्य और इतिहास के पन्नों पर दर्ज हैं।

हरीश मलिक वरिष्ठ पत्रकार

मुरली मनोहर कान्हा और श्रीजी के इसी अद्भुत और अलौकिक प्रेम का एक रंग है ब्रज की होली। उनके किशोरवय रूप के हास-परिहास और अल्हड़ मस्ती का सम्मान है ब्रज की होली। गोपियों और ग्वालों की पिचकारी के बीच लठमार और छड़ीमार का नाम है ब्रज की होली। होली के रंगे में डूबे हुरियार के जोश और हुरियारिनों के प्रेमल उल्लास का नाम है ब्रज की होली। टेसू के फूलों से बने प्राकृतिक रंगों से रंगे खिलखिलाते चेहरों का नाम है ब्रज की होली... और बसंत पंचमी से लेकर फाल्गुन पूर्णिमा तक ब्रज के मंदिरों और कृष्ण लीलास्थलों पर उड़ते अबीर-गुलाल के बेशुमार बादलों का नाम भी है ब्रज की होली।

इंद्रधनुषी रंगों का पर्व होली हिंदुओं का प्रमुख त्योहार है। पूरे भारतवर्ष में यह रंगोत्सव बेहद धूमधाम के साथ मनाया जाता है। लेकिन कान्हा की लीलास्थली ब्रज में इसका अलग ही जोश और उत्साह देखने को मिलता है। वसंत पंचमी से ब्रज में होली की शुरुआत करने की परम्परा एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व रखती है। इसे लेकर कई धार्मिक आख्यान और लोककथाएं भी प्रचलित हैं, जो इस खास दिन से होली के उत्सव की शुरुआत को जोड़ती हैं। भगवान श्री कृष्ण की जन्मस्थली मथुरा और ब्रज में यह रंगोत्सव 40 दिनों तक मनाया जाता है। इसकी शुरुआत वसंत ऋतु के प्रवेश करते ही हो जाती है। वसंत पंचमी पर ब्रज के कई मंदिरों में और होलिका दहन स्थलों पर होली का ढांडा (लकड़ी का टुकड़े, जिसके चारों ओर जलावन लकड़ी, कंडे, उपले आदि लगाए जाते हैं) गाड़े जाने के साथ ही इस रंगोत्सव की शुरुआत हो जाती है।

वसंत का चरमोत्कर्ष होली मन को आनंदित करने वाला त्योहार है। ब्रज में होली जितनी तरह से मनाई जाती है, उतने प्रकार से विश्व में कहीं नहीं मनाई जाती। यहां रंगों की होली, गुलाल की होली, लठमार होली, लड्डूमार होली, फूलों की होली, गोकुल की छड़ीमार होली, होलिका दहन, कीचड़ की होली, धुलेंडी, अबीर की होली, दही और हल्दी की होली मनाई जाती है।

इसके साथ ही होली पर मुखराई का चरकुला नृत्य, भगवान बलदाऊ एवं रेवती मैया के श्रीविग्रह के समक्ष बलदेव का प्रसिद्ध हुरंगा, मंदिरों में फाग और समाज गायन, फालैन में होली से पंडा का गुजरना सहित दर्जनों तरीकों से होली के उल्लास को जीवंत किया जाता है। ब्रज में खासतौर से लोग मथुरा, वृंदावन, बरसाना, नंदगांव, गोकुल, दाऊजी की होली देखने आते हैं। बरसाना की लड्डू होली जग प्रसिद्ध है, जो लठमार होली से एक दिन पहले मनाई जाती है। इस दिन टनों लड्डू राधारानी मंदिर के परिसर में लुटाए जाते हैं।

धार्मिक परम्परा के अनुसार वसंत पंचमी के दिन मथुरा के द्वारकाधीश मंदिर, वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर, बरसाना में राधारानी मंदिर समेत कई मंदिरों में सुबह की आरती के बाद सबसे पहले भगवान को गुलाल का टीका लगाकर होली के इस पर्व का शुभारम्भ करते हैं। इस दिन मंदिर में श्रद्धालुओं पर भी जमकर गुलाल उड़ाया जाता है। वसंत पंचमी से भगवान कृष्ण की होली के खेल की शुरुआत मानी जाती है और इसे श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इसी दिन भगवान श्री कृष्ण ने राधा और गोपियों के साथ रंग खेलते हुए प्रेम और उल्लास का संदेश दिया था। ऐसे में ब्रजवासियों के लिए वसंत पंचमी से ही होली का पर्व शुरू हो जाता है। यह होली भगवान कृष्ण और राधा के प्रेम, आनंद और रंगों के खेल का प्रतीक मानी जाती है। इसके बाद रंगपंचमी वाले दिन इस रंगोत्सव का समापन होता है।

होली के जितने रंग हैं, ब्रज में उससे ज्यादा उसे मनाने के निराले ढंग हैं। ब्रज की होली एक खास विशेषता यह भी है कि यहां होली खेली-मनाई ही नहीं जाती, बल्कि गाई भी जाती है। होली का वर्णन रसिक संतों और अष्ट छाप के कवियों ने भी अपनी वाणी में किया है। ढांडा गढ़ने के साथ ही मंदिरों में रोज सुबह-शाम होली के गीतों का गायन भी आरंभ हो जाता है। इसके कई मनभावन होली गीत हैं, जो इन दिनों ब्रजवासियों की जुबां पर रहते हैं। इनमें 'आज बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया, कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ कमोरी रे रसिया'। 'होरी खेलन आयौ श्याम, आज याहि रंग में बोरौ री, कोरे-कोरे कलश मंगाओ, रंग केसर घोरौ री'। 'नैनन में पिचकारी दई, मोय गारी दई, होरी खेली न जाय, होरी खेली न जाय' आदि प्रसिद्ध हैं। ऐसे ही कई गीत होली को और खास बनाते हैं। ये गीत ब्रज में ही नहीं, बल्कि कई और प्रदेशों की होली के अवसर पर सुनने को मिलते हैं। ब्रज भाषा साहित्य में होली संबंधी पदावलियों का उल्लेख प्रचुरता से मिलता है। पिछले लगभग 500 वर्षों में विभिन्न वैष्णव परम्परा से जुड़े रसिक संतों, कवियों ने ब्रज की होली को विविधताओं के साथ लिखा और गाया है।

आइए, ब्रज की कुछ प्रसिद्ध होली के बारे में भी जान लेते हैं...

बरसाना की लठमार होली

राधा रानी की जन्मस्थली बरसाना की होली की अनोखी छटा दूर- दूर तक फैली है। बरसाना में होली का मजा कुछ और ही है। हर किसी के मन में बरसाना में होली मनाने की इच्छा रहती है। लठमार होली से पहले यहां लड्डूमार होली होती है। यह होली श्री राधा रानी के श्रीजी मंदिर में खेली जाती है। बरसाने की लठमार होली भगवान कृष्ण के काल में उनके द्वारा की जाने वाली लीलाओं का एक हिस्सा है। जिस परम्परा को आज भी यहां के 'गोप-गोपियां' जीवंत कर रहे हैं। नंदगांव से कान्हा अपने गोप-ग्वालों के साथ होली खेलने बरसाना जाया करते थे। इस दिन नंदगांव से आए ग्वालों पर बरसाना की ग्वालिनें लठ बरसाकर होली खेलती हैं। उनके हास-परिहास के बीच उन्हें सबक सिखाने के लिए राधा और गोपियां उन पर प्रेमल हृदय से लठ बरसाती थीं। इससे बचने के लिए वह ढालों का उपयोग किया करते थे, जो धीरे-धीरे होली की परंपरा बन गई। आज बरसाना की लठमार होली देश ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी प्रसिद्ध है।

बलदेव का हुरंगा

बलदेव के दाऊजी मंदिर में कृष्ण और बलदाऊ के स्वरूप में मौजूद गोप-ग्वाल (बलदेव कस्बे के अहिवासी ब्राह्मण समाज के पंडे) राधारानी की सखियों संग होली खेलते हैं। यह सिलसिला बलदाऊ से होली खेलने की अनुमति लेने के साथ शुरू होता है। देवर के रूप में आए पुरुषों का दल एक तरफ, तो भाभी के स्वरूप में मौजूद समाज की महिलाओं का दल दूसरी ओर होता है। दोनों ओर से पहले होली की तान और गीतों के माध्यम से एक-दूसरे पर छींटाकशी होती है। इसके बाद महिलाओं पर रंग बरसता है। जवाब में महिलाएं पुरुषों के कपड़े फाड़कर उनका पोतना (कोड़े जैसा गीला कपड़ा) बनाती हैं और उन पर बरसाती हैं। होली के रंगे में डूबे हुरियार जोश और उल्लास का पर्व मनाते हैं।

छड़ी मार होली... गोकुल में लाठी की जगह छड़ी से होली खेली जाती है। यहां छड़ीमार होली के दिन गोपियों के हाथ में लट्ठ नहीं, बल्कि छड़ी होती है और ये होली खेलने आए कान्हा के स्वरूपों पर छड़ी बरसाती हैं। इस दिन कान्हा की पालकी और पीछे सजी-धजी गोपियां हाथों में छड़ी लेकर चलती हैं। गोकुल में छड़ीमार होली का उत्सव सदियों से चला आ रहा है। ब्रज में होली खेलने के दौरान गालियां भी सुनाई जाती हैं। ब्रज गोपिका उलाहने के रूप में प्रेम पगी गाली देती हैं।

होलिका दहन

पूरे ब्रज में होलिका दहन को विधि-विधान से मनाया जाता है। ब्रज क्षेत्र में हर गांव, कस्बे और शहर के चौराहों पर लकड़ियों, घास, फूस, गाय के गोबर से बने उपलों, गूलरी आदि की होली रखी जाती है। सुबह घरों से महिलाएं नए-नए कपड़े पहनकर होली पूजन करने जाती हैं। उसके बाद शाम को शुभ मुहूर्त में होलिका दहन किया जाता है। इसमें ब्रज के फालैन में बड़ा मेला लगता है. यहां रात को होलिका दहन के बाद पहले से पूजा-अर्चना पर बैठा पंडा होली की धधकती आग के बीचों-बीच से नंगे पांव निकलता है। देश-विदेश से लोग फालैन के इस प्रह्लाद को देखने के लिए जाते हैं।

श्री द्वारकाधीश मंदिर होली

होलिका दहन के अगले दिन धुलेंडी होती है। इस दिन पूरे ब्रज में सभी ब्रजवासी एक दूसरे को रंग और गुलाल लगाते हैं व गले मिलते हैं। सभी मंदिरों में होली होती है। मथुरा के द्वारकाधीश मंदिर में भी इस दिन होली का विशेष आयोजन होता है। इस दिन वृंदावन में परम्परा है कि दोपहर 2 बजे तक ही होली होती है। उसके बाद लोग नए-नए कपड़े पहनकर मंदिर जाते हैं।

यह सनातन सत्य है कि होली की बात हो और ब्रज का नाम न आए, ये तो हो नहीं सकता। ब्रज की होली के बारे में प्रसिद्ध है कि जहां देश भर में होली अधिकतम 3-5 दिन तक मनाई जाती है। वहीं ब्रज क्षेत्र में इस त्योहार के अबीर-गुलाल और रंग 40 दिन तक उड़ते हैं। इसीलिए यहां की होली पर एक कहावत सटीक बैठती है- सब जग होरी, या ब्रज होरा!

छेड़छाड़ के देवता इलोजी

बलवंत राज मेहता
वरिष्ठ पत्रकार

राजस्थान की लोक संस्कृति रंग-बिरंगे त्योहारों और अनोखी मान्यताओं से समृद्ध है। यहां के प्रत्येक गांव में एक न एक ग्राम देवता होते हैं, जिनकी पूजा विशेष रूप से उस गांव की परंपराओं और विश्वासों से जुड़ी होती है। इन्हीं लोकदेवताओं में से एक हैं इलोजी, जिन्हें अविवाहितों के देवता के रूप में पूजा जाता है। इलोजी की पूजा खासकर होली के अवसर पर होती है, जो मस्ती और उल्लास का पर्व माना जाता है।

बाड़मेर में स्थापित इलोजी की प्रतिमा।

इलोजी का स्वरूप और पूजा की मान्यता

लोकसंस्कृति के अनुसार, इलोजी को "छेड़छाड़ का देवता" भी कहा जाता है। इनकी पूजा में हास-परिहास, हंसी-मजाक और छेड़छाड़ का तत्व प्रमुख होता है। होली के दौरान, अविवाहित युवक-युवतियां इनकी पूजा करते हैं, क्योंकि यह समय प्रेम, उमंग और उल्लास का होता है। इलोजी की पूजा से जुड़ी मान्यता पौरुष, प्रेम और संतान प्राप्ति से संबंधित मानी जाती है, और इसे विशेष रूप से शुभ माना जाता है।

होली के अवसर पर इलोजी की पूजा

होली के दौरान इलोजी की पूजा का एक खास रूप देखने को मिलता है। राजस्थान के पश्चिमी हिस्सों, जैसे बाड़मेर, जालोर, बालोतरा, जैसलमेर और जोधपुर में इलोजी की पूजा बड़े धूमधाम से की जाती है। यहां के लोग होली के दिन इलोजी की प्रतिमा को छूते हैं, फाग गीत गाते हैं, हंसी-मजाक करते हैं और धूमधाम से उत्सव मनाते हैं।

एक दिलचस्प परंपरा के तहत, नवविवाहित महिलाएं इलोजी के दर्शन करने जाती हैं और उन्हें गले लगाने की रस्म निभाती हैं, क्योंकि मान्यता है कि नवविवाहित पर पहला अधिकार इलोजी का होता है। इस रस्म में हंसी-ठिठोली का अनूठा रंग देखने को मिलता है।

बाड़मेर और जालोर में होली के अवसर पर इलोजी की बारात निकाली जाती है, जिसमें लोग रंग-बिरंगे परिधानों में नृत्य करते हैं और उत्सव का आनंद लेते हैं। यह आयोजन इलाके की खास पहचान बन चुका है, जहां हर कोई उल्लास के साथ सम्मिलित होता है।

पूजा का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

इलोजी की पूजा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक उल्लास और परंपराओं से भी गहराई से जुड़ी हुई है। इस पूजा में प्रेम, समर्पण और हास्य का भाव छिपा होता है, जो राजस्थान की लोक संस्कृति का आधार है। होली के अवसर पर इलोजी से संबंधित समकालीन लोकसाहित्य भी रचा जाता है। इस साहित्य में व्यंग्य, हास्य और समाज की समकालीन घटनाओं को जोड़ा जाता है। यद्यपि इसमें अश्लीलता का तत्व भी होता है, फिर भी यह समाज के मौजूदा मुद्दों और लोकजीवन की सच्चाइयों को दर्शाने का माध्यम बन जाता है।

लोकसंस्कृति में इलोजी की विशेषता

राजस्थान में होली के अवसर पर इलोजी की पूजा रंगों और मस्ती से भरी होती है। यह पूजा हमें यह सिखाती है कि प्रेम, समर्पण और हास्य लोकमानस में देवत्व का रूप ले सकते हैं। यही कारण है कि इलोजी की पूजा राजस्थान की लोक संस्कृति का एक जीवंत हिस्सा बन चुकी है। इस होली, जब रंगों की मस्ती और उल्लास की बयार चलेगी, इलोजी के दर्शन और पूजा का माहौल इसे और भी खास बना देगा। इलोजी की पूजा हमें याद दिलाती है कि प्रेम और उत्सव की कोई सीमा नहीं होती, और हमें अपने लोकदेवताओं का आदर करते हुए अपनी परंपराओं को सहेजना चाहिए।

विदेशी विद्वानों की नजर में इलोजी

राजस्थान की समृद्ध लोकसंस्कृति और अनोखी परंपराएँ सदियों से न केवल भारतीय बल्कि विदेशी विद्वानों, पर्यटकों और शोधकर्ताओं के लिए भी आकर्षण का केंद्र रही हैं। लोकदेवता, त्यौहार और रीति-रिवाजों ने कई समाजशास्त्रियों और संस्कृति विशेषज्ञों को गहराई से अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया है। इन्हीं में से एक प्रमुख लोकदेवता हैं इलोजी, जिनकी पूजा और उनसे जुड़ी मान्यताएँ शोधकर्ताओं के लिए रहस्यमय और रोचक रही हैं।

- अमेरिकी समाजशास्त्री एन. माइल्स ने भारतीय ग्राम-देवताओं पर शोध करते हुए पाया कि इलोजी केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने का प्रतीक भी हैं। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि पश्चिमी राजस्थान में इलोजी की पूजा मुख्य रूप से अविवाहितों और निःसंतान महिलाओं द्वारा की जाती है, जो समाज में विवाह और संतान प्राप्ति से जुड़ी गहरी मान्यताओं को दर्शाता है। उनके अध्ययन के अनुसार, भारतीय ग्रामीण समाज में देवी-देवताओं को सामाजिक समस्याओं के समाधान के रूप में देखा जाता है, और इलोजी भी इसी परंपरा का हिस्सा हैं।
- प्रसिद्ध अमेरिकी इंडोलॉजिस्ट वेन्डी डोनिगर, जिन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं और धर्मशास्त्रों का गहन अध्ययन किया है, ने अपने शोध में उल्लेख किया कि इलोजी का स्वरूप केवल विवाह और संतान प्राप्ति तक सीमित नहीं, बल्कि यह सामाजिक उत्सवों और उल्लास का भी प्रतीक है। उनके अनुसार, राजस्थान में होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा यौन प्रतीकों से जुड़े फाग गीत गाना और महिलाओं द्वारा इलोजी के दर्शन करना इस लोकदेवता की महत्ता को दर्शाता है।
- ब्रिटिश नृविज्ञानी (Enthnographer) विलियम क्रुक ने अपनी पुस्तक Popular Religion and Folklore of Northern India में राजस्थान और उत्तर भारत के ग्राम-देवताओं, भूत-प्रेत मान्यताओं और लोकआस्थाओं का अध्ययन किया। उन्होंने इलोजी जैसे देवताओं को "मांगलिक और पारिवारिक समस्याओं को हल करने वाले लोकदेवता" की श्रेणी में रखा।
- वहीं, अमेरिकी समाजशास्त्री पॉल ब्रास ने उत्तर और पश्चिमी भारत में सामाजिक संरचनाओं पर शोध करते हुए पाया कि इलोजी की पूजा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि यह लोकजीवन के उल्लास, हास-परिहास और सामाजिक मेलजोल को दर्शाने वाली अनूठी परंपरा भी है।
- विदेशी विद्वानों के ये अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि इलोजी केवल एक लोकदेवता नहीं, बल्कि राजस्थान के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। इनकी पूजा धार्मिक आस्था से जुड़ी होने के साथ-साथ समाज की परंपराओं, संबंधों और सामुदायिक जीवन की जटिलताओं को भी उजागर करती है।

लोककथा: इलोजी की अनोखी बारात

कहते हैं कि इलोजी एक समृद्ध परिवार में जन्मे थे, लेकिन बचपन से ही मस्तमौला और हंसमुख स्वभाव के थे। वे समाज की रीति-नीतियों से परे रहकर जीवन को हंसी-ठिठोली के साथ जीते थे। जब उनके विवाह की चर्चा चली, तो गांव में खुशी की लहर दौड़ गई। इलोजी की बारात अनोखी थी—न कोई शाही ठाट-बाट, न कोई गंभीरता, बस नाचते-गाते बाराती, मजाक, हास्य-व्यंग्य और उल्लास का माहौल। लोग मानते हैं कि इस अनोखी बारात में इंसानों के साथ-साथ देवी-देवता और भूत-प्रेत भी शामिल हो गए।

जब बारात दुल्हन के गांव पहुंची, तो अजीब घटनाएं होने लगीं। किसी के जूते गायब हो गए, कोई अपनी पगड़ी भूल गया, और कुछ बाराती रास्ता भटक गए। यह देखकर दुल्हन के परिवार को संदेह हुआ कि यह कोई साधारण बारात नहीं है। विवाह की घड़ी आई, तो दुल्हन के परिजनों ने शर्त रख दी कि इलोजी को अपनी मस्तमौला और चंचल प्रवृत्ति छोड़नी होगी। यह शर्त इलोजी के लिए अस्वीकार्य थी। उन्होंने हंसते हुए कहा, "यदि मैं अपनी मौज-मस्ती छोड़ दूं, तो इलोजी कौन रहेगा?" और विवाह से इनकार कर दिया। तब से इलोजी को विवाह, आनंद और हंसी-ठिठोली के लोकदेवता के रूप में पूजा जाने लगा।

जालोर में हर साल होली से पहले लोक देवता इलोजी की अनोखी बारात परंपरागत रूप से निकाली जाती है, जिसमें शहर के सभी लोग बाराती बनते हैं। इलोजी की प्रतिमा को दूल्हे की तरह तैयार किया जाता है।

इलोजी से जुड़ी रोचक कहावतें

"इलोजी री पूजा कर, पुत्र रत्न रो सुख धर!"

भावार्थः इलोजी की पूजा करने से संतान सुख की प्राप्ति होती है, यही विश्वास इस कहावत में झलकता है।

"इलोजी अर पनिहारी, बीज बिना केसरिया न होय!"

भावार्थः जैसे बिना बीज के फसल नहीं होती, वैसे ही इलोजी की कृपा के बिना संतान सुख संभव नहीं।

"इलोजी नै बिनती, ब्याव में ना होवे चिंती!"

भावार्थः शादी में कोई बाधा न आए, इसके लिए इलोजी की पूजा करना शुभ माना जाता है।

"इलोजी गढ़ जो, म्हारी जोड़ी तगड़ी हो!"

भावार्थः यह कहावत शादीशुदा जोड़ों के प्रेम और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना से जुड़ी है।

"इलोजी अर घूंघट, हंसी-ठिठोली रो संगत!"

भावार्थः इलोजी की पूजा सिर्फ आस्था का विषय नहीं, बल्कि इसमें हंसी-ठिठोली और उल्लास का भी विशेष स्थान है।

राजस्थान की लोकसंस्कृति में कहावतें केवल वाक्य नहीं, बल्कि समाज की परंपराओं और आस्थाओं का प्रतीक हैं। इलोजी से जुड़ी कहावतें विवाह, संतान सुख और हास्य-व्यंग्य से जुड़ी मान्यताओं को दर्शाती हैं। इन कहावतों में आस्था के साथ-साथ समाज की जीवंतता और उत्सवप्रियता भी झलकती है।
"इलोजी की पूजा केवल आस्था नहीं, बल्कि समाज के उल्लास, प्रेम और परंपराओं का संगम है।"

होली हो तो राज साहब जैसी

सुधांशु टाक ✍ लेखक, समीक्षक

1950 के दशक की शुरुआत। हिंदी सिनेमा के शोमैन राज कपूर की फिल्म "आवारा" सुपरहिट साबित हो चुकी थी। देश ही नहीं विदेशों तक में इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर सफलता की नई गाथा लिख डाली थी। उनके द्वारा स्थापित आर के स्टूडियो की चर्चा देश विदेश में थी। मार्च महीने की शुरुआत थी। "आवारा" के बम्पर हिट होने से राज कपूर बेहद खुश थे। उन्होंने अपने पिता पृथ्वीराज कपूर की अनुमति से आर के स्टूडियो में सामूहिक होली मनाना शुरू करने की अनुमति मांगी। पृथ्वीराज कपूर भी अपने होनहार बेटे के इस कदम से बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा जश्न भव्य होना चाहिए। अब राज कपूर के पास आर के स्टूडियो के लम्बे चौड़े परिसर में न तो जगह की कोई कमी थी। न ही उनके बड़े दिल में। वह होली के इस दिन मेहमान नवाजी पर दिल खोल कर खर्च करते थे। कितने ही लोगों को होली के दिन अपने यहां दावत देने के निमंत्रण देने का काम वह कई दिन पहले ही शुरू कर देते थे।

सबसे बड़ी बात यह थी कि सभी धर्म के लोग इस होली में आते थे। फिर कुछ ऐसा बन गया था कि किसी को राज कपूर का इसके लिए बुलावा भी नहीं आता था तब भी वह वहां निसंकोच चला आता था। असल में कई बार तो उस होली पर वह अगले बरस की होली का निमंत्रण भी तभी लोगों को दे देते थे। राज कपूर ने यूं तो तभी नए नए शिखर छूना शुरू किया था लेकिन वह तब भी जमीन से जुड़े व्यक्ति थे। अपने यहां आए हर मेहमान के सम्मान और उनके खाने-पीने का राज कपूर खुद पूरा ख्याल रखते थे।

राज कपूर बेहद सफल और लोकप्रिय अभिनेता, निर्माता, निर्देशक होने के साथ सर्वाधिक प्रतिष्ठित फिल्म घराने के रूप में स्थापित हो गए थे। इसलिए हर कोई उनसे मिलना-जुलना चाहता था। साथ ही उनके यहां होली के दिन पूरी फिल्म इंडस्ट्री उमड़ने से कपूर परिवार से ही नहीं,बाकी कई फिल्म हस्तियाँ भी परस्पर मिल लेती थीं। इसलिए हर कोई होली के दिन आर के स्टूडियो में खिंचा चला आता था।

इस होली से कई हस्तियों की अविस्मरणीय यादें भी जुड़ी है। उस जमाने में जिस भी छोटे-बड़े कलाकार को राज कपूर के यहां होली खेलने का न्योता मिलता था वह बहुत गर्व महसूस किया करता था क्योंकि इससे इंडस्ट्री में उसकी हैसियत का अंदाजा होता था।

राज कपूर की होली पार्टी में एक बड़े टैंक में रंग व दूसरे में भंग तैयार किए जाते थे और हर आने वाले को उन दोनों से सराबोर किया जाता था। बताते हैं कि हर आने वाले का पहला स्वागत रंग भरे टैंक में डुबकी लगवा कर किया जाता।

ऐसा बताया जाता है कि एक बार आरके स्टूडियो में अदाकारा वैजयंती माला ने होली खेलने में आनाकानी की, तो उन्हें रंग भरे टैंक में सात बार डुबकियां लगवाई गईं। राज कपूर के स्टूडियों की होली में शामिल होना उस जमाने का हर छोटा बड़ा सितारा अपनी शान समझता था। सिर्फ़ देव आनंद नहीं आते थे, क्योंकि उन्हें रंगों से परहेज था। लेकिन यह हंसी ठिठोली अब बंद है।

बच्चन और होली पार्टी का अनोखा संयोग

ऐसे ही एक होली के कार्यक्रम में अमिताभ बच्चन भी पहुंच गए। उस दौर में अमिताभ बच्चन की लगातार 9 फिल्में असफल होने के बाद वह बेहद निराश थे। उसी अवस्था में वे आरके स्टूडियो चले आए। तब राज कपूर ने उनसे कहा "आज कोई धमाल हो जाए, देखो कितने सारे लोग आए हैं सब तुम्हारी प्रतिभा देख सकेंगे।"

तब पहली बार अमिताभ बच्चन ने अपनी आवाज में 'रंग बरसे भीगे चुनर वाली' गाया और इस कदर झूमे कि सब उनके दीवाने हो गए। सालों बाद यश चोपड़ा ने उसे गाने को अपनी फिल्म सिलसिला में इस्तेमाल किया था। अमिताभ आज भी आर के स्टूडियो की होली को बहुत याद करते हैं।

राज कपूर साहब की एक फिल्म के गाने "किसी की मुस्कुराहटों पर हो निसार....." के अंतरे में एक लाइन थी- रिश्ता दिल से दिल के ऐतबार का, जिंदा है हमी से नाम प्यार का.... रियल लाइफ में ये लाइन राज कपूर के लिए एकदम सटीक बैठती थी. वे काफी मिलनसार थे और जिससे भी मिलते थे दिल खोलकर मिलते थे। राज कपूर की खासियत ये थी कि वे खुद तो लोगों से जुड़ते ही थे साथ ही वे लोगों को जोड़ते भी थे। उनके द्वारा आर के स्टूडियो में मनाया जाने वाला लाजवाब होली उत्सव भी इसी का अंग था। राज कपूर एक वट वृक्ष के तरह थे और हुनर के साथ-साथ उनके पास सलीका भी था। इसलिए उन्हें लोग मानते थे और उनका इतना सम्मान भी करते थे। 1988 में राज कपूर साहब नहीं रहे। उसके बाद कपूर खानदान में होली को लेकर वैसा उल्लास नहीं रहा। उनके जाने के बाद आयोजन हुए लेकिन वो गर्मजोशी नहीं थी। राज साहब के बाद अमिताभ बच्चन और जावेद अख्तर की होली भी काफी चर्चा में रही। लेकिन जो रुतबा राज कपूर की होली का था वो उनके साथ ही हमेशा-हमेशा के लिए चला गया। लेकिन आज भी जब होली के आयोजनों की बात होती है तो लोग कहते हैं कि होली हो तो राज साहब जैसी हो !!

किन्नरों के संग था
खास रिश्ता

राज कपूर हर साल किन्नरों के साथ होली सेलिब्रेशन करते थे। उनका किन्नरों के साथ खास रिश्ता था। उनका इस कम्यूनिटी पर अटूट विश्वास था। राज हर साल किन्नरों के साथ होली खेलते, रंग-गुलाल के साथ महफिल सजा करती थी। कहते हैं राज कपूर आरके स्टूडियो से सब फिल्मी सितारों के चले जाने के बाज शाम 4 बजे किन्नरों के साथ महफिल सजाते थे। किन्नर खुद उनसे मिलने आते थे, स्टूडियो में नाचते-गाते और खूब होली खेला करते थे। ये राज कपूर के खास मेहमान होते थे।

बताया जाता है कि राज कपूर को किन्नर समाज पर इतना भरोसा था कि अपनी फिल्मों के गानों का अप्रूवल भी वो उन्हीं से लेते थे। ऐस ही कुछ 1985 में आई फिल्म राम तेरी गंगा मैली के साथ भी हुआ था। राज ने अपनी इस फिल्म के गाने भी होली के आयोजन पर किन्नरों को सुनवाए थे। कहा जाता है कि सभी गानों को किन्नरों की मंजूरी मिली, लेकिन एक गाना उन्होंने रिजेक्ट कर दिया। उनके नामंजूर करने पर राज कपूर ने संगीतकार रविंद्र जैन को बुलाकर उसे बदलने को कह दिया। इसके बाद "सुन साहिबा सुन...." गाना बना। किन्नरों को सबसे ज्यादा सुन साहिबा सुन गाना ही पसंद आया था। इस गाने पर सभी नाच उठे थे। किन्नरों ने राज कपूर से कहा था, 'देख लेना ये गीत सालों चलेगा और ऐसा ही हुआ'. इतिहास गवाह है कि ये गाना फिल्म और उस दशक का सबसे हिट गाना था। आज के दौर में भी इस गाने पर कई रीमिक्स बनाए जाते हैं।

सबसे पसंदीदा त्योहार का एक भी गाना फिल्म में नहीं रखा

राज कपूर हिंदी पर्दे के चार्ली चैपलिन थे। उन्होंने न केवल फिल्मों का निर्माण किया बल्कि कई फिल्मों का निर्देशन भी किया। परंतु खास बात यह है कि अपनी जिंदगी में साल-दर-साल जोरदार होली मनाने वाले राज कपूर ने अपनी किसी फिल्म में कभी कोई होली गीत नहीं रखा। यह बहुत ही आश्चर्य चकित करने वाली बात है कि जो राज कपूर अपनी फिल्मों के साथ-साथ इन फिल्मों के मधुर गीतों के लिए याद किए जाते हैं, उन्होंने अपनी फिल्म में किसी होली गीत को जगह नहीं दी। उनकी आग, बरसात, आवारा, श्री 420, संगम, मेरा नाम जोकर, बॉबी, सत्यम शिवम सुंदरम, प्रेम और राम तेरी गंगा मैली आप देख लीजिए। इन फिल्मों में एक से बढ़ एक रोमांटिक गाने हैं। प्यार का इजहार करने वाले और दर्द भरे भी। इनमें नाचने-झुमाने वाले म्यूजिकल भी हैं, परंतु एक भी होली गीत आपको नहीं मिलेगा।

सिनेमा के जानकारों को यह बात आज भी चकित करती है।

देव आनंद पार्टी से दूर रहते थे

फेमस आर के स्टूडियों की होली का इंतजार फिल्म इंडस्ट्री के लोग पूरे साल किया करते थे। सिर्फ यही नहीं हर कोई यहां से बुलावे का बेसब्री से इंतजार भी किया करते थे। सिर्फ देव आनंद होली के हुड़दंग से दूर रहते थे। कहते हैं कि देव आनंद को होली खेलना पसंद नहीं था। वह हमेशा इस त्योहार से दूर रहते थे। देव साहब को लगता था कि होली खेलने से उनका सुंदर सजीला चेहरा हमेशा के लिए खराब हो जाएगा। राजकपूर इस बात को अच्छी तरह जानते थे, इसलिए उन्होंने कभी देव साहब पर होली खेलने के लिए जोर नहीं डाला। हालांकि देव साहब राजकपूर अच्छे दोस्त माने जाते थे।

नर्गिस का जिम्मा था कोई भूखा ना जाए

आरके स्टूडियो की ख़ास होली के हुडदंग में कोई भूखा ना चला जाए, इसकी जिम्मेदारी प्रसिद्ध अदाकारा नर्गिस पर हुआ करती थी। उनकी धाक ऐसी रहती कि भांग की मस्ती होने के बाद हर कोई बिना पेट भर खाये आरके स्टूडियो से बाहर नहीं निकलता था। राज कपूर की होली को एक ज़माने में 'भांग और फूड फेस्टिवल' भी कहा जाता था। 70 के दशक की शुरुआत में आरके फिल्म्स की फिल्में नहीं चलने के कारण आरके स्टूडियो की होली फ़ीकी हो गई थी, लेकिन फिल्म 'बॉबी' के हिट होते ही कपूर्स फ़िर फॉर्म में आ गए।

कवि से छेड़-छाड़

डॉ. कीर्ति काले ✍ दिल्ली

कोई थोड़ा सा छेड़े और कोई ढ़ेर सारा छिड़ जाए, तभी छेड़छाड़ का असली आनंद है। मनोविनोद का तत्व छेड़छाड़ का आधार है। प्रेमी प्रेमिका, देवर भाभी, जीजा साली, समधी समधन के अलावा भी कुछ ऐसे रिश्ते हैं, जिन्हें छेड़-छाड़ का अघोषित लाइसेंस प्राप्त है।समाज में एक विशेष वर्ग है जिसके साथ अक्सर समय से पहले छेड़-छाड़ प्रारम्भ हो जाती है। वो हैं लेखक और कवि। लेखक को सम्पादक छेड़ते हैं और कवियों को आयोजक।

सावन आने से पहले जब पेड़ों से पत्ते गिर रहे होते हैं, लू लपट चल रही होती है, सिर को गमछे से लपेटकर प्याज गले में लटकाकर गर्मियों की दोपहर पसीने से हलकान हो रही होती है, पतझड़ पूरे शबाब पर होता है। तब सम्पादक जी वाटसप पर मैसेज करके लेखक को छेड़ देते हैं। अगले महिने के सावन अंक के लिए रंगीला छबीला लेख भेजिए। मैसेज देखते ही लेखक ना नुकर तक नहीं कर पाता और खुशी खुशी छिड़ जाता है। छिड़ता भी है तो भेरेंट किस्म का। सम्पादक के मन में अपनी अहमियत का मन ही मन अनुमान लगाता हुआ लेखक फूला नहीं समाता। गिरे हुए सूखे पत्तों में उसे फूले हुए फूल दिखाई देने लगते हैं। लू की लपट भी सावनी बयार सी मादक लगने लगती है। नीरवता में तितलियों और भौरों की गुंजार सुनाई देने लगती है। हमेशा सूजा हुआ मुंह लेकर घूमने वाला सम्पादक सावन अंक के लिए खुद होकर वाटसप कर रहा है। एक स्वाभिमानी लेखक के लिए इससे बड़ी छेड़ कोई और हो सकती है भला! सम्पादक का वाटसप लेखक की लचीली रीढ़ के ऊपर रखी अकड़ीली गरदन को नरम कर देता है। लेखक सम्पादक की इस छेड़ से सम्मानपूर्वक छिड़ जाता है और पतझड़ के मौसम में कागज़ पर कलम से बहार लाने में भिड़ जाता है।

कवियों को छेड़ते हैं आयोजक। कवि सम्मेलनों के अभ्यस्थ कवि तो आयोजकों द्वारा छिड़ने के लिए तैयार ही बैठे रहते हैं। होली से दो महिने पहले फागुन का रंग कवि सम्मेलनों के घुटे घुटाए आयोजकों पर चढ़ने लगता है। भंग की तरंग में कवियों की धड़ाधड़ बुकिंग शुरू हो जाती है। होली कवियों का जबरदस्त वाला सीजन होता है। होली के बिल्कुल पहले और बिल्कुल बाद वाले शनिवार इतवार इस सीजन के एपी सेंटर कहे जा सकते हैं। जनवरी की कड़कड़ाती ठंड में होली की ठंडाई के साथ होने वाली कविताई और एवज में प्राप्त होने वाले लिफाफे के वजन की कल्पना मात्र से कवि का दिल बल्लियों उछलने लगता है। कैलेंडर की तारीखों पर गोल गोल गोलों के निशान जैसे जैसे बढ़ने लगते हैं, वैसे वैसे कवि की बार्गेनिंग पावर में उछाल आने लगता है। मार्च की दस तारीखें बुक होते ही अनुभवी कवि सतर्क हो जाते हैं और तुरंत प्रभाव से बाकी बची बीस तारीखों को भरने की जुगाड़ में लग जाते हैं। जिन तारीखों को भरने के लिए आयोजक उन्हें नहीं छेड़ते, उन तारीखों की गोद भराई के लिए कवि निःसंकोच आयोजकों को छेड़ने लगते हैं। वो न सुबह देखते हैं न दोपहर। न शाम देखते हैं न रात। आयोजकों के नम्बर खोज खोजकर उन्हें छेड़ते हैं। आयोजकों से दूर की रिश्तेदारियां निकालते हैं। इस चक्कर में कुछ आयोजक छिड़ भी जाते हैं। फलस्वरूप कैलेण्डर की तारीखों पर गोल गोल गोलों के निशानों में आशातीत बढ़ोतरी होने लगती है।

आयोजकों द्वारा अधिक से अधिक छेड़े जाने की आकांक्षा इतनी अधिक प्रबल हो जाती है कि कवि महोदय शौचालय में भी मोबाइल लेकर जाने लगते हैं। उन्हें

आशंका रहती है कि कहीं ऐसा न हो कि यहां हम हल्के होने जाएं, वहां हमारा एक कवि सम्मेलन हल्का हो जाए। जनवरी की हाड़ कंपा देने वाली सर्दी में फागुन की मतवाली बयार का एहसास जीना कोई मंचीय कवियों से सीखे। रसिया और जोगीरा की लय ताल पर ताज़ातरीन राजनैतिक घटनाक्रम को फिल इन दि ब्लैंक्स की तरह भरते हुए मुंह से भांप निकालती हुई जनवरी में कवि और आयोजक परस्पर होली की रंगीली छेड़ छाड़ में मस्त हो जाते हैं। रसिया के साथ साथ शान से दुम उठाकर दुमदार दोहे भी गाते हैं।

पहले के ज़माने में लफंडर टाइप के कवि चुलबुली टाइप की कवयित्रियों को नैपथ्य में छेड़ते थे। कवयित्रियां शरमाने सकुचाने का नाटक करते हुए अंततः छिड़ ही जाती थीं। अब मामला उल्टा हो गया है। अब महिला सशक्त है, मुक्त है, आत्मनिर्भर है। अब वो इसकी राह नहीं देखती कि कोई उसे छेड़े तभी वो छिड़े। वो तो छिड़ने की पूरी सामग्री से लैस होकर कवि सम्मेलनों के मंचों पर जाती है। उसे कविता भले ही आए न आए, छेड़-छाड़ अवश्य आती है। आयोजक के दिल की बंद कली खिलती है जब नैपथ्य में नहीं भरे-पूरे मंच पर छेड़-छाड़जीवी कवयित्री स्वयं छिड़ने को लालायित मिलती है।

एक बार संचालक इतना सभ्य था कि उसने छेड़-छाड़जीवी कवयित्री को ससम्मान काव्यपाठ के लिए आमंत्रित करने का अपराध कर दिया। छेड़-छाड़जीवी कवयित्री इतने सम्मान की अभ्यस्त नहीं थी। मंच पर ही नाराज़ हो गई और स्वयं आगे होकर संचालक को छेड़ने लगी।

बदन होता है बूढ़ा दिल की फितरत कब बदलती है
पुराना कुकर क्या सीटी बजाना छोड़ देता है

टाइप के जुमले बोलकर भरी सभा में संचालक की मर्दानगी पर प्रश्नचिह्न खड़े करने लगी। सामने बैठी भीड़ संचालक को जवाब देने के लिए उकसाने लगी। मामला गरमा गरम हो गया। छेड़-छाड़जीवी कवयित्री अपने रंग में आई। संचालक के चुप रहने पर उसी ने बात आगे बढ़ाई।

कौन कहता है बुढ़ापे में प्यार का सिलसिला नहीं होता
आम तब तक मजा नहीं देता जब तक वो पिलपिला नहीं होता

श्रोताओं ने कवयित्री की निडरता पर निर्लज्जतापूर्वक उछल उछलकर तालियां बजायीं।

सभ्य संचालक शर्म से जमीन में गड़ा जा रहा था, लेकिन कवयित्री और चवन्नीछाप श्रोताओं को मजा आ रहा था। गम्भीर और साहित्यिक किस्म के श्रोताओं को ये तमाशा बिल्कुल नहीं भा रहा था, लेकिन वो विरोध नहीं कर पा रहे थे, क्योंकि उनकी जुबान को सभ्यता का लकवा मार गया था।

मैंने एक युवा कवयित्री से पूछा - आजकल क्या नया लिखा है?
वो बोली - छेड़-छाड़ लिखी है।
मैंने कहा - सुनाओ
उसने सुनाई
मैंने कहा - ये तो यू ट्यूब पर कई बार दिखी है
वो बोली - यूट्यूब पर देखकर ही तो मैंने लिखी है।

पहले कवि सम्मेलनों के आमंत्रण के पत्र आते थे और निरस्त होने की सूचना के टेलीग्राम भिजवाए जाते थे। कवि सम्मेलन फेल करने के लिए सूचना तंत्र की शिथिलता के साथ कुछ उपद्रवी लोकल कवि छेड़-छाड़ करते रहते थे। मसलन आमंत्रित कवियों को कवि सम्मेलन के निरस्त होने के झूठे टेलीग्राम भेजना या कवि सम्मेलन के आमंत्रण के फर्जी पत्र पोस्ट करना। मोबाइल क्रांति के दौर में इन लोकल डफाचूकों को दौरा पड़ गया और छेड़छाड़ पर लॉक लग गया।

बड़ा कवि भले ही बरसों तक नई कविता न लिखे, लेकिन लोग बड़े कवियों को छेड़ने की नई नई तरकीबें निकालते रहते हैं। पिछले दिनों लगभग सभी अन्तरराष्ट्रीय बड़े कवियों के पास एक रौबीला फोन आया। फोन करने वाले ने अपना नाम कर्नल सो एंड सो बताया। और कहा कि सैनिकों के मनोरंजन के लिए एक बहुत बड़ा कवि सम्मेलन आयोजित करने की योजना बन रही है। आप देश के नामचीन कवि हैं। हम चाहते हैं कि आप इस कवि सम्मेलन में सम्मिलित हों। कवि सम्मेलन बड़ा है यह सुनते ही कवि की जीभ लपलपाने लगी। बड़े कवि सम्मेलन का अर्थ बड़ा अर्थवान होता है। कविता का अर्थ जाने या न जाने, लेकिन नामचीन बनते बनते बड़े कवि सम्मेलन का अर्थ बड़ा कवि भलीभांति जानने लगता है। बड़ा कवि सम्मेलन यानी बड़ा लिफाफा।

जब से मानदेय शब्द को पेमेंट ने रिप्लेस किया है तब से लिफाफे का घूंघट भी हट गया है। पहले आयोजकों द्वारा लिफाफे के लिहाज में लजाता हुआ मानदेय दिया जाता था। कवि द्वारा चुपचाप रख लिया जाता था। घर पहुंचकर भी लिफाफे के नोट गिने नहीं जाते थे, लेकिन जब से अक्सर लिफाफों में नोट तय राशि से कम पाए जाने लगे, तब से लिफाफा मिलने पर कवि शौचालय का रुख अपनाने लगे। वहां ढक-छुपकर नोट गिनकर आने लगे। आजकल मानदेय नहीं कवियों का पेमेंट होता है, इसलिए लिफाफे का लिहाज भी रास्ते से हट गया है। अब पेमेंट मिलते ही बड़ा कवि आयोजक के सामने बड़ी शान से अंगूठे पर थूक लगा लगाकर नोट गिनता है और मन ही मन ये मुहावरा गुनता है कि हींग लगे ना फिटकरी और रंग चोखा। नोट गिनते गिनते बीच-बीच में आयोजक को इस निगाह से देखता है कि टिल्ली लिल्ली। एक भी कविता नहीं सुनाई फिर भी इतनी सारी कमाई। धन्य है शारदा माई।

नई तकनीक ने कवि सम्मेलन के बाद लिफाफे के नोट गिनने की मौज के साथ जबरदस्त किस्म की छेड़छाड़ कर दी है। जैसे शर्म, लिहाज, घूंघट, पर्दा हटा, वैसे ही कवि सम्मेलन से लिफाफा भी हट गया। अब तो डायरेक्ट का जमाना है। जो आना है वो डायरेक्ट खाते में आना है।

हां तो कर्नल साहब की रौबीली आवाज़ में मिले बड़े कवि सम्मेलन का निमंत्रण पाकर बड़े कवि का अपने पर नियंत्रण नहीं रहा। उसकी कल्पनाओं के घोड़े चारों दिशाओं में बेलगाम होकर दौड़ने लगे। बड़े दिनों से मर्सडीज लेने की इच्छा थी, मकान को तीन मंजिला कराना भी एक परीक्षा थी। बड़की को विदेश की यूनिवर्सिटी में दाखिला लेना था, छुटकी को बैटरी वाली इलैक्ट्रिक कार लेकर देना था। पत्नी को फॉरेन टूर पर ले जाना था, साली के लिए डायमंड नेकलेस मंगाना था। अब बड़ा कवि सम्मेलन खुद चलकर आया है। खुशियों की सौगात लाया है। कल्पना में खोया बड़ा कवि कुछ सोचता उसके पहले ही कर्नल साहब की रौबीली आवाज़ का रुआब ऐसा पड़ा कि बड़ा कवि कभी आसमान में उछला, कभी धरती में गड़ा।

कर्नल साहब ने फ़रमाया कि पूरा पेमेंट एडवांस दिया जाएगा। हमारा असिस्टेंट आपको पूरी प्रक्रिया समझाएगा। बड़ा कवि इतने अनुभव के बावजूद लपेटे में आ गया। पेमेंट को लेकर न झिकझिक न मोल-भाव न खर खर। वाह रे दाता तेरी बड़ी मेहर। बड़े कवि सम्मेलन के चक्कर में बड़े कवि ने चार गुना पेमेंट बता दिया। असिस्टेंट ने प्रक्रिया समझाते हुए मोबाइल पर एक फॉर्म भेजा, जिसे भरने में घूम गया बड़े कवि का भेजा। इस कॉलम में फर्स्ट नेम भरना है उस कॉलम में सरनेम। अगले में उम्र बाद वाले में पिनकोड सहित पूरा पता। अब चौखानों में बैंक खाता नम्बर और पेमेंट की राशि अंकित करनी है। चक्कर खाए हुए कवि ने होशियार बनते हुए छः अंकों की राशि चौखानों में भर दी। मन ही मन फिर कल्पना की दौड़ शुरू कर दी। तभी असिस्टेंट ने कहा- आपके पास ओटीपी आया होगा। ओटीपी अगले खाने में डालिए। कल्पना के घोड़ों पर सवार बड़े कवि ने जैसे ही ओटीपी डाला, वैसे ही भयंकर छेड़-छाड़ हो गई। आयोजक के खाते से बड़े कवि के खाते में आने की बजाय छः अंकों की भरी-पूरी राशि बड़े कवि के खाते से फरार हो गई।

ऐसे भी दर्दनाक मंजर सामने आते हैं
जब समय समय पर कवियों को छेड़ने के लिए बड़े बड़े दैत्य भेजे जाते हैं

जो कभी कोरोना बनकर आते हैं, कभी चुनाव की आचार संहिता के नाम से जाने जाते हैं। दैत्यों के दबाव में जब कवि सम्मेलन धड़ाधड़ निरस्त होने लगते हैं। तब कवियों के परिवार जनों के मुंह से निवालों की दूरी बढ़ जाती है, दर्शकों की नजर में ये मौसम की छेड़-छाड़ कहलाती है।

नौ रसों का ज्ञाता साक्षात विधाता न हंसता है, न रोता है सच कहूं, मौसम द्वारा छिड़ा हुआ कवि ऐसा ही होता है।

फागुन आयो रे

घर-घर में मच गया शोर फागुन आयो रे ।
बहकी- बहकी है भोर फागुन आयो रे ।।

रंग-बिरंगी रंगो वाला मौसम है अलबेला ।
लाल-गुलाबी हरा बसंती काला पीला नीला
रंग बरस रहा चहुँ ओर कि फागुन आयो रे ।

महकी-महकी माटी लागे मीठी लागे गाली
लहकी-लहकी चाल सभी की जीजा हो या साली
छूटे मन के पतंग की डोर कि फागुन आयो रे ।

धरती अम्बर डगमग डोले जब छूटे पिचकारी
प्यार भरे पावन रंगो में भीगे दुनिया सारी
है ये प्यारी की ऋतु घनघोर कि फागुन आयो रे ।

गोकुल के मस्तों की मस्ती है जानी पहचानी
हर गोरी समझे है खुद को जैसे राधारनी
हर ग्वाल बना चितचोर कि फागुन आयो रे।

दिनेश सिंदल ✍ जोधपुर

मुझ पर तेरा गुलाल

होली पर मैं हो गया, अब के मालामाल।
सारी दुनिया छोड़कर, मुझ पर तेरा गुलाल ।।

तन रंगों से रच गया उस पर बाजी चंग।
मन छूटा फिर हाथ से, जैसे कटी पतंग ।।

होली पर यूं दोस्तों, जीती मैने जंग।
वो सब मेरा हो गया, जिस पर मेरा रंग ।।

तुमने अपने प्यार का, कर डाला इजहार ।
फागुन की पिचकारियां, मुझ पर कईं हजार ।।

होली पर मुझको मिला, अब के ये उपहार।
मन की कोरी स्लेट पर, तेरे रंग हजार।।

तुम जो मेरे संग

तुम बिन फीके ही लगे, ये होली के रंग ।
हर दिन ही त्यौहार है, तुम जो मेरे संग ।।

आधे मन पूरे हुए, तन परकोटा फांद ।
होली को कब दोस्तों, भाया आधा चांद ।।

हवा निगोड़ी यूं चली, घूंघट दिया उछाल।
गोरी के रंगे बिना, गाल हो गए लाल ।।

सतरंगी तेरी चुनर, गाल सुर्ख कचनार ।
तुम बिन कैसे आएगा, रंगों का त्यौहार ।।

मन पर मेरे है चढ़ा, जब से तेरा रंग।
क्यों खेलूं होली बता, अब दुनिया के संग।।

कोयलिया की कूक

मन ने मन से प्रेम की, बात करी दो टूक।
फागुन में सुन पेड़ पर, कोयलिया की कूक।।

धानी चुनर ओढ़कर, धरा सजाए सेज।
रंगता तन - मन साथ में, ये फागुन रंगरेज।।

मौसम चाहे हो भले, कितना ही प्रतिकूल
फागुन में खिल जाएंगे, ये टेसू के फूल ।।

लाल, गुलाबी, बैंगनी, तन पर डाले रंग।
मन पर कैसे डालता, जो था मन के संग।।

तुमसे ही तो रंग है, तुमसे गीत हजार।
तुम बिन कैसे आएगा, होली का त्यौहार।।

जब हो तेरा दीद

होली, दीवाली यहां, बैसाखी औ' ईद।
मन जाए त्यौहार सब, जब हो तेरा दीद।।

समझाता है ये हमें, होली का त्यौहार।
तुम रंगों के नाम पर, बाँटों सबको प्यार।।

नशा प्रेम का सब करें, घुटे चकाचक भंग।
नाचे होली- ईद में हिंदू- मस्लिम संग ।।

गाती है हरदम यहां, ये होली की चंग।
सब के होठों गीत हो, सबके तन पर रंग।।

दुनिया चाहे डाल दे, उस पर रंग हजार।
दूजा उस पर क्या चढ़े, चढ़ता जिस पर प्यार।।

जैसे कटी पतंग

सुध- बुध खोई प्यार में, पीकर तेरी भंग।
तेरी बाहों में गिरी, जैसे कटी पतंग ।।

गीत रचूं मैं सजना, तू दे उसको राग ।
तब पूरा होगा यहां, ये होली का फाग।।

दुनिया पर सब रंग थे, हरा गुलाबी लाल।
मैने तेरे प्यार का, रक्खा रंग सम्भाल।।

दूर कहीं बजाते सुने, जब होली के गीत।
याद आई अपनी मुझे, पहली पहली प्रीत ।।

मिलकर दोनों हो गए, जैसे ही इकरंग।
हम दोनों के गीत अब, गाती है यह चंग।।

जल जाता प्रहलाद

होली हो की साँच की, मत कर उसको याद।
अब हंसती है होलिका, जल जाता प्रहलाद।।

समझाती मुझको यहां, ये होली की आग।
पहले जलना है तुझे, फिर होंठों पर फाग।।

मन पर मन भर मैल था, तन पर मला गुलाल।
सात स्वरों में खो गए, होली के स्वर - ताल ।।

थे उधार के रंग सब, थी उधार की भंग।
होली की इस बार तो, फीकी रही तरंग।।

दिल में तो जलती रही, है होली की आग।
होंठों से गाते रहे, हम पानी का राग।।

लगे आपको गालियां, ये होली के गीत।
इन में देखी है मगर, हमने केवल प्रीत।।

चेहरे सब काले मिले, मन यूं हुआ अधीर।
अबके फागुन में मिले, किसके रंग- अबीर।।

अब तक तो चलते रहे, धूप- छांव के संग।
आई बारिश क्या करे, कच्चे जिनके रंग।।

हरा, गुलाबी, बैंगनी, नीला, पीला, लाल।
रंग सभी तेरे लिए, हमने रखे सम्भाल।।

सच हमसे ये अंत तक, करता है संवाद।
जल जाती क्यों होलिका, बच जाता प्रहलाद।।

कलेंडर

रास बिहारी गौड़, अजमेर

जनवरी में आगाज होता है नववर्ष का
पति- पत्नी के बीच बिगुल बज
जाता है संघर्ष का

सबसे पहले मकर संक्रांति
शुरू होती है क्रांति
पत्नी तिल का ताड़ बनाकर पति को
लताड़ती है
छब्बीस जनवरी पर अपने अधिकारों
का झंडा पति की छाती पर गाढती है

फ़रवरी में महाशिवरात्रि, महापर्व
पत्नी पर्व का असर मांगती है
पति के सामने भगवान भोले से
दूसरा वर मांगती है

मार्च में होली, रंगों की ठिठोली
तब तो भगवान ही रखवाला होता है
पत्नी लाल पीली पति का मुंह काला
होता है

अप्रेल में अप्रेल फूल पतिओं के
लिए
मई में मज़दूर दिवस पतिओं के लिए
जून में जून ख़राब होती है
जुलाई के सावन भादों खलते हैं
पंद्रह अगस्त स्वतंत्रता दिवस
हर पति के मन में आज़ाद होने के
ख्याब पलते हैं
सितम्बर में गणपति बप्पा मोरिया
गण के साथ पति लगा है
इसलिए विसर्जन होरिया

अक्तूबर में डांडिया
नजारा सूधा सठ है
पति पत्नी दोनों नाच रहे हैं
हाथ में लट्ठ है

नवम्बर में बीवी बच्चे बाज़ार
मिलकर लूटते हैं
दिवाली के सारे पटाखे हम पतिओं
की खोपड़ी पर फूटतें हैं

दिसम्बर में पति धार्मिक हो जाता है
क्रिसमस पर चर्च में मत्था टेकता है
वहां भी ईसा मसीह को सूली पे टंगा
देखता है, समझ जाता है, पति
दोनों की नियति
सारे ग़म भूल जाता है
फिर से बापू न्यू ईयर के झूले में झूल
जाता है

लिफ़ाफ़ा

मैंने बेटे का बर्थ डे
मनाया
कार्ड छपवाया
कार्ड में लिखा
ख़बरदार
जो कोई फोकटिया
दिखा
तो अपनी इज्जत का
ज़िम्मेदार स्वयं होगा
हमारे लिए लिफ़ाफ़ा अहम
होगा
क्योंकि लिफ़ाफ़े में अर्थ है
अर्थ का अर्थ है
जो सक्षम है समर्थ है
वही हमारा यार दोस्त मित्र है
क्योंकि लिफ़ाफ़ा
समाज का वैश्विक चरित्र है

दरवाज़े पर लिखवाया
स्वागत
ख़ाली हाथ आना मत
ख़ाली हाथ प्रवेश निषेध है
हम आपको नहीं पहचानते
हमें खेद है

पत्नी को समझाया
फोकट की मुस्कान मत बांटना
आने वाले को तरीक़े से काटना
उसकी औक़ात आंकना
जेब में झांकना
झांकते हुए लिफ़ाफ़े को
मन ही मन तोलना
सही तुले तो हंसकर बोलना
नहीं तो कसकर बोलना
अच्छा लगे या गंदा
यह है एक धंधा
धंधे का उसूल है मुनाफ़ा
आदमी की औक़ात
बताया है लिफ़ाफ़ा

बेटे को पढ़ाया
कोई ग्यारह इक्कीस दे
तो नाक भौं सिकोड़ना
एक सौ एक पर हाथ जोड़ना
पांच सौ पर पांव छूना
उत्साह दिखाना दूना
जब कोई सूट लाए
तेरे नाप का
तब हम बोलेंगे
जी यह बेटा है आपका

बेटे को जितना पढ़ाया
वह उससे भी निकला सवाया
जैसे ही कोई मेहमान टपकता
वह उसकी जेब पर लपकता
लपककर लिफ़ाफ़ा खोलता
खोलकर बोलता
पापा, टांय टांय फिस्स है
इसमें तो बस इक्कीस हैं
ग्यारह देखकर सन्न हो जाता
एक सौ एक पर प्रसन्न हो जाता
पांच सौ पर चरण स्पर्श करता
ग्यारह सौ पर हर्ष करता
सूट देखकर खो देता आपा
मुझे छोड़कर
देने वाले को कहता पापा

अंत में केक कटा
हैसियत के हिसाब से बटा
कोई भी पीस कम नहीं था
रुपए एक सौ एक से
लिफ़ाफ़े के नोट झांक रहे थे
कटे हुए केक से
यह सब दिल पर
छुरी चलने कमाल था
बेटा बोला, पापा एक सवाल था
मैं आपका प्यार हूं? परिवार हूं?
व्यापार हूं.?
नफ़ा नुक़सान मुनाफ़ा हूं
सच सच बताओ
मै बेटा हूं या लिफ़ाफ़ा हूं
मै आपका कौन हूं
इस सवाल जवाब में
मैं आज तक मौन हूं

फाग राग पर होली का मस्ती भरा गीत

दिनेश शर्मा, 'बंटी'
शाहपुरा

जब आरती और अज़ान

अ से बनते हैं
जब मंदिर और मस्जिद
म से बनते हैं
जब ईश्वर और इलाही दोनों एक ही है
मेरे भाई

तो फिर किस बात का फसाद, किस बात
की लड़ाई

जब हिन्दू का ह और मुस्लिम का म
मिलकर हम बने तो फिर बेवजह ये सीने
क्यों तने

जब म से ही मर्यादा पुरुषोत्तम
और म से ही मोहम्मद साहब होता है
जब अ से अजमेर और अ से ही
अयोध्या शुरू होता है

जब क से काबा और क से ही काशी
होता है

तो उन्हें मुंह तोड़ जवाब दो
जो हमारे बीच ये नफ़रत के बीज बोता है

पोस्टमेन

होली आई रे, हां रे होली आई रे
हिलमिल रंग गुलाल लगाओ लोग लुगाई रे
होली आई रे

साली जी होली पर आया
जाणे जलेबी मिलगी जी
भर पिचकारी साली जी
की करो तराई रे,
होली आई रे

आज बबीता (पड़ोसन) सामे मिलगी
भर भर रंग लगाओ जी,
अय्यर देखे, थ बण जाओ जेठा भाई रे
होली आई रे

घरवाली को ध्यान राखज्यो
नशा पता म मत रिज्यो
नार पराई का चक्कर म
होवे कुटाई रे
होली आई रे

चुनावी रंग ना जाने यार कैसा हो गया है

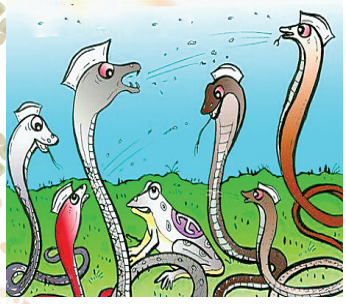

सियासी जंग में नेता
विषैला हो गया है

मची है होड़ हर दल में ऐसी बदज़ुबानी की
उन्हें तो फ़क्र है

नहले पे दहला हो गया है
हरा रंग और केसरिया तिरंगे का यूं धो डाला

बचा था श्वेत शांति का अकेला हो गया है
खड़ी कर दी जो तुमने मज़हबी दीवार वोटर में

वतन सतरंगी था वो आज मैला हो गया है

अतुल कनक ✍ कोटा

पुल है, तो क्या
नदी में नहा भी नहीं सकते?

पुल हैं,तो क्या नदी में
नहा भी नहीं सकते?
नदी में कूदने को आतुर
एक पुल दिखा तो
हमने उसे टोका
अपने सवाल का
जवाब लेने के
मक़सद से थोड़ा रोका
चिल्लाकर पूछा
पुल भाई, बताओ तो सही
यह क्या मसला है भला?
कि नदी में उफान
देखते ही हर पुल
डुबकी लगाने चला
ये नदी के साथ
गठबंधन की तैयारी है
या कोई विवशता है?
कोई पुल, नेता की तरह
जनता की उम्मीदों को ऐसे

धोखा कैसे दे सकता है?
पुल बोला- भले मानुस
लगातार बोझ उठाकर कभी
हम भी तो थकते हैं
पुल हैं तो क्या
नदी में कूदकर कभी
नहा भी नहीं सकते हैं?

जहां तक गिरने या
दरकने का सवाल है
तो वो मामूली बात है
क्योंकि जब पहाड़
टूट कर गिर रहे हों
तो पुलों की क्या औकात है?

दिमाग खाने से कोई मरता
तो सोचो, मेरा क्या होता?

हमने उस दिन
पत्नी को जब
ये समाचार दिए
कि दिमाग खाने वाले
अमीबा के संक्रमण ने
कुछ लोग मार दिए
तो पत्नी
इतराते हुए बोली,
सच-सच बताना
संक्रमण भारी था
या मौत ही आने का
ढूंढ रही थी बहाना
कभी- कभी जीवन में
संवेदनशील होना भी
बड़ी समस्या होता है
आप तो कवि हो
अच्छी तरह जानते हो कि
दिमाग खाना क्या होता है
जब भी नई कविता
लिखते हो मुझे
जबर्दस्ती सुनाते हो
बुरा तो लगेगा आपको
लेकिन क्या मेरा
कम दिमाग खाते हो?
आप तो कविता सुनाकर
आनंद के दरिया में
लगाने लगते हो गोता
सोचो, दिमाग खाने से ही
कोई मर जाता तो
भला, मेरा क्या होता?

बीमा पॉलिसियां कहां रखी हैं... बस, इतना बता देना

हम ने पत्नी से कहा
कि काम के दबाव में एक
रोबोट ने कर ली आत्महत्या
क्यों यह बेकार का दबाव
बनता जा रहा है हमारे
जीवन की बड़ी समस्या
इसलिए बात बात पर
धमकी मत दिया करो
अपने मायके जाने की
और करवाचौथ पर
कसम खा लेना इस बार

मेरी जान नहीं खाने की
किसी दिन रोबोट की तरह
मैं भी गुड़क गया तो

सारी उम्र पछताओगी
भुक्खड़ सहेलियों के
घर आने पर आखिर
कचौरियां किससे मंगाओगी?
पत्नी बोली, छोड़ो चिंता
सपनों के शहर में क्यों
टेंशन को अपना पता देना
तुम्हारी बीमा पॉलिसियां
कहां रखी हैं
गुड़कने के पहले बस
इतना बता देना.....

धमचक मुलथानी ✍ रतलाम

मांग और पूर्ति

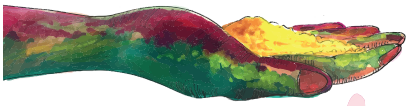

एक मित्र बोले- धमचक जी
विवाह के समय आदमी
औरत की मांग में सिंदूर भरता है
मैंने कहा - भरता है
वह बोला - बताइए ऐसा क्यों करता है
मैंने कहा- इसमें कोई क्या करें
सिंदूर नहीं तो क्या सीमेंट भरे
फिर सीमेंट का कलर हरा होता है
सिंदूर का कलर लाल होता है
जिसे भरने के बाद
आदमी पहली बार हलाल होता है
और हलाल होने की पहली शर्त है
आदमी औरत की मांग में सिंदूर भरे
फिर जीवन भर उसके मांग की पूर्ति करें
और बेचारा करता है
जो नहीं करता है
वह जीवन भर अटल बिहारी रहता है।

सूंघना

शिक्षक ने बच्चे के पिता से कहा-
आपका बच्चा
पढ़ने में है बहुत अच्छा
समय से आता है
समय से जाता है
कितना ही कठिन प्रश्न पूछो
सही-सही उत्तर बताता है
परंतु इसकी एक आदत
इसकी प्रतिभा पर दाग लगाती है
आप इसे नहला कर भेजा कीजिए
बच्चे के बदन से बू आती है
पिता ने कहा- सर
आपको बदबू आती है अगर
तो हम आपको बताते हैं सही-सही
हम बच्चे को पढ़ने के लिए भेजते हैं
सूंघने के लिए नहीं।

मूंगफली

स्कूल में बच्चों को एक दाने की
मूंगफलियां बांटी जा रही थी
यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही थी
मैंने शिक्षक से कहा-यह मूंगफलियां
जो बच्चों में बटवाई है
बताएंगे आप, कहां से मंगवाई है
क्या इतनी पैदावार घट गई इस जमाने की
पैदा होने लग गई मूंगफलियां एक दाने की
तब शिक्षक ने मेरे प्रश्न का किया समाधान
और कहां-श्रीमान
कैसे बताऊं आपको
इस देश में बढ़ते हुए पाप को
यह मूंगफली
जब ऊपर से चली
तब पूरे चार दाने की थी
वह तो इसका एक दाना बड़े साहब खा गए
दूसरा दाना छोटे साहब पचा गए
जब दो दाने दो अफसर की दाढ़ में अटक गए
मौका पाकर तीसरा दाना
हेड मास्टर साहब गटक गए
इस तरह की व्यवस्था
चल रही सरकारी खजाने की
ऊपर से मूंगफलियां तो आती है चार दाने की
मगर भ्रष्टाचार की आंधी में बह जाती है
जनता तक आते-आते एक दाने की रह जाती है

महंगाई का निदान

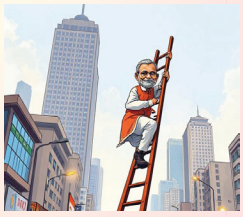

शहर के मध्य चौराहे पर
सीढ़ी के सहारे नेताजी
आसमान पर चढ़ रहे थे
सीढ़ी दर सीढ़ी आगे बढ़ रहे थे
मैंने कहा -ओ देश के कर्णधार
यह क्या कर रहे हैं
आपके लिए चुल्लू भर पानी
कम था
जो आसमान से कूद कर मर
रहे हैं
नेता ने ऊपर से आवाज लगाई
सुनो धमचक भाई
शायद तुम्हें ज्ञात नहीं
आकाश छूने में कोई खास
बात नहीं
चुनाव में जनता से वादा किया है
तो हिम्मत नहीं हारूंगा
वस्तुओं के भाव आसमान पर
जा चढ़े हैं
मैं उनको नीचे उतारूंगा।

प्रतिक्रिया

एक महिला ने एक साथ
चार बच्चों को जन्म दिया
इस घटना की
अलग-अलग हुई प्रतिक्रिया
कंजूस पति बोला-
हे भगवान यह आपने बहुत अच्छा किया
एक तो तीन डिलीवरी का खर्च बचाया
और बार-बार के झंझट से पिंड छुड़ाया

इतने में परिवार नियोजन अधिकारी गुर्राया
इस नारी ने भारतीय विधान को तोड़ा है
ऐसी महिला परिवार नियोजन की
राह का रोड़ा है
चार बच्चे वह भी एक साथ
बढ़ती आबादी पर कितना बड़ा आघात

एक आलोचक बोले-
यह तो महिला की मजबूरी है
सरासर डॉक्टर और नर्स की कमजोरी है
प्रसव पीड़ा के दौरान बच्चे हो रहे थे
तब यह लोग क्या भांग पीकर सो रहे थे
एक के बाद अपनी कला दिखाते
परिवार नियोजन के उपकरण काम में लाते
मैंने कहा - क्यों नाहक परेशान होते हो
व्यर्थ दूसरों को दोष देते हो
यह सब ईश्वर की करामात है
इतने में एक मंत्री जी बोले-
ईश्वर की क्या खाक करामात है
चार बच्चे होना मामूली बात है
फिर इस महिला की क्या औकात है
इसमें जरूर विरोधियों का हाथ है।

चंदा और धंधा

एक गरीब दास मर गए
नेताजी कफन के लिए चंदा करने गए
लोगों ने उनकी सूरत शक्ल देखी
और घबराने लगे
रास्ता छोड़कर इधर-उधर जाने लगे
पलक झपकते ही
मोहल्ले में सन्नाटा छा गया
बच्चे चिल्लाए भागो -भागो
चंदे वाला आ गया
मैंने एक भागते हुए सज्जन को रोका
हाथ पकड़ कर टोका
दिन में सौ रुपए के पान चरते हो
पचास रुपए चंदा देने में मरते हो
सज्जन बोले -धमचक जी
यह नेताजी इंसानियत की हद कर गए
इस गरीबदास के नाम से
बीस बार चंदा कर गए
इनकी आदत से हम खुद शर्मिंदा हैं
जिसके लिए यह चंदा कर रहे
वह गरीबदास आज भी जिंदा है।

रितेश त्रिपाठी ✍ बड़ौदा

भूल फागुन में

भंग पीकर की भूल फागुन में,
बातें कर दी फ़ुजूल फागुन में।

सच्चों का तो मैं हूं सदा क़ाएल,
झूठे भी हैं क़ुबूल फागुन में।

प्रेम के रंग तो यहां भी नहीं,
गांव आया फ़ुजूल फागुन में।

आई है साली खेलने होली,
क्यों रहूं बा-उसूल फागुन में।

तोड़कर दिल हमारा हंसकर वो,
कहते हैं 'जस्ट कूल' फागुन में।

कल जो कोरोना में उदास-से थे,
खिल उठे हैं वो स्कूल फागुन में।

मां के आने से घर में है जैसे,
नेमतों का नुज़ूल फागुन में।

चाहता है 'ऋतेश' बस इतना,
हो न कोई मलूल फागुन में।

नागन की तरह

प्यार उसका लगता है वैसे तो चंदन की तरह।
किन्तु लड़ भी लेती है वो एक नागन की तरह।

देखने में श्रीमती लगती है सज्जन ही मगर,
पर्स मेरा खाली कर देती है रहज़न की तरह।

मैं मुहब्बत जब जताऊं कहती है चिल्लाके वो,
मेरे मुंह क्या लगते हो तुम दंतमंजन की तरह।

क्या गजब का दौर फैशन का चला है देश में,
अब नयी पतलून भी लगती है उतरन की तरह।

बेबी बेबी बोलकर मैडम बुलाती है हमें,
हाल अपना है बुढ़ापे में भी बचपन की तरह।

जाने किस चक्की का आटा खाती हेमा मालिनी,
होके सत्तर की भी वह लगती है पचपन की तरह।

इसलिए ही दर्द मेरा दिख नहीं पाता 'ऋतेश',
मेरे चेहरे पर हंसी रहती है चिलमन की तरह।

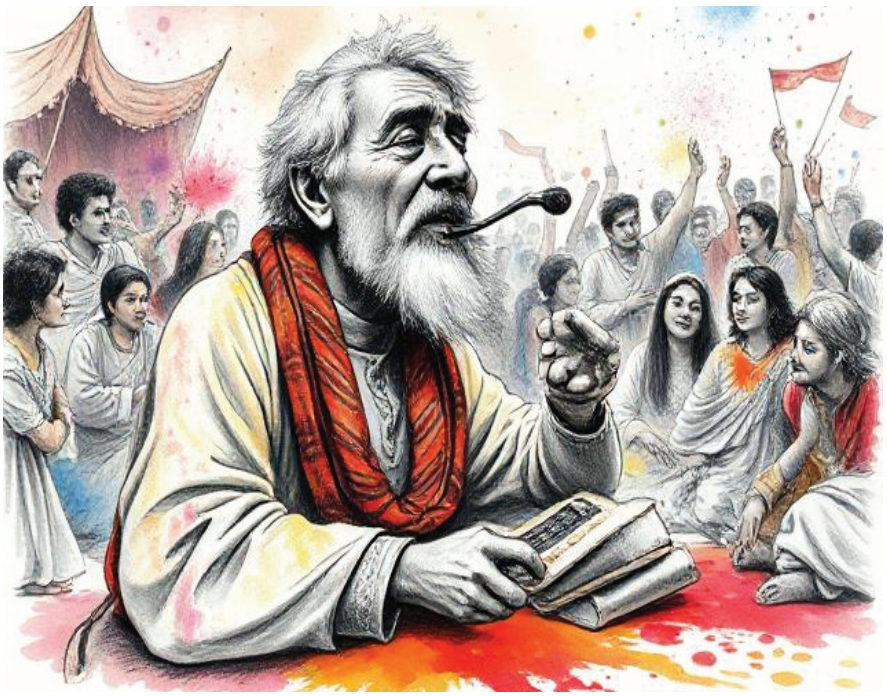

फिर बोलना अच्छा लगा

उसका मेरे दिल को यूं ही तोड़ना अच्छा लगा
तोड़कर दिल 'जस्ट चिल' फिर बोलना अच्छा लगा ।

इस अदा से प्लीज़ तुमने बोला मुझको बार बार
झूठे बर्तन भी तुम्हारे मांजना अच्छा लगा।

बढ़ती मंहगाई ने मेरा दिन बनाया इस तरह
हां पड़ोसन का टमाटर मांगना अच्छा लगा।

'बाय हेन्डसम ' चलते चलते उसने मुझको क्या कहा,
आज पहली बार मुझको आइना अच्छा लगा।

पीछे मुड़ मुड़ के वो उसका देखना मुझको गजब
उसके पीछे धूप में भी दौड़ना अच्छा लगा।

ट्रेन चलने के लिए जब मारने सीटी लगी,
झूठा झूठा उसका मुझको रोकना अच्छा लगा ।

दो बजे जब रात को बिजली हुई थी गुल तभी,
सामनेवाली का छत पर घूमना अच्छा लगा।

खूब हॉरर फिल्में मैंने देख रक्खी थी अतः,
पत्नी का घूंघट हटा कर देखना अच्छा लगा।

बारिशों में भीगकर बीमार सब होने लगे
डाक्टर को लोगों का वो भीगना अच्छा लगा

चोर नेताओं को लेकर जाती कश्ती पलटी जब,
माँ कसम उस नाव का तब डूबना अच्छा लगा ।

इक से बढ़कर एक ग़म हमको सताते थे "ऋतेश"
आपको पाकर हरिक ग़म भूलना अच्छा लगा।

विटामिन-डी हुआ आधा

तेरी ज़ुल्फ़ों की काली रात में रहकर हुआ घाटा,
मेरी हड्डी लगी दुःखने, विटामिन डी हुआ आधा।

तू हंसकर देखती जब भी, मुझे लगता है तब ऐसा,
पकड़ने के लिए मछली, किसी ने डाला है कांटा।

ये लड़के लड़कियों के हॉस्टल को देखते ऐसे,
बटर रोटी की जानिब देखता हो ज्यों कोई भूखा।

मुझे डर है कि दोनों ने कहीं कर ली न हो शादी,
तेरी मुर्गी हुई गायब, मेरा मिलता नहीं मुर्गा।

मेरी डीपी वो अक्सर ज़ूम कर के देखती रहती,
मगर जब पास आता हूँ तो कहती है मुझे भैया।

मचलता था, उछलता था, जिसे छूने को मेरा दिल,
उसी ने अपने बच्चे से मुझे बुलवा दिया मामा।

बनाती रील वो जब भी तो यह भी भूल जाती है,
बिचारा भूखा है बच्चा, पकाना है अभी खाना।

कुरेदे जा रही है घावों को यह पूछकर साली,
"मेरी दीदी से कर के आप शादी ख़ुश तो हो जीजा?

मैं इस कारण भी देखा करता हूं औरों की पत्नी को,
हमेशा दूजे की गलती पे हंसना लगता है अच्छा।

बनाने राम बेटे को, पढ़ाई उसको रामायण,
असर इसका हुआ उल्टा, वो रावण-सा मगर निकला।

मुझे तबसे दवाओं की ज़रूरत कम ही पड़ती है,
हंसाकर लोगों को जबसे मैं ख़ुद भी ख़ुश रहा करता।

होली में भंग की तरंग में

बंट गए बापू !!

डॉ. सुरेश अवस्थी ✍ कानपुर

भीगे हुए रंग में
भंग की तरंग में
कुछ लोग गांधी बापू पर बहस
कर रहे थे
बहस क्या,
एक दूसरे के दिमाग का तहस
नहस कर रहे थे
एक बोला- गांधी बापू महान थे
राजनीति से बिल्कुल दूर
एक सच्चे इंसान थे
दूसरा बोला-
गलत, गांधी बापू ने चलाया आंदोलन सत्याग्रह और
स्वदेशी
वो थे पक्के राजनीतिज्ञ, कांग्रेसी
तीसरा बोला-
बापू ने दलितों को गले से लगाया
उन्हें आगे बढ़ाया
उनके लिए एक बड़ा काम किया
उन्हें हरिजन जैसा नाम दिया
इसलिए मैं दावे से कहता हूं भाई
गांधी बापू कांग्रेसी नहीं थे,
वो थे पक्के बसपाई।
चौथा बोला-
जो आदमी जिंदगी झूठ फरेब में
डोलता है
वह भी मृत्यु के समय सच बोलता है
असल जीवन मे भी सत्यवादी बापू ने
मृत्यु के समय
थी राम राम की आवाज लगाई
इसलिए मेरे ख्याल से
गांधी बापू थे भाजपाई
एक बुजुर्ग व्यक्ति बहस को सुन सुन
कर परेशान था
वह- राजनीति से दूर सच्चा इंसान था
बोला- आप लोग बेमतलब की बहस मत ठानो
बापू की सच्चाई को पहचानो
राजनीति की आरी ने
हमारी देह को तो काट ही दिया है
अब आत्मा को तो मत काटो
आंगन का बंटवारा क्या कुछ कम है
अब बापू को तो मत बांटो
ध्यान रहे-
जिस आंगन के बंटवारे में
बापू को भी बांट दिया जाता है
वह आंगन फिर
मुश्किल से मुस्करा पाता है।

कुछ व्यंग्य दोहे

साईं इस संसार में,
ऐसे मिले फकीर।
भीतर से 'लादेन' हैं,
बाहर दिखें कबीर।

मुंह खोलें मिसरी झरे,
भीतर धरे बिलेड।।
मौका पाते गपक लें,
ए, बी, सी, डी, जेड।

मुफ्त जहां जो भी मिले,
लपक- गपक झट खात।
स्वान सरीखा आचरण,
हैं मानुष की जात।।

ओस चाट सीटें अधर,
बोलें सागर बोल।
औरन को उपदेश दें,
करो खर्च दिल खोल।।

चोर-चरित, चित-कोबरा,
ऐसे मारें दांव।
कल तक छूते पांव थे,
आज घसीटें पांव।।

होली के रंग

चुनावी भिखारी के संग!!

गले में केसरिया दुपट्टा
सिर पर टोपी लाल
हरे रंग का पजामा, सफेद
बनियाइन
उस भिखारी का रूप था
कमाल
उसके कटोरे पर-
हाथी, कमल, हाथ, साइकिल
सहित कई और बने थे चित्र
लोगों को कह रहा था -
भैया - बहिनों, दादा, चाची
और मित्र
हाथ हिला हिला कर लोगों को
अपने पास बुला रहा था

पीठ तक धंसे पेट पर बना
हिंदुस्तान का नक्शा दिखा रहा था
मैंने कहा-
हे आजाद देश के सपूत महान
आप तो ईस्टमैन कलर हो रहे हैं श्रीमान
वह बोला-
होली पर मजाक मत करो
मेरे खाली कटोरे को
वोटों से नहीं, रेवड़ियों से भरो
चुनावी- होली पर हमारा कटोरा तो
सबके लिए है खुला।
जो दे उसका भी भला
जो न दे उसका भी भला।

तेज नारायण शर्मा
'बैचेन' ग्वालियर

शिखर वार्ता

बम्बई
महानगरी में
एक पच्चीस मंजिला
ऊंची बिल्डिंग से
एक सोलह वर्षीय लड़की
झुग्गी- झोंपड़ी के पास
खड़े लड़के को देख कर
मुस्कुराई
बतौर
सुरक्षावश
एक महिला पुलिस
वहां आई...!
पकड़ लिया
युवक का हाथ
और बोली
क्या कर रहे हो भइऐ.. !
वो बोला-
मैडम आप चुप रहिये... !
हम दोनों हैं
आशिक
एक दूसरे पर
मर रहे हैं.... !
मौका नहीं मिल पाता
इसलिये
शिखर वार्ता कर रहे हैं... !

नागपंचमी

नाग पंचमी के दिन
मेरी पत्नी ने
सांप की जगह
नेताजी को
दूध पिलाया
भाईसाहब
ये पुण्य का काम
मेरे समझ में नहीं आया
मैंने कहा
श्रीमती जी
हम लोग
अभावों में जी रहे हैं
फिर ये
नेताजी
कौनसे रिश्ते में
दूध पी रहे हैं
वो भन्नाई
कमबख्त लाउडस्पीकर
की तरह
मेरे कान पर चिल्लाई
बोली,
श्रीमान जी
बड़े बेवकूफ आप हैं
दर्शन कर लीजिए
ये सरकारी सांप है
सांपों की आधुनिक वैरायटी
पूरे हिन्दुस्तान में मशहूर है
आज के दिन
इन्हीं की पूजा का दस्तूर है

सितारों की फ़ुआरें ...यादों के झरोखों से

विपुल डोभाल

किसी ने सच ही कहा है कि जीवन का दूसरा नाम चुनौती है। आपने सुना होगा ग्रामीण भाषा में चूना रखने वाली डिब्बी को भी चुनौती कहते हैं। हालांकि इन दोनों चुनौती में मुझे बहुत ज्यादा फर्क नहीं दिखाई पड़ता। एक चुनौती से चूना निकालकर लगाया जाता है और दूसरी चुनौती जीवन में जब कोई चूना लगा दे तब सामने आती है। अगर आप ध्यान दें तो जीवन में अनुभवों का जन्म चुनौतियों से ही होता है। जीवन में वर्तमान की चुनौती ही भविष्य में अनुभव कहलाई जाती है। आप सभी की तरह मेरे पास भी कुछ चटपटे अनुभवों का पिटारा है जिसे इस होली पर खोलकर रंगों की फुहार करने का मन हो रहा है।

ज्योतिषी होने के नाते जीवन में प्राप्त हुए कुछ हास्यास्पद अनुभव आपके साथ बांटता हूं। होता यह है कि कई बार हमारे पास आने वाले लोग अपनी जिंदगी के महत्वपूर्ण मुद्दों को भुलाकर ऐसे प्रश्न पूछ बैठते हैं जो ज्योतिषियों की जिंदगी में भूचाल ले आएं। मेरे एक बहुत बेहतरीन क्लाइंट हुआ करते थे जो आध्यात्म, मोक्ष, सामाजिक बदलाव और न जाने क्या-क्या गंभीर विषयों पर बात करते-करते अचानक अपने बच्चों के एयर टिकट का मुहूर्त पूछने पर आ गए। कौन सी फ्लाइट शुभ रहेगी, कितने बजे बैठना चाहिए इत्यादि इत्यादि। अब आप सोचिए यात्रा उनका पुत्र कर रहा है, पैसा एयरलाइन कमा रही है और जब तक वह बच्चा हवा में है, सांस इस निरीह ज्योतिषी की अटकी हुई है। मैं उन सज्जन को कहता था की प्रभु मुझे क्षमा करें, आपके ये प्रश्न एक दिन मेरा रक्तचाप बढ़ा कर मेरा ही टिकट ना कटवा दें। बहुत मुश्किल से उनको इस प्रकार के छोटे-छोटे वहम की दुनिया से वापस इस अहम की दुनिया में लाया। वैसे वहम और अहम दोनों ही सांसारिक गोते लगवाते हैं। मोक्ष इन दोनों के परे हैं। लोग मोक्ष को लेकर बड़ी-बड़ी बातें करते हैं किंतु इस संसार का गुरुत्वाकर्षण बल भी तो कोई चीज है जो मोक्ष के पलायन वेग में संभवतः बाधा उत्पन्न करता होगा। हम जो कुछ भी मोह माया के रूप में त्यागते हैं वह वापस हमारे ही भीतर जाकर पुनः गिर जाता है।

खैर, एक किस्सा और याद आता है। एक बार बहुत आग्रह करने पर एक बुजुर्ग महिला के घर पर मैं वास्तु की जांच करने गया था। महिला ने बड़े आदर पूर्वक मुझे अपने ड्राइंग रूम में सोफे पर बैठने का आग्रह किया। अंदर से चाय और बिस्किट मंगवाए। वह कहने लगी कि मेरे पति अचानक चल बसे हैं। आप जांच करके बताएं कोई वास्तु दोष या किसी ने कोई टोना टोटका तो नहीं कर दिया है। व्यावहारिकता के नाते मैं पूछ बैठा कि क्या हुआ था पतिदेव को? कैसे चले बसे? अब उन्होंने जिस अंदाज में दुखांतिका सुनाई वो मैं इनवर्टेड कोमा के अंदर लिख रहा हूं। उन्होंने मुझे बिस्किट लेने का आग्रह करते हुए दास्तान कुछ यूं सुनानी शुरू की, " एक शाम को मैं और मेरे पति यहीं बैठे थे। वह इसी सोफे पर बैठे थे जिस पर अभी आप बैठे हैं। हम चाय पी रहे थे। उन्होंने एक बिस्किट उठाया जैसे आपने उठाया है और अपने मुंह तक ले गए, ठीक ऐसे ही जैसे अभी आप ले रहे हैं, और वह वहीं गिर पड़े"। उनकी बात पूरी होने तक बिस्किट मेरे होठों के पास पहुंच चुका था, वापस रखना अशोभनीय लगा और मुंह के भीतर ले जाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। बड़ी चुनौतीपूर्ण स्थिति में फंस गया। फिर भी कुंडली में अपने मारक स्थान को स्मरण करते हुए इष्ट देव को याद किया और बिस्किट दांतों से तोड़ लिया। बहरहाल मैं अभी जीवित हूं इसी वजह से आपके सम्मुख हूं। किंतु मैं आज तक नहीं समझ पाया कि वह महिला अपने पति की मृत्यु का वृतांत सुना रही थी या बिस्किट बचाने की कोशिश कर रही थी।

यह दुनिया बड़ी रंग बिरंगी और रोचक है। इतने रंग बिखरे पड़े हैं की होली तो आप साल भर मना सकते हैं। मैं चाहूंगा कि इस महीने आप ग्रह नक्षत्रों के प्रभावों से दूर खुद को रंगीन बनाए रखें। फाग का महीना रंग बिरंगी खुशियों का महीना है। इस महीने आपका हर पल रंगो भरा बीते इस कामना के साथ होली की शुभकामनाएं।

सेल्फी बिना होली

अरविंद तिवारी
शिकोहाबाद (फिरोजाबाद)

इस बार होली की सुबह जब कल्लू दूधिया ने शर्मा जी को बताया, कॉलोनी के तीन घरों में सन्नाटा पसरा है तो शर्मा जी का माथा ठनका! होली हुड़दंग का त्योहार है, सन्नाटे का नहीं। शर्मा जी सन्नाटे वाले घरों की तरफ रवाना हो गए। पहला घर सन्नी जी का था, जो एक लेखक थे। सन्नी जी ने बेमन से शर्मा जी का स्वागत किया। पता चला घर की असीम शांति के पीछे होली पर लिखे एक ललित निबंध का हाथ है, जो तीन अख़बारों को भेजा था, पर कहीं नहीं छपा।

आप शर्मा जी को नहीं जानते। जान भी नहीं सकते, क्योंकि वह आपकी कॉलोनी में नहीं, हमारी कॉलोनी में रहते हैं। होली से पहले "प्री-वेडिंग फोटोग्राफी" की तर्ज पर जब उनकी होली वाली फोटोग्राफी, सोशल मीडिया पर वायरल होती है, तब जाकर शहर में होली का मूड बनता है। बंदा वसंत पंचमी से ही होली के मूड में आ जाता है। चेहरे पर खुशी ऐसे झलकती है, जैसे उन्हें दो प्रमोशन एक साथ मिल गए हों! शर्मा जी जैसे लोगों की नस्ल अब विलुप्त होने के कगार पर है।

इस बार होली की सुबह जब कल्लू दूधिया ने शर्मा जी को बताया, कॉलोनी के तीन घरों में सन्नाटा पसरा है तो शर्मा जी का माथा ठनका! होली हुड़दंग का त्योहार है, सन्नाटे का नहीं। शर्मा जी सन्नाटे वाले घरों की तरफ रवाना हो गए। पहला घर सन्नी जी का था, जो एक लेखक थे। सन्नी जी ने बेमन से शर्मा जी का स्वागत किया। पता चला घर की असीम शांति के पीछे होली पर लिखे एक ललित निबंध का हाथ है, जो तीन अख़बारों को भेजा था, पर कहीं नहीं छपा। अख़बारों में सन्नी के प्रतिद्वंदियों के लेख, उन्हें चिढ़ा रहे थे। शर्मा जी ने कहा, "वह लेख मुझे मेल कर दो। अपने शहर के वरिष्ठ नागरिकों की संस्था, एक पत्रिका छपवा रही है, जिसका मैं संपादक हूं।" सन्नी जी की उदासी टूट गई। उनकी पत्नी ने शर्मा जी को गुझिया खिलाई और अबीर लगाया।

दूसरा सन्नाटा वाला घर कवि घसीटा का था। इस बार होली के महामूर्ख सम्मेलन में उन्हें कविता पढ़ने के लिए आमन्त्रित नहीं किया गया था। शर्मा जी ने सम्मेलन के आयोजकों की लानत मलामत करते हुए घसीटा को समझाया, "घसीटा जी आप तो देखने में ही महामूर्ख लगते हैं! ये सब एक न एक दिन ज़रूर पछताएंगे। अब उदासी छोड़ो और होली खेलो। दो दिन बाद कॉलोनी का होली मिलन समारोह है। तब आपको सम्मान के साथ काव्य

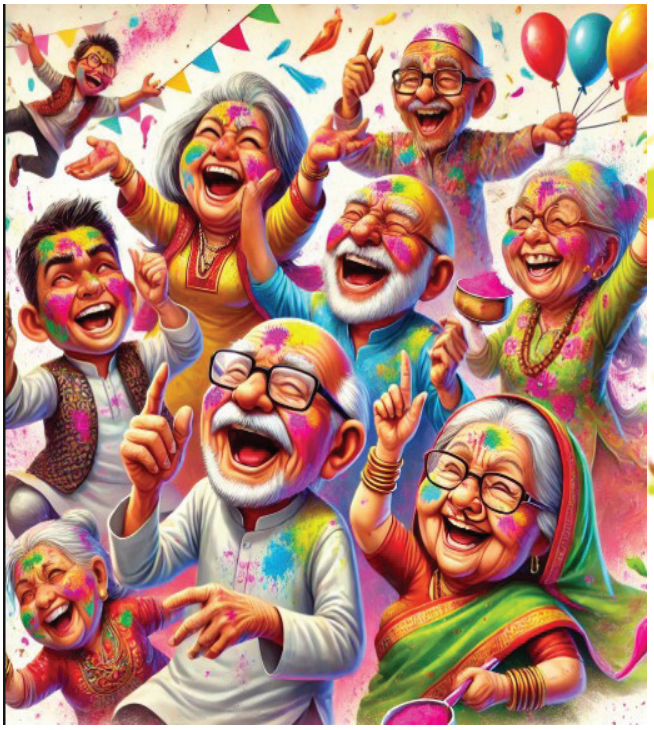

पाठ हेतु आमन्त्रित किया जाएगा। "किसी कवि के लिए काव्य पाठ का आमंत्रण होली दीवाली सब होता है। हर कवि कविता पाठ के लिए हमेशा लालायित रहता है। घसीटा जी के घर भी होली का हुड़दंग शुरू हो गया। शर्मा जी के साथ घसीटा ने होली खेली और उनके साथ ही तीसरे घर का सन्नाटा दूर करने चल पड़े।

तीसरा घर कपूर साहब का था, जो न कवि थे और न लेखक। यहां जो सन्नाटा था, वह मातमी किस्म का था। पूछने पर पता चला उनके सभी रिश्तेदार सही सलामत हैं। सिर्फ इतना हुआ कि उन्होंने आज सुबह अपने नौकर को मार पीट कर निकाल दिया है। "होली के दिन आपने ऐसा अनर्थ क्यों किया", जब शर्मा जी ने पूछा तो कपूर साहब और उदास हो गए। बहुत पीछे पड़ने पर उन्होंने बताया, "पूरा घर अपने अपने मोबाइल में व्यस्त रहता था। नौकर को परेशानी होती थी। उसने कहीं पढ़ लिया कि होली के दिन मोबाइल, जलती होली में फेंकने से असीम सुख मिलता है। घर में समृद्धि आती है। वह इस जोक को समझ नहीं पाया। नौकर ने आधी रात के बाद घर भर के स्मार्ट फोन बटोर कर, जलती होली में फेंक दिए। सुबह जब घरवालों ने नौकर पर फोन चोरी का आरोप लगाया, तो उसने सच सच बता दिया। किसी घर में यदि एक भी स्मार्ट फोन न हो, तो इससे बड़ा मातम और क्या हो सकता है?"

कपूर साहब की पीड़ा सुनकर शर्मा जी की हंसी नहीं रुक रही थी। उन्होंने कपूर साहब से कहा, "जैसा नौकर आपको मिला, इस ज़माने में दुर्लभ है। आप नौकर को मनाकर घर ले आओ। रही स्मार्ट फोन जाने की, तो फिर से खरीद लेना। नौकर का भाव आपके घर के प्रति वफादारी वाला है। वह आपके परिवार में प्रेम बढ़ाना चाहता है जो स्मार्ट फोन के कारण लुप्त हो गया है। अब होली खेलने निकलो। आज देखना, सेल्फी बिना होली कितनी रंगीन होती है!"

अम्मा-बीवी के झगड़े मे

अशोक 'अंजुम' अलीगढ़

अम्मा-बीवी के झगड़े में फटते रहते हम!
अम्मा छोड़े हथगोले तो बीवी फोड़े बम!

अम्मा कहती- जादूगरनी बहू ब्याह लाई
बेटा मेरा बना लिया है अपनी परछाई
बेडरूम से नहीं निकलता, बेची हया-शरम!
अम्मा छोड़े हथगोले...

बीवी कहती- जब देखो तब मां के पल्लू में,
बाबुल तुमने क्या देखा इस बोंगड़ लल्लू में,
किस भोंदू से ब्याह दिया है, फूटे हाय करम!
अम्मा छोड़े हथगोले...

अम्मा कहती- मां से अपनी चुगल जोड़ती है,
अगर कहो कुछ दीवारों पर मूड़ फोड़ती है,
झूठे दोष लगाती- इस पर होते बड़े जुलम!
अम्मा छोड़े हथगोले....

बीवी कहती- अपनी लड़की प्यारी लगती है,
बहू मगर इस बुढ़िया को बीमारी लगती है,
सास-बहू ने हिला दिया है कुल घर का सिस्टम!
अम्मा छोड़े हथगोले...

अम्मा कहती- आठ-आठ को मैंने पाल दिया,
इसने इक पैदा करके ही पर्दा डाल दिया,
बस उसकी ही पाल पोस में निकल रहा है दम!
अम्मा छोड़े हथगोले...

बीवी कहती- देवरानी से लाड़ लड़ाती है,
मुझ पर बात बात पर बुढ़िया बस गुर्राती है,
उस पर सदा नरम रहती है, मुझ पर रहे गरम!
अम्मा छोड़े हथगोले..

किसे दिखाऊं घाव हृदय के किससे दुख बांटू,
जी करता है जा जंगल में अब जीवन काटूं,
कुछ भी असर नहीं करता अब क्या व्हिस्की क्या रम!
अम्मा छोड़े हथगोले....

फेस बुक

वेदप्रकाश दाधीच जयपुर

फेसबुक से प्रभावित होकर
हमने भी अपने मोबाइल को रिचार्ज कराया
यानि कि अपने थोबड़े की किताब का रजिस्ट्रेशन कराया
बोहनी - बट्टे में हमारी घर वाली का तीस साल
पुराना फोटो चिपकाया
जिसे देखते ही बहुत मजा आया

हमारी प्रोफ़ाइल को देखकर लोग चकरा गये
देखते ही देखते सैकड़ो कमेंट्स आ गये
लोगो ने सुशोभित शब्दों से हमारी घर वाली का
सम्मान किया
कुल लबली, सो स्वीट, लुकिंग हॉट जैसे शब्दों से
नाम करण किया

पहले ने कहा फेसबुक पर छा गई तू
दूसरा बोला आई लव यू
तीसरा बोला जवानी में जुल्म ढा रही हो
चौथा बोला पानी मे आग लगा रही हो
पाचवा बोला हंगामा है हंगामा
छठा बोला आती है क्या खन्ड़ाला
सातवां बोला हमसे शादी करोगी
आठवां बोला या कुंवारी ही मरोगी
नावां बोला हमसे चेटिंग करो
हमने कहा सालो डूब मरो

आगे के कमेंट्स ने तो हमारा इतना खून पिया
एक सीनियर सिटीजन ने हमारी घरवाली को हिल
स्टेशन घुमाने का निमंत्रण दिया
अगली बार हमने पति- पत्नी दोनों का एक ओर
पूराना फोटो लगाया
तो सामने से कमेंट्स आया
जिसे देखते ही मैं हो गया सुन
लिखा था गदहे के हाथ में गुलाब-जामुन
मनचले लाइक मार मार कर अपने सपने सहेज रहे थे
और बुड्ढे फ्रेंड लिस्ट में रिक्वेस्ट भेज रहे थे
हमने दूसरे की प्रोफ़ाइल को सर्च किया
यारो उसने तो कमाल ही कर दिया
मां बेटे की फेंड लिस्ट में स्थान मांग रही थी
दामाद की सास में संभावनाएं जाग रही थी
भाई बहिन की बेहूदा ड्रेस पर कॉमेंट्स कर रहा था
और बुड्ढा ससुर अश्लील फोटुओं को इनबॉक्स में
शेयर कर रहा था

मेरी बुध्दि तो कोमा में जब पड़ी थी
मेरे बाप और बेटे की रिक्वेस्ट फोन लिस्ट में खड़ी थी
दोस्तों हम सारे के सारे फेस बुक की दुनिया में इस
कदर खो गए
मां- बाप, भाई- बहिन पास रहकर भी दूर हो गए
दोस्तों फेस बुक की चेटिंग मे इतना समय मत गबाओ
हो सके तो अपना कैरियर बनाओ।।

होली के रंग कवयित्रियों के संग

मोरी कोरी चुनरिया

ओरे पिचकारी नहीं मार रे सांवरिया
भीग जाएगी रे मोरी कोरी चुनरिया

सर पे जो रख्खू जो मैं भर के गगरिया
मरी मरी जाऊं मोरी लचके कमरिया
बतियां छुपा लूंगी मैं सारी लेकिन
कह कह जाए मोरी बाली उमरिया
बड़ी मुश्किल लागे प्रेम की डगरिया
भीग जाएगी रे कोरी कोरी चुनरिया

सखिया अकेले में क्या-क्या बतावे हैं
उनकी तो सुन सुन के लाज मोको आवे है
मलमल की झिलमिल सोने जरी की
चुनरी निगोड़ी मोरी सरक सरक जावे है
कैसे मैं पहनू कि तंग है अंगरिया
भीग जाएगी रे मोरी कोरी चुनरिया

हट तेरे आगे ना कोई चले है
कोई बहाना ना मुझको मिले है
कोई कामकाज तुझको सूझे नहीं है
प्रेम के ही फूल तेरे मन में खिले है
सौंप रही हूं मैं तो तुझको सांवरिया
भीग जाने दे रे अब कोरी चुनरिया
प्रीत के रंगों में तू रंग दे सांवरिया
भीग जाने दे रे कोरी कोरी चुनरिया

पूर्णिमा जायसवाल 'अदा' ✍

ऋतुराज चले मत जाना

चुन लूं मैं कुछ फूल बसंती
सुन लूं कुछ बातें रसवंती
गगन सरीखे प्रिय से मिल लूं
बन जाऊं धरती लज वंती
उस वेळा तुम मंगल गाना
ओ ऋतुराज चले मत जाना

वासंती परिधान संवारे
तन मन प्राण हुए मतवारे
जन्म जन्म की आस संजोये
जब आऊँ मैं उनके द्वारे
तुम राहों पर फूल बिछाना
ओ ऋतुराज चले मत जाना

कितने युग बीते भटकन में
जलते प्राण अतृप्त अगन में
जब वे बनकर मेघ प्रणय का
अमृत बरसाएं कण कण में
मंगल परिणय पर्व मनाना
ओ ऋतुराज चले मत जाना।

होली पर छंद

अइयो रे तू होरी के खिलाड़ी पिचकारी धर
देखींगे अनाड़ी है के सांचो ही खिलाड़ी है
गोपीन के दल से तू जीत पावे, तोहे जानूं
वैसे तो सुनी है श्याम गिरिवर धारी है
जसुदा के लाल फिर करियो मलाल मत
होरीन में होरी एक बरसाने वारी है
छोरन में छोरा जैसे नन्द जू को लाल और
गोरीन में गोरी वृषभानु की दुलारी है

डॉ. सरिता शर्मा, ✍ नोएडा

मेरे मनमीत की होली

दिलों में प्रीत की होली लबों पर जीत की होली
कि देखी है कहां तुमने मेरे मनमीत की होली
मेरी चाहत हो खुशहाली यहां पर सब के आंगन में
किसी के हार की ना हो, हो सबके जीत की होली

मैं ले आई हूं फूलों के सभी ये रंग होली में
बजे है प्रीत की मनुहार की है चांग होली में
जिधर देखूं मुझे तू ही, मुझे तू ही नजर आए
चढ़ी है इस कदर मुझको ये देखो भांग होली में

आया महीना फागुन का हम मिलकर धूम मचाएं
रंग देंगे तन मन सबका सब इंद्रधनुष बन जाएं
सखियां पूछ रही मुझसे तुम मिलने कब आओगे
तुम आओ तो सांवरिया हम मिलकर रंग लगाएं

डॉ. सूरज माहेश्वरी, ✍ जोधपुर

किवाड़

लक्ष्मीदत्त तरुण ✍ रावतभाटा

हर किसी को, हर एक बात पता थोड़ी होती है
फिर भी हर इंसान ख़ुद को ज्ञानी मान खुश होता है
आपको पता है?
कि जो किवाड़ की जोड़ी होती है
उसका एक पल्ला स्त्री और दूसरा पल्ला पुरुष होता है
घर की चौखट से जुड़े जड़े रहते हैं
हर आगत के स्वागत में खड़े रहते हैं
ख़ुद को ये घर का सदस्य मानते हैं
भीतर बाहर के हर रहस्य जानते हैं
एक रात उनके बीच था संवाद
चोरों को लाख लाख धन्यवाद
वर्ना घर के लोग हमारी एक भी चलने नहीं देते
हम रात को आपस में मिल तो जाते हैं
हमें ये मिलने भी नहीं देते
घर की चौखट से साथ हम जुड़े हैं,
अगर जुड़े जड़े नहीं होते
तो किसी दिन तेज आंधी -तूफ़ान आता,
तो तुम कहीं पड़ी होतीं
हम कहीं पड़े होते
चौखट से जो भी एकबार उखड़ा है
वो वापस कभी भी नहीं जुड़ा है

इस घर में यह जो झरोखे
और खिड़कियां हैं
यह सब हमारे लड़के और लड़कियां हैं
तब ही तो
इन्हें बिल्कुल खुला छोड़ देते हैं
पूरे घर में जीवन रचा बसा रहे
इसलिये ये आती जाती हवा को,
खेल ही खेल में
घर की तरफ मोड़ देते हैं
हम इस घर की सच्चाई छिपाते हैं
हर बार ही शोभा बढ़ाते हैं
हैं तो कुछ नहीं
उस से ज्यादा ही बतलाते हैं
इसीलिये जब भी कोई शुभ काम होता है
सब से पहले हमीं को रंगवाते पुतवाते हैं
कभी भी नहीं रही, डोर बेल बजाने की प्रवृति
जीवित रखे जीवन मूल्य, संस्कार और संस्कृति
बड़े बाबू जी जब भी आते हैं
कुछ अलग सी सांकल बजाते हैं
सब के सब घर के जान जाते हैं
कि आ गये हैं बाबू जी
बहुयें अपने हाथ का हर काम छोड़ देती हैं
उनके आने की आहट पा
आदर में
घूंघट ओढ़ लेती हैं
अब तो पूरे मुहल्ले के
किवाड़ रहे ही नहीं दो पल्ले के
घर नहीं अब फ्लैट हैं

गेट हैं इक पल्ले के
खुलते हैं सिर्फ एक झटके से
पूरा घर दिखता बेखटके से
दो पल्ले के किवाड़ में
एक पल्ले की आड़ में
घर की बेटी या नव वधु
किसी भी आगन्तुक को
जो वो पूछता बता देती थीं
अपने को, चेहरा और शरीर छिपा लेती थीं
अब तो धड़ल्ले से खुलता है
एक पल्ले का किवाड़
न कोई पर्दा न कोई आड़
गंदी नजर, बुरी नीयत, बुरे संस्कार
एक साथ भीतर आते हैं
फिर बाहर नहीं जाते हैं
कितना बड़ा आ गया है बदलाव
अच्छे भाव को अभाव,
स्पष्ट दिखता है कुप्रभाव
सब हुआ चुपचाप
बिन किसी हल्ले गुल्ले के
अब घरों में किवाड़ कोई नहीं लगवाता
दो पल्ले के
अपनों में नहीं रहा वो अपनापन
एकाकी सोच हर एक है एकाकी मन
स्वार्थी जन
अपने आप में रखना चाहता है
मस्त बिल्कुल इकलल्ला
इसलिये ही हर घर के किवाड़ में
दिखता है सिर्फ़ एक ही पल्ला

होली के हुड़दंग में

श्रवण शून्य ✍ खेजड़ला

यह दुनिया धमाल लगती है
और रंगों में खिली खिली
पड़ोसन कमाल लगती है
कइयों ने पिचकारी में
सुबह से रंग डाल रखा है
अपनी पड़ोसन को रंगने का
सपना पाल रखा है
लेकिन यह काम बहुत भारी है
इसलिए हमारी कविता
जनहित में जारी है
अपने जान माल पर
जरा मेहरबानी रखना
पड़ोसन पर रंग डालने में
जरा होशियारी रखना
वरना बीवी के साथ
नया बवाल हो सकता है
और बिना रंग के भी
आपका गाल लाल हो सकता है।

अच्छा है पर कभी- कभी

अच्छा है पर कभी कभी
अपने दिल का हाल बताना अच्छा है पर कभी-कभी,
मेरी गजल पर यूं मुस्काना अच्छा है पर कभी कभी,

साठ कचोरी बावन लड्डू सेर पूरी संग गटकाते,
पंडित जी को भोज खिलाना अच्छा है पर कभी कभी।

क्या अचंभा जो हो जाये लाठी भाटा जंग वहां,
नेता जी की सभा में जाना अच्छा है पर कभी कभी।

क्या पता वो जानबूझ कर हार गले में बंधवाले,
क्रिकेट में सट्टा लगवाना अच्छा है पर कभी कभी।

एक दिन तुमसे टाटा करके ये तो जाने वाली है,
अपनी जवानी पर इतराना अच्छा है पर कभी कभी।

राई का पर्वत होने में देर जरा सी लगती है,
पाड़ोसन को मिस कॉल देना अच्छा है पर कभी कभी।

हम तो अपनी मेहनत से ही भाग्य बदलने वाले है,
अच्छे दिनों के ख्वाब दिखाना अच्छा है पर कभी कभी

सुनो सुनो का शोर मचाकर ये बहरे कर देते है,
इन कवियों का मंच सजाना अच्छा है पर कभी कभी।

जय श्री दरियावजी

जय हिंगलाज मां

होली

की शुभकामनाएं

NEW ARORA NAMKEEN & SWEETS

PRIME CATERERS

PRIME PROPERTIES
Nitin Arora 7791822222, 9829027042

श्री अरोड़ा नमकीन

दाऊजी की होटल, बासनी ओवरब्रिज के पास,
ट्रांसपोर्ट नगर, बासनी, जोधपुर
मो. 7793001303

न्यू अरोड़ा नमकीन एण्ड स्वीट्स

बासनी पुलस थाने के पास, मैन सालावास रोड, जोधपुर
मो. 7793001302

चतुर्भुज के गुलाब जामुन: हर मीठे लम्हे के बेताज बादशाह

जब भी किसी शहर की पहचान उसके स्वाद से जुड़ जाती है, तो वह सिर्फ एक स्थान नहीं, बल्कि एक अनुभव बन जाता है। ऐसा ही एक अनुभव जोधपुर के चतुर्भुज रमेशचंद्र के गुलाब जामुन का है, जो हर मिठाई प्रेमी के दिल में एक खास जगह बनाए हुए है।

स्वाद की परंपरा का सुनहरा अध्याय

जोधपुर, जिसे शाकाहारी व्यंजनों की राजधानी भी कहा जाता है, अपनी शाही मिठाइयों के लिए पूरे विश्व में विख्यात है। इन मिठाइयों में जो सबसे अधिक प्रसिद्ध है, वह है गुलाब जामुन। लेकिन जब बात 'गुलाब जामुन के बादशाह' की होती है, तो चतुर्भुज रमेशचंद्र का नाम सबसे ऊपर आता है।

इस प्रतिष्ठित दुकान की स्थापना 1897 में श्री चतुर्भुज अग्रवाल ने की थी। लगभग 128 वर्षों से यह परिवार अपनी मिठास से न सिर्फ जोधपुर, बल्कि देश-विदेश के लोगों का मन मोह रहा है। आज पांचवीं पीढ़ी इस विरासत को संभाल रही है, और वही पुराना स्वाद, वही शुद्धता और वही परंपरा आज भी बरकरार है।

गुलाब जामुन, जो है हर दिल की चाहत

एक बेहतरीन मिठाई की पहचान उसका स्वाद, बनावट और शुद्धता होती है, और चतुर्भुज के गुलाब जामुन इन सभी कसौटियों पर खरे उतरते हैं। इनकी खासियत यह है कि यह कम रसयुक्त होते हैं, जिससे मिठाई कम पसंद करने वाले लोग भी इन्हें चाव से खाते हैं।

इस मिठाई की सफलता के पीछे इसकी शुद्धता और पारंपरिक विधि का बड़ा योगदान है। दुकान के मालिक खुद इस सफलता का श्रेय अपने गुरु संत श्री अंजनेश्वर जी महाराज के आशीर्वाद को देते हैं।

साथ ही, इन गुलाब जामुन के निर्माण में उपयोग किए जाने वाले दूध को खुद तैयार किया जाता है। जोधपुर की प्रमुख "चौहटा" मंडी से खरीदे गए शुद्ध दूध से ताज़ा मावा बनाया जाता है, जिससे यह गुलाब जामुन बेमिसाल स्वाद और गुणवत्ता के साथ तैयार किए जाते हैं।

चतुर्भुज रमेशचन्द्र®
established 1897

लोकप्रियता के नए आयाम

जो मिठाई कभी जोधपुर के पुंगलपाड़ा क्षेत्र तक सीमित थी, वह अब अपनी बढ़ती मांग के चलते सरदारपुरा 6th A रोड पर भी उपलब्ध है। जोधपुर से बाहर जाने वाला हर व्यक्ति अपने साथ इस मिठाई को ले जाना नहीं भूलता। चाहे देश का कोई भी कोना हो या फिर विदेश, जहां भी चतुर्भुज के गुलाब जामुन पहुंचते हैं, वहां ये अपनी अलग पहचान बना लेते हैं।

गुलाब जामुन जो सिर्फ मिठाई नहीं, एक एहसास है

प्रसिद्ध शेफ एडवर्ड ली ने कहा था कि "मिठाई एक ऐसे गीत की तरह है, जो आपको अच्छा महसूस कराए, और बेहतरीन मिठाई वह होती है जो आपको नाचने पर मजबूर कर दे।" चतुर्भुज के गुलाब जामुन वही मिठाई हैं, जो हर मीठे लम्हे को खास बना देती हैं।

जो एक बार इनका स्वाद चख लेता है, वह इनका हो जाता है। यही कारण है कि आज भी, 128 सालों बाद, चतुर्भुज के गुलाब जामुन मिठास की दुनिया के बेताज बादशाह बने हुए हैं।

Pungalpada, Jodhpur (Raj.)... 462 A, 6th A Road Sardarpura, Jodhpur (Raj)
Chaturbhujjodhpur Chaturbhuj_gulabjamun/ 0-70234-56782/ 0291-2626215